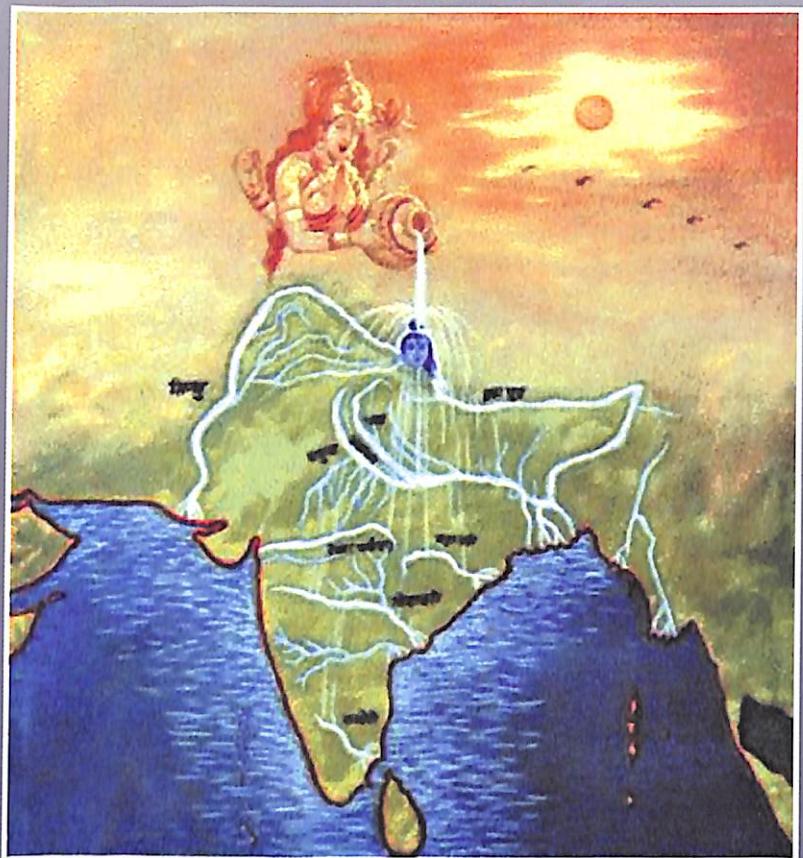


# पानी परम्परा



गंगा सिन्धुश्च कावेरी यमुना च सरस्वती ।  
रेका महानदी गोदा ब्रह्मपुत्रः पुनातु माम् ॥



पाणी परम्परा

## **संकलन**

**भारतीय जीवन शैली, जल संरक्षण के अनुभव और शास्त्रों से**

## **मूल्य**

**रुपए 75/- मात्र**

## **प्रथम संस्करण**

**15 अगस्त, 2007**

## **प्रकाशक**

**तरुण भारत संघ**

**भीकमपुरा किशोरी बाया थानागाजी,**

**जिला : अलवर-301022, राजस्थान**

**फोन : 01465-225043**

**ई-मेल watermantbs@yahoo.com**

## **वितरक**

**जल बिरादरी**

**34/46, किरण पथ,**

**मानसरोवर, जयपुर 302020**

**फोन : 0141-2393178**

**ई-मेल jalbiradari@gmail.com**

## **रूपांकन एवं मुद्रण**

**कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर**

पानी से जीवन उत्पन्न हुआ, पानी से पला, पोसा और  
जीवन जिया। पानी में ही विसर्जित हुआ और पानी से कुक्कि के  
द्वारा खुले। ऐसी हमारी अपनी पानी की परम्पराएँ हैं जो हमारे  
जीवन-पर्यन्त छुड़ी रहती हैं। इन्हें निशाने में हमारे समाज को  
आनंद, खुशी, उत्साह, सुखिदा, प्रकृतिमय भावनात्मक,  
वैचारिक दृष्टिकोण का कार्ग प्रशस्त होता है।  
जब से सामाजिक विधान बनाए गए हैं,  
तब से आज तक आधुनिक समय में भी समाज में विद्यमान हैं।  
ऐसे विशाल पानी परम्परा के धनी देश को शत्-शत् नमन।

# विषय शूची

आमुख	५
प्राक्कथन	६
भूमिका	८
समय के आइने में हमारा पानी	१०
पानी परम्परा	१४
जल संरक्षण और हम	१७
भारतीय जीवन शैली में पानी परम्परा	२२
पानी परम्परा के रूप-स्वरूप	३०
— पानी और भारतीय जीवन शैली	३०
— पानी का पारम्परिक ज्ञान	४३
— पानी की परम्परागत संरचनाओं का निर्माण	७४
वर्तमान समय में जल संरक्षण व्यवस्थाएं	८४

# आमुख



**भा**रतीय जीवन शैली में पानी परम्परा को सामाजिक जीवन के हर पहलू में प्रवाहित होते हुए देखा जा सकता है। जल-दान सृष्टि की रक्षा का संकल्प जो मनुष्य को प्रकृति के प्रति उसके दायित्व का बोध कराता है और प्रकृतिमय बने रहने के लिए प्रेरित करता है। जल और पवन पर प्रत्येक प्राणी का मूल अधिकार होता है। प्यासे को पानी पिलाना भारतीय जीवन-दर्शन है। प्रकृति से उतना लेना चाहिए जितनी आवश्यकता हो, इस क्रण से उत्तरण होने के लिए कम-से-कम उतना वापस करने का प्रयास करना चाहिए, यह एक सर्वमान्य दर्शन है। हमारी पारम्परिक जीवन पद्धति में प्रकृति से सदैव जुड़े रहने के लिए वनस्पति, जल, जानवर आदि को साथ रख कर पूजा-पाठ की परम्परा को विकसित किया गया है। कोई भी तीर्थ, पूजा-पाठ व जीवन के संस्कार बिना पानी के सम्भव नहीं है।

वृहत् संहिता में पानी के विषय में भारतीय ज्ञान-विज्ञान का विस्तृत विवरण मिलता है। पानी परम्परा का ज्ञान-विज्ञान तब तक समाज के लिए उपयोगी था जब तक मनुष्य प्रकृतिमय था। पानी का संयम से उपयोग करता था। आज विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का नई तकनीकी से दोहन शुरू किया व भोग की वस्तु मान कर अनियमित रूप से उपभोग किया। प्रकृति ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है। पानी की उभरती हुई समस्याओं का समाधान आज की सरकार द्वारा जल का संवर्धन करके या पानी के निजीकरण व बाजारीकरण, केन्द्रीय जल प्रबन्धन के द्वारा ढूँढ़ रही है। इस सब में समाज की कोई भूमिका नहीं दिखती, जब कि सदियों से पानी का संवर्धन व उपयोग सामाजिक मूल्यों द्वारा निर्धारित होता था। पानी पर समाज का अधिकार था। पानी का काम सामाजिक सहभागिता के साथ ही पूरा किया जाता था। क्या आज हमारे सामाजिक जीवन में पानी का महत्व कम हुआ है? यदि नहीं तो पानी की उभरती हुई विकट समस्याओं के प्रति समाज में इतनी नीरसता क्यों? क्या यह पुस्तक समाज में और चेतना वापिस ला सकेगी, आम व्यक्ति को पानी का महत्व समझा सकेगी।

मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी, लोगों का नजरिया बदलेगी।

- प्रो. एम.एस. राठौड़  
विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर

# प्राककथन



**ह**मारी पानी परंपराएं भारतीय संस्कृति की वाहक स्वरूप हैं जिसमें वेद ज्ञान और भारतीय जल-दर्शन समाहित है। हम भारतीय जीवन-शैली को एक नजर देखें तो पायेंगे कि जन्म से मृत्यु-पर्यन्त तक पानी का सान्निध्य भारतीय जीवनशैली में विद्यमान रहता है जिसके विभिन्न रूप-स्वरूप देखने को मिलते हैं। भारतीय जीवनशैली में जीव की उत्पत्ति, मन और शरीर की शुद्धि, अतिथि सत्कार, जलदान और धार्मिक अनुष्ठान, संकल्प और तीर्थ, स्वास्थ्य और मनोरंजन, कृषि और उद्योग, मनुष्य जीवन की अन्तिम यात्रा और मुक्ति के संस्कार, पानी परंपराओं में समाहित हैं। भारतीय समाज का जीवन-चक्र पानी के सान्निध्य में भिन्न-भिन्न संस्कारों में जीवन्त-भाव लिए स्व-प्रवाहित रहा है।

हमारा पानी का ज्ञान प्रकृति आधारित रहा है। उसी से भू-गर्भित जल और वर्ष भर के प्रकृति-चक्र को पहचान कर अगले मानसून (वर्षा समय) को समझा है। इतना ही नहीं तरह-तरह की वनस्पतियों और पशु-पक्षियों के व्यवहार से, हवा के बहाव संकेतों से भी जल की उपलब्धता का ज्ञान हमारे शास्त्रों में समाहित है। आचार्य वराह मिहिर की प्रमुख रचना (बृहत् संहिता) में भारतीय पानी परंपराओं का अद्भुत ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्रमाणित प्रकृति आधारित है। इस ज्ञान में किसी यंत्र मशीन की जरूरत नहीं होती। प्रकृति के रूप-स्वरूप के सूक्ष्म तत्त्व परिवर्तन को देखना, समझना और उसके आधार पर गणना कर भविष्यवाणी करना प्रकृति प्रदत्त ज्ञान है। बृहत् संहिता से उद्धरित जल ज्ञान के संबन्ध में पानी का परंपरागत ज्ञान एक उदाहरण मात्र है जो भारतीय प्रकृति ज्ञान को दर्शाता है।

प्रकृति ज्ञान ही हमें अपनी परंपराओं से जोड़े हुए है। वही हमारी संस्कृति का रक्षक है और वही हमारी जीवन-शैली है। इसी जीवन-शैली के आधार पर समाज जल संरक्षण के उपाय युगों-युगों से करता आ रहा है। तरह-तरह की पद्धति अपनाकर

जल संरक्षण के लिए संरचनाओं का निर्माण कर अपने और पशु-पक्षियों के लिए पानी के इंतजाम किए, साथ ही उन्हें संरक्षित और संवर्द्धित करने के उपाय भी किये। यह सब हमारी पानी परंपराओं में निहित रहा है।

पानी से जुड़ी हमारी जीवन-शैली हमें प्रकृति से जोड़ती है, अपनी संस्कृति से जोड़ती है, अपने समाज से जोड़ती है, भावनात्मक सेवा और श्रद्धाभाव को बढ़ाती है, समाज में नया उत्साह और रोजगारोन्मुखी साधनों को बढ़ाती है। हमारी पानी परंपराएं पूरे समाज को एक-साथ जोड़े हुए भारतीय जीवन-शैली में नदी प्रवाह की तरह सदियों-सदियों से स्व-प्रवाहित होती चली आ रही हैं।

ऐसी सशक्त पानी परंपराओं वाले देश में अब पानी की परंपरा टूटती नजर आने लगी है। पानी बाजार की वस्तु बनकर रह गया है। नदियों का जल प्रदूषित हो गया है। इतना ही नहीं नदियों का अस्तित्व ही नहीं रहा। वे केवल हमारे समाज के मल-मूत्र और दूषित पदार्थों को प्रवाहित करने के साधन मात्र बन कर रह गई हैं। गांव के कुएं, ताल, सरोवर, जोहड़, पोखर तो पहले ही खत्म हो चले हैं। इनके पास एकत्र समाज को आज की आधुनिक जीवन-शैली हमारी पानी परंपराओं को रुढ़िवादी और अव्यावहारिक मानकर नजरंदाज कर रही है।

टूटती पानी परंपराओं को बचाना हर भारतीय का कर्तव्य है। पानी परंपराओं में प्रकृति की रक्षा, संस्कृति की रक्षा, भारतीय सभ्यता और सामाजिक जीवन-शैली की रक्षा, दैनिक जीवन पद्धति में अपनी पानी परंपराओं को जिन्दा रखना आज के समय में प्रकृति की मांग है। प्रकृति के सान्निध्य में भारतीय जीवन सुरक्षित रहता आया है। “‘पानी परम्परा’” समाज और प्रकृति का सेतु है। जो समाज और प्रकृति को आपस में जोड़े रखती है। “‘पानी परंपरा’” की यह छोटी-सी पुस्तक समाज को पानी परंपराओं से जोड़ती हुई प्रकृति की रक्षा करने में सहायक सिद्ध होगी।

—राजेन्द्र सिंह

## भूमिका

भारत की पानी परम्परा समय की कसौटी पर हमेशा खरी उतरी है। सभ्यता और अतीत को समृद्धशाली बनाते हुए आज के वैज्ञानिक और विकासशील युग में भी यह खरी ही है। आज विज्ञान का युग है। आधुनिक कृत्रिम दृष्टिकोण अपनाकर आज की भोगवादी संस्कृति को कुछ समय के लिए उत्साहित तो अवश्य किया जा सकता है, लेकिन लोक कल्याण के लिए तो प्रकृति प्रदत प्राकृतिक व्यवस्था पर ही निर्भर रहना है। प्राकृतिक संसाधनों की समृद्धि हासिल किए बगैर लोक का कल्याण नहीं हो सकता।

सृष्टि की रचना में जो पदार्थ तत्व जितना है, वह उतना तो अवश्य रहेगा। उसे न तो कोई बढ़ा सकता है और न कोई घटा सकता है। यह सत्य है जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु और आकाश सृष्टि के सारभूत अंग हैं। क्योंकि इन्हीं के योग से जीवन चलता है, लेकिन इन मूल तत्वों का उपयोगी रूप बना रहे, इसके लिए प्रयास जरूरी है। हमें चाहिए कि हम अपना जीवन इस प्रकार जिए ताकि पंचमहाभूतों का प्राकृतिक भंडार अक्षुण्ण बना रहे। विद्वज्जनों का कहना है कि “प्रकृति से उतना ही लेना चाहिये जितनी आवश्यकता हो। यदि मनुष्य इसका ध्यान रखना छोड़ देगा, तो प्रकृति का भंडार समाप्त हो जायेगा। हम प्रकृति से जितना लें, कम से कम उतना तो लौटाएं ही। भारत का पारंपरिक ज्ञान कहता है कि यदि वर्षा हो, धरती उसके मोती समेटने के लिये आंचल नहीं फैलाये, तो वर्षा का होना बेकार चला जाता है। प्रकृति की रक्षा-सुरक्षा करना हमारा प्राकृतिक गुण है। उसके द्वारा दिये गये उपहार हमारे जीवन के साधन हैं। भारत के पास अनुकूल दृष्टि व साधन मौजूद हैं, तो फिर क्यों हम भूखे-प्यासे मरें? इस दृष्टि और ज्ञान का क्षय होने से ही आज दुनिया में पानी की समस्या बढ़ती जा रही है। भारत में भी पानी के लिये लोग लड़ रहे हैं। आपसी झगड़े बढ़े हैं। राजनीति भी इससे अदृश्य होना चाहिए। पानी का व्यापार भी बढ़ रहा है। समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। देश के हर क्षेत्र में पानी की उपलब्धता घटी है और समाज में उपभोग प्रवृत्ति बढ़ी है। इस उपभोग की प्रवृत्ति ने धरती का आंचल छोटा और झींना कर दिया है। अब इसमें बरसात के मोती ठहर नहीं पाते।

उपभोग, व्यापार, झगड़ा और राजनीति का पानी की दुनिया में प्रवेश वर्जित होना चाहिए। हमारी सरकारों के सामने जब भी पानी की समस्या का सवाल आता है, बड़े बांध अथवा पानी निकासी के तमाम यंत्र-संयंत्र ही उनकी प्राथमिकता बनते हैं। वे सोचते हैं कि धरती के भीतर पानी का अक्षय भंडार है, जितना चाहो निकाल लो। धरती के भीतर पानी उतारने-संजोने का ख्याल कभी उनकी प्राथमिकता नहीं बना।

यदि हमें अपना और अपने भविष्य को जिन्दा, खुशहाल, सुन्दर देखना है तो धरती के आंचल को इस प्रकार से व्यवस्थित करना होगा कि बारिश का हर मोती धरती माँ के आंचल में संचित-सुरक्षित हो जाए। फिर जब जैसी जरूरत हो माँ के आंचल में जल रूपी मोती निकालकर हम अपना जीवन चलाएं। इसके लिए हमें भारत की पानी परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा। तरुण भारत संघ ने जल संरक्षण की प्राचीन परम्परा को अपनाकर ग्रामीण समाज के साथ अलवर में जल संरक्षण के जो प्रयास किये हैं, वे आज देश-दुनिया में उदाहरण बन गये हैं।

इनका अपना एक आकर्षण है, जो बरबस दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचता है। आज के युग में हमारी पुरानी परम्पराओं का महत्व और बढ़ गया है। आधुनिक तकनीक व ज्ञान पानी की समस्या को हल करने में अपने को पूर्णरूपेण समर्थ नहीं पा रहा है। दरअसल प्रकृति का अपना विज्ञान है। वह अपनी तरह से चलती है। इसलिये प्रकृति के उपहार जल को प्राकृतिक संवेदना के साथ संजोना, संवारना और खुशहाल बनाना है। इसके लिए जानना जरूरी है कि भारत की पानी परंपराएं क्या थीं? भारत पानी को कैसे देखता था? भारत में पानी को संजोने की पारंपरिक तकनीक क्या थी? वे तकनीक आज कितनी उपयोगी हैं? इन्हीं सवालों का उत्तर देने की कोशिश है यह छोटी पुस्तिका ‘पानी परंपरा’। आशा है इन सवालों का उत्तर पाकर आप संतुष्ट होंगे और पानी का जस कमाने में जुट जायेंगे और अपने कामों से हमें भी अवगत करायेंगे।

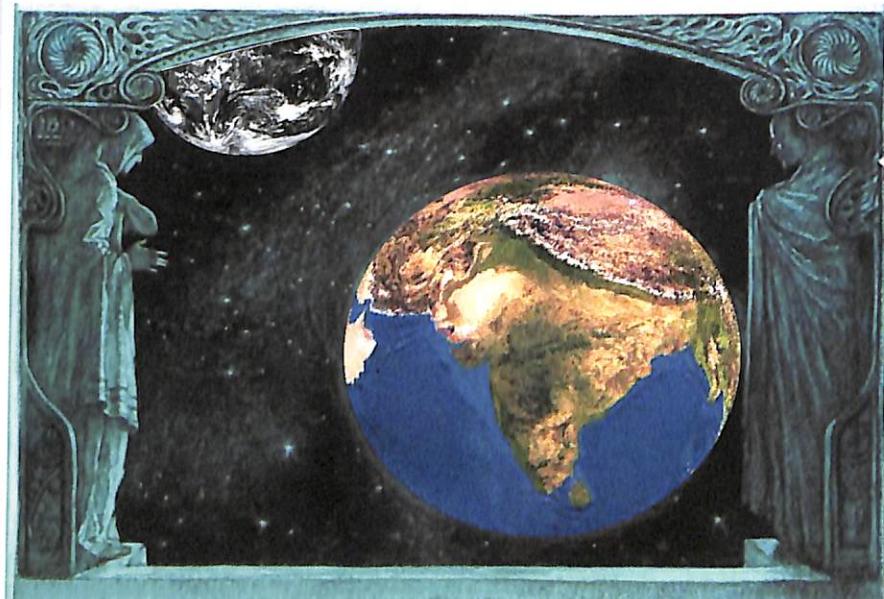
मैं अरुण तिवारी का आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का संपादन और नामांकरण कर इसे पाठकों के लिए रुचि कर बनाया। प्रो. मनोहर सिंह राठौड़, विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर ने पुस्तक की विषय-वस्तु का समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

— सत्येन्द्र सिंह

## रामय के आङ्गने में हमारा पानी

आपो देवता... हे जल के देवता ! तुम्हें परमात्मा से सामर्थ्य प्राप्त है। तुम भूः भुवः और स्वः ... तीनों लोकों को पवित्र करते हो; क्योंकि तुम स्वरूप से ही पापों का नाश करने वाले हो। हम अपने शरीर से तुम्हारा स्पर्श करते हैं। तुम हमारे अंगों को पवित्र करो। तुम शासकों के शासक हो। तुम में शासकों को दण्ड देने की क्षमता है। सारी सृष्टि को आप ही गतिमान बनाए हुए हो। हे जल के देवता! तुम्हें शत्-शत् नमन्!

ईश्वरीय शक्ति ने आकाश, अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी... इन पांच तत्वों के योग से सृष्टि की रचना की। हमारा शरीर इन्हीं पांच तत्वों से बना है। इन पांच तत्वों को पंच महाभूत कहा गया है। इन पंच महाभूतों के मिलन से ही सभी जीवों के लिए



जीवन के साधन सुलभ हो सकते हैं। इस प्रकार ये पंच महाभूत जीवनाधार हैं। हम जानते हैं कि प्रकृति के रूप... स्वरूप में प्राकृतिक क्रियाओं के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। उन्हीं के अनुसार सभी जीवधारियों को रहना पड़ता है। पंच तत्वों से युक्त शरीर में सदैव इन्हीं तत्वों की आवश्यकता होती है। अतः ये पांच तत्व हमारी प्राथमिक आवश्यकता हैं। इनमें जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अन्य आवश्यकताएं गौण होती हैं।

शरीर निर्माण में जल का अपना महत्व है। सृष्टि का दो-तिहाई हिस्सा जल ही है। मानव शरीर में भी इसी अनुपात में जल उपलब्ध है। प्राचीन मानव ने इसके महत्व को बखूबी जाना था। इसीलिए कालांतर में जल प्रबन्धन के कार्य मानव सभ्यता के प्रतीक बन गए। जल प्रकृति की अक्षय देन है, परन्तु इसका भण्डार अक्षय नहीं है। मानव उपयोग के योग्य जल बहुत ही सीमित है। वैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार पृथ्वी पर उपलब्ध जल का सिर्फ ढाई प्रतिशत हिस्सा ही मीठा है। दो-तिहाई हिस्सा तो बर्फ के रूप में है। शेष जल का कुछ ही भाग हमारे उपयोग में आता है। बिना जल के मानव के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः पानी बचाना जरूरी है। इसी कारण जब से मानव सभ्यता का उद्भव हुआ, तभी से जल संरक्षण के कार्य होते रहे। जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, जल प्रबन्धन के क्षेत्र में भी नये-नये तकनीक और तौर तरीके विकसित होते गए।

हम पौराणिक काल, ऐतिहासिक घटनाएं और इतिहास के पन्नों को उलट कर देखें, तो पायेंगे कि जल संरक्षण कार्यों में समाज व शासक वर्ग का सहयोग सदा ही बना रहा। इसके लिए नियम और संस्कार दोनों थे। हमारे आदि पुरुष, समाज सचेतक, समाज सुधारक, प्रथम शासक राजा मनु के द्वारा रचित मनुस्मृति में भी जल संरक्षण की परम्परा का उल्लेख है। हमारे दैनिक जीवन, पूजा-पाठ और रस्मों-रिवाज भी जल महत्व को रेखांकित करता है। राजा सगर ने जल के लिए करोड़ों तालाब... कुएं बनवाए। राजा भगीरथ ने धरती पर गंगा को अवतरित किया। राजा जनक ने राजा होकर भी वर्षा जल के लिए हल चलाया।

बुन्देलखण्ड में हजारों साल पहले बने चन्देलों के तालाब आज भी लाखों लोगों की आजीविका और प्रेरणा के साधन बने हुए हैं। राजस्थान में किसी गांव-कस्बे-शहर

में चले जाइए।... तालाब से लाभान्वित होते समाज के दर्शन स्वतः हो जायेंगे। रियासतों के राज में बने बांध आज भी बड़े-बड़े शहरों की जल जरूरत को पूरा करने में सहयोग कर रहे हैं। स्पष्ट है कि भारत में जल संरक्षण की अच्छी समझ व परम्परा रही है। लेकिन पिछली आधी शताब्दी में जल संरक्षण का संस्कार बुरी तरह घायल हुआ है। क्यों? दरअसल यह व्यापारीकरण ही है, कि हमारी समृद्ध-पारंपरिक जल संरक्षण समझ को लगातार नकारने की कोशिश हो रही है। बाजारू शक्तियों ने पहले हमारे तालाब, कुएं, बावड़ी के पानी का उपयोग करने से तरह-तरह की बीमारी होने का भ्रम समाज में फैलाने की कोशिश की। हमारे पारंपरिक ज्ञान को लताड़ने की कोशिश की। मशीनीकरण को बढ़ावा दिया। इससे हम पानी का संरक्षण भूल गए; सिर्फ दोहन याद रहा। भूजल की समस्या बढ़ी। आज देश में भूजल के दोहन पर नियंत्रण के लिए नए कुएं-बोरिंग आदि पर रोक की कानूनी प्रक्रिया खड़ी की जा रही है; भूजल बिल लाया जा रहा है। इससे रोकथाम कम लगेगी, भ्रष्टाचार ज्यादा बढ़ेगा। ये लंबी चर्चा का विषय है। हम अपनी बात करें, क्योंकि समाज की पहल से ही यह सब रुकेगा। हमें समझना जरूरी है कि यह सब बाजारू खेल है।

बाजार में पानी साफ करने की नई-नई तकनीक और कम्पनियां ईजाद हो रही हैं। आज पानी बिक्री का बाजार ब्राण्डों उत्पादों से भरा पड़ा है। एक तरफ दुनिया-जहान में जल की किल्हत हो रही है, दूसरी और जल के व्यापारीकरण की नई-नई योजनाएं बनाई जा रही हैं। जल के संरक्षण के लिए विदेशों से अनुदान व कर्ज के रूप में धन लेकर जल-संरक्षण की बड़ी-बड़ी परियोजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है। सदियों से निरन्तर बहने वाली नदियों पर बड़े-बड़े भीमकाय बांध बन रहे हैं; जबकि हमारे शास्त्रों में नदी के बहाव को दूसरी ओर ले जाने वाला अथवा उसके प्रवाह को रोकने वाला दण्ड का भागीदार कहा गया है। आज के समय में ये दण्ड कौन दे? किसे दें? रक्षक ही भक्षक हो रहा है। जल संकट गहराता जा रहा है। भूजल घट रहा है। नदियां सूख रही हैं। तालाबों का अस्तित्व खत्म हो रहा है। अफसोस! मनुष्य की सोच ही दूषित हो गई है। समाज पराधीन हो रहा है। नेतृत्व बिक रहा है। इस खतरे के बीच से निकलकर हमारी जल संरक्षण परम्परा आगे और समृद्ध बने और हमें भी समृद्ध करे। हमारा समाज ऐसी व्यवस्था में जुटे। ईश्वर से यही प्रार्थना है। देश की सरकार, समाज जल के प्रति सजग होकर जल-संरक्षण के

कार्यों को बढ़ाए; तभी हम जल की सभी समस्याओं से निजात पा सकते हैं। सूफी संत रहीमदास जी ने अपने एक दोहे में जल की संपूर्ण आभा उड़ेल ही दी थी;

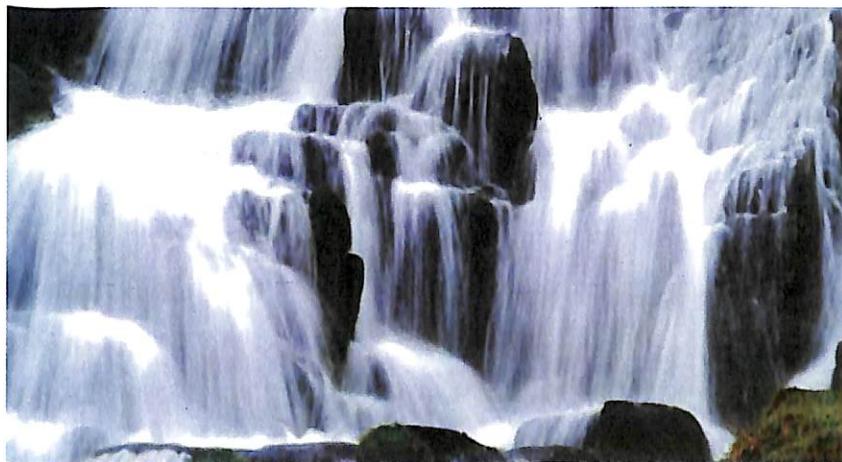
भारतवर्ष के राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, महापंडित, भारतीय अर्थशास्त्र रचयिता, शिरोमणि आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिशास्त्र के चौदहवें अध्याय के प्रथम सूत्र – ‘पृथिव्यां त्रीणिरत्नानि जलमन्त्रसुभाषित्’ में कहा कि तीन चीजों की महिमा का वर्णन किया है, जो सच्चे अर्थों में रत्न अर्थात् मूल्यवान पदार्थ हैं, ये हैं – जल, अन्न और मधुर तथा हितकारी वचन।

सूफी संत रहीमदास जी ने अपने एक दोहे में जल की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि –

‘रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।  
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून’

अजीब स्थिति है कि देश-विदेश दोनों ही एक तरफ जल संरक्षण के लिए कर्ज व अनुदान देने में लगे हैं, दूसरी तरफ ये पानी का बाजार बढ़ाने के लिए कर्ज, सलाह देने को आतुर दिखाई देते हैं।

चाणक्य और रहीम के संदेश को, जल संरक्षण कर ही जीवन में उतारा जा सकता है। जल संरक्षण सभी को करना है। यह सभी की जिम्मेदारी है। निजी भी, सामाजिक भी, शासक की भी और प्रकृति की भी।





# पानी परम्परा

## प्रकृति द्वारा जल संरक्षण

प्रकृति या सृष्टि क्या है ? हम स्वयं और हमारे पास -दूर जिस किसी वस्तु व क्रिया का अस्तित्व है, वही प्रकृति है, जो दिखता है, वह भी और जो नहीं दिखता वह भी । हम देखते हैं कि प्रकृति के अपने नियम हैं । प्रकृति समय-काल-परिस्थिति के अनुसार स्वयं को नियंत्रित करती है । रचना और विध्वंस इसी नियंत्रण प्रणाली के हिस्से हैं । प्रकृति जानती है कि कहां और कब वर्षा हो ? कब शीत, कब ग्रीष्म और कब शरद हो ? गंगा-यमुना का कहां-कहां से उद्भव हो और कहां मिलन । कहां, कैसे मानव, कैसी जीवन शैली बने ? सब कुछ वैज्ञानिक और तार्किक है । फिर भी मानव उससे उलट काम में लगा है ।

नदी जोड़-तोड़ से लेकर भोजन, जीवन, जन्म, औषधि, बात-विचार सभी कुछ अप्राकृतिक और कृत्रिम... यह व्यवहार हमें कहां ले जायेगा । भारत सरकार की नदी जोड़ परियोजना विध्वंस की तैयारी है । प्रकृति जिन नदी धाराओं, झरनों, तालाबों, वृक्षों और भूशिराओं के जरिए जल संरक्षण व शुद्धिकरण का धर्म निर्वाह करती है । हमारी बड़ी-बड़ी जल परियोजनाएं उनका विनाश करने पर तुली हैं ।

हमें प्राकृतिक दृष्टिकोण रखते हुए सतत, टिकाऊ और हमारे नियंत्रण में रहने वाली जल संरचनाओं की रचना करनी है । प्रकृति द्वारा हो रहे जल संरक्षण को आगे बढ़ाना और उसमें सहयोग करना हमारा कर्तव्य है । जो समाज कभी प्रबन्धन और उपयोग दोनों पहलुओं पर समानता व न्याय का हामी था, वही उसकी पालना से पीछे हटने लगा है । परिणामस्वरूप सामाजिक एकता व रचनात्मकता को पीछे ठेलकर द्वेष व विनाश आगे आ गए हैं । भोगवृत्ति प्रमुख हो गई । त्याग का सिद्धान्त भुला दिया गया । उसे याद रखना जरूरी है ।

ईशा वास्यमिदम् सर्वम् यत्किंच जगत्याम् जगत् ।  
तेन त्यक्तेन भुं जीथाः माऽगृघः कस्यस्विद्धनम् ॥१॥

इस सृष्टि में जो कुछ भी ‘जड़ अथवा चेतन’ है, वह सब ईश द्वारा आवृत - आच्छादित है। उसी के अधिकार में है। केवल उसके द्वारा उपयोगार्थ छोड़े गए का उपयोग करो। अधिक लालच मत करो। क्यों? आखिर यह धन किसका है ? अर्थात् किसी का नहीं... केवल ईश का ही है।

॥ अजोऽपि सन्नव्याशत्र्यीमा भूतानामीश्वरोऽपिसन्,  
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्मायया ॥

अर्थात् मैं अजन्मा और अविनाशी स्वरूप तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूं।

॥ सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।  
कल्पक्षेये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्  
(श्रीमद्भागवत नौवां अध्याय, श्लोक ७-८)

हे कौन्तेय ! कल्पों के अन्त में सब भूत मेरी प्रकृति को प्राप्त होते हैं। अर्थात् प्रकृति में लीन होते हैं और कल्पों के आदि में मैं उन्हें फिर रचता हूं।

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।  
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवंशं प्रकृतेर्वशात् ॥

मैं अपनी प्रकृति को अंगीकार करके स्वभाव के बल से परतन्त्र हुए इस संपूर्ण भूत समुदाय को बार-बार उनके कर्मों के अनुसार रचता हूं। अर्थात् मैं अपनी प्रकृति को स्वीकार करके जगत् की रचना करता हूं;... अर्थात् मेरी अध्यक्षता में प्रकृति जगत् की रचना करती है।

प्रकृतिं पुरुषं चैव विध्यनादी उमावपि ।  
विकारांश्चव विधि प्रकृति सम्भवान् ॥

प्रकृति और पुरुष इन दोनों को ही तू अनादि जान और राग-द्वेषादि विकारों का तथा त्रिगुणात्मक संपूर्ण पदार्थों को भी प्रकृति से ही उत्पन्न जान।

प्रकृति की समस्त रचनाओं में मनुष्य प्रकृति की एक अनुपम कृति है। पंचमहाभूतों के योग से इसकी सृष्टि है। प्रकृति ने मनुष्य को अपार बौद्धिक क्षमता दी है। इसमें वे सभी गुण हैं जो उसे सांसारिक दुनिया को देखने, समझने, सोचने और भोगने के साथ-साथ ईश्वरीय तत्व को जानने व पाने योग्य बनाते हैं। मानव में ईश्वरमय होने की क्षमता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक, गुरु गोविन्दसिंह, मोहम्मद, ईसा मसीह... ये सभी मनुष्य रूप में परम ब्रह्म, परमपिता परमात्मा स्वरूप हो गए। सीता, पार्वती, लक्ष्मी... जगत जननी महाशक्ति स्वरूपा हो गई। असंख्य भक्तजन इनकी भक्ति करते-करते इसी प्रकृति में विलीन हो गए। भक्ति करते-करते ईश तत्त्वमय ईश तत्त्ववेता, ज्ञानी-महाज्ञानी सिद्ध पुरुष हो गए।

एक बात गौरतलब है कि जब मनुष्य लोभ-लालच के वशीभूत बौद्धिक क्षमता का दुरुपयोग करता है, तो वह ईश्वरीय तत्व का ज्ञानी होते हुए भी मनुष्य जाति में सम्मान के योग्य नहीं हो सकता। रावण अहंकार व लोभवश सारी सृष्टि का भोगी बना था। ज्ञानी होते हुए भी संपूर्ण प्रकृति को अपने वश में करने के दंभ से उसका समूल नष्ट हो गया। आज 'रावण' नाम मनुष्य जाति में अपयश का प्रतीक बन गया है। इसी तरह जिसने भी जब-जब प्रकृति को अपने वश में करने की कोशिश की, प्रकृति ने उसका सर्वस्व नष्ट किया। प्रकृति किसी के वश में नहीं हो सकती। सभी प्राकृतिक संरचनाएं प्रकृति के वश में ही रहने वाली हैं। जब-जब प्रकृति को वश में करने की कोशिश होगी, तब-तब हम मुँह की खायेंगे।



# जल संरक्षण और हम

## मनुष्य द्वारा जल संरक्षण

मनुष्य का शरीर ब्रह्माण्ड की कल्पना को साकार करता है। वह नौ इन्द्रियों के द्वारा सुसज्जित है। इन नौ इन्द्रियों के प्राकृतिक योग से पुरुष-स्त्री बने। जैसे-जैसे बौद्धिक विकास हुआ, मनुष्य की ललक बढ़ी। वंश वृद्धि हुई। प्राकृतिक रूप से सामूहिक जीवन जीने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। इससे जरूरतें भी बढ़ी और इंतजाम भी। ये इंतजाम पानी को लेकर पहले हुए, बाकी चीजों के लिए बाद में। इन्हें किसी एक अकेले आदमी ने नहीं किया, पूरे समाज ने किया। इसमें जीव-जन्तु और वनस्पति सभी शामिल हुए, किन्तु मानव मस्तिष्क जल संरक्षण व प्रबंधन की सबसे अहम् कड़ी बना।



## शासन द्वारा जल संरक्षण

मानव विकास यात्रा में वंश बन्धुत्व, समूह व्यवस्था, समाज व्यवस्था, शासक व्यवस्था के अनेक पड़ाव आए। शासन व्यवस्था के लागू होने के बाद से जल का कार्य सिर्फ समाज का नहीं रहा, वह शासन का भी हो गया। शासन का कार्य परम्परागत तौर पर समाज द्वारा किए जा रहे जल के कार्य में सहयोग करना और उसे सुरक्षित रखना था। शासन व्यवस्था में जिन शासकों ने समाजहित में जल प्रबन्ध का कार्य किया है, वे समाज की स्मृतियों में आज भी जिन्दा हैं। उन्हें समाज ने लोक कथाओं, गीतों और उक्तियों में जीवित रखा है। ये शासक अपने जीवन काल में तो धन्यवाद के पात्र थे ही... हजारों-हजार वर्ष बाद आज भी धन्य हैं।

हमारे वेद-पुराणों में, रामायण और महाभारत काल में ऐसे अनेक शासकों के प्रति सम्मान दर्शाया गया है। वे आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं। तब तालाब और बावड़ियां समृद्धि का प्रतीक समझे जाते थे। शासक लोग बावड़ियों का निर्माण गर्मी में ठंडक पाने के लिए भी करते थे। तालाबों का साफ जल और जल से लाभान्वित होते समाज खुशहाली के सूचक थे। तालाबों से समृद्ध क्षेत्र की खेती, पशु धन, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, वनस्पति... सभी नव चेतना व समृद्धि का पर्याय बन गए थे। बंगाल व बंगाल से सीमावर्ती बिहार क्षेत्र में परिवार-घर की शान थे। राजस्थान के जैसलमेर का देहाती समाज राजा सगर को अपनी जीवन शैली में आज तक नहीं भुला पाया है। वह अपने लोकगीतों के सहरे पीढ़ी-दर-पीढ़ी राजा सगर के जल प्रबन्धन कार्यों को आज भी याद रखे हुए हैं। उनके गीतों का भाव है - 'राजा सगर ने खुदवाए सागर कोटि-हजार। ऐसा राजा धन्य है।'

राजा सगर की पीढ़ी में ही राजा भगीरथ हुए। उन्होंने हिमालय की गोद से गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया। अपनी प्रजा के लिए घोर तप किया। भगीरथ के प्रयासों से ही गंगा भारत भूमि पर आई। गंगा के प्रति भारतीय समाज की अटूट आस्था दुनिया के लिए आश्चर्य बनी हुई है। गंगा के प्रति श्रद्धा भाव समाज की प्रकृति में आस्था, समृद्धि व चेतना का प्रतीक है। गंगा के सहस्रों नामों में एक नाम भागीरथी भी है। यह नाम राजा भगीरथ के नाम से जोड़ा गया है। यह नाम आज के समाज में

आदर से लिया जाता है। सदियां गुजर जाने के बाद आज भी समाज जल प्रबन्धन के प्रति आस्था वाले कई शासकों को श्रद्धाभाव से याद करता है।

### नीतिगत व्यवस्था

जब समाज का स्वरूप व्यापक हो जाता है, तो आवश्यकता अनन्त और साधन सीमित हो जाते हैं। ऐसे में उपभोग की वृत्ति-प्रवृत्ति में भी आवश्यकतानुसार बदलाव जरूरी हो जाता है। परम प्रजा पालक मनु जी महाराज ने साधनों के व्यवस्थित वितरण उपयोग, रख-रखाव आदि के लिए नियम बनाए थे। आदि पुरुष मनु को प्रथम शासक और समाज सुधारक के रूप में समाज आज भी याद रखे हुए है। उन्होंने शासन और समाज दोनों को नियमों की पालना के लिए सचेत किया। जल प्रबन्धन की दृष्टि से भी उनके बनाए नियम श्रेष्ठ थे।

मनु स्मृति में तालाबों को नष्ट करने वाले को तालाब के जल में डुबोकर मृत्युदण्ड जैसे कठोर दण्ड का प्रावधान है। इससे उस समय जल के प्रति समाज व शासक की प्रतिबद्धता स्थापित होती है। इसी प्रकार विदुर-नीति में भी जल के प्रबन्धन के लिए नियम निर्धारित किए गए थे। महाभारत काल में भी तालाबों का विस्तृत वर्णन मिलता है। आचार्य शिरोमणि चाणक्य के नीति शास्त्र में जल प्रबन्धन के लिए नियमों-उपनियमों को नए दृष्टिकोण से परिभाषित किया गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि तब नियमों के प्रति समाज सजग भी था और उनकी पालना के प्रति प्रतिबद्ध भी। तत्कालीन सजगता व प्रतिबद्धता की वजह से ही आज का समाज अस्तित्व में है। उस समय तालाब देश की आर्थिक समृद्धि के प्रतीक बने।

दरअसल हमारे देश की राजवंशी सभ्यता ने समाज के साथ मिलकर तालाब निर्माण की परम्परा को जीवित ही नहीं रखा, बल्कि समृद्ध भी किया। उसने समाज और प्रकृति को एकरूप बनाए रखा। यह हमारी स्वावलम्बी व्यवस्था थी। आर्थिक उदारवाद के पक्षधरों ने इस स्वावलंबन की सदैव उपेक्षा की। दुनिया आज भी हमारे जल प्रबन्धन की कायल है, पर व्यापारिक हाथ इस व्यवस्था को तोड़ने की साजिश में लगे हैं।

## वर्तमान स्थिति

जनसंख्या वृद्धि या प्रकृति के मनमाने उपभोग की बढ़ती लालसा ने आज समाज का दृष्टिकोण ही बदल दिया है। जब कोई स्वयं को प्रकृति का नियंता मानने लगता है; तब स्थिति विकट होने लगती है। अब समाज के सामने नई-नई समस्याएं आने लगी हैं। इन समस्याओं से आतंकित हो मनुष्य... समाज सब उल्ट दिशा में जाकर प्रकृति का दोहन करने में लगे हैं; जबकि प्रकृति तभी अक्षय बनी रह सकती है, जब उसमें से जितना लिया जाए, कम से कम उतना उसके खजाने में वापस डाल दिया जाए। इस सत्य के बावजूद समाज और शासन ने स्वार्थवश प्रकृति को निजी लालच पूरा करने वाला अक्षय खजाना मान लिया है। ध्यान रहे कि प्रकृति किसी का लालच पूरा करने के लिए नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तो ठीक, लेकिन उपभोग की वृत्ति अच्छी नहीं। उपभोग की मनःस्थिति होने पर समाज और शासन में शोषण की वृत्ति को बढ़ावा मिलता है। वर्तमान जीवन शैली में उपभोग व शोषण की वृत्ति को देखा जा सकता है। यह समाज की स्वावलम्बी व्यवस्था के लिए धातक है। हर चीज तथा परिस्थिति की कीमत बसूलने वाले आज के बाजारू वातावरण में पानी भी मात्र एक संपत्ति बन कर रह गया है, जिसका स्वामित्व सरकार के पास है। देश में हर प्रकार के जल पर सरकार का अधिकार है। यहां तक कि वर्षा की प्रत्येक बूँद पर भी सरकार का अधिकार है। कम से कम राजस्थान सरकार के मत्स्य विभाग के आला अफसर तो यही कहते हैं। राज्य और केन्द्र की सरकारें पानी पर अपना-अपना अधिकार दिखा रही हैं। समाज की भूमिका सिर्फ टैक्स देने तक सीमित मान ली गई है। सरकारें भूल गई हैं कि प्राकृतिक जल कोई वस्तु नहीं, हमारा जीवनाधार है। शासक वर्ग में इसी जीवन को अपने अधिकार में लेने की होड़ लगी है। ऐसी स्थिति रही तो आगे होने वाली दुर्दशा सचमुच... डरावनी होगी।

इसे ध्यान में रखते हुए समाज को जागरूक करने की आवश्यकता है। आज सरकार जल को अपने अधिकार में लेकर जल का व्यापारीकरण कर रही है। देश में देशी-विदेशी कम्पनियां जल के व्यापार में लगी हैं। आज से दस साल पहले तक प्याऊ लगाना, सार्वजनिक तालाब खुदवाना, कुएं बनवाना.. पुण्य का काम था। पहले

रेलवे में बाकायदा 'पानी पांडे' की नियुक्ति की जाती थी; जो यात्रियों को निःशुल्क जल पिलाता था। दुर्भाग्य है कि आज सरकार भी जल से धन कमाने के रास्ते खोलने में लगी है। ये कैसा समय और कैसा शासन है? प्राचीन काल से ही समाज और शासक बड़े आत्मीय ढंग से पानी का पुण्य कमाते आए हैं। तब की बनी जल संरचनाएं आज भी कई जगह समाज के उपयोग के साथ-साथ आजीविका का साधन बनी हुई हैं। तालाब कभी हमारी स्वावलम्बी व्यवस्था के प्रतीक थे। इनके निर्माण से समाज को कभी विस्थापित होने की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। इनसे समाज आबाद हुआ।

तभासं राजस्थान के 19 जिलों में ऐसे ही जमीनी काम को अंजाम देने में अपना जीवन लगा रही है। संस्था के काम से, ऊपर कही बातों की सत्यता को प्रमाणित करते हैं। इन्हें खुद अपनी आंखों से देखा जा सकता है।



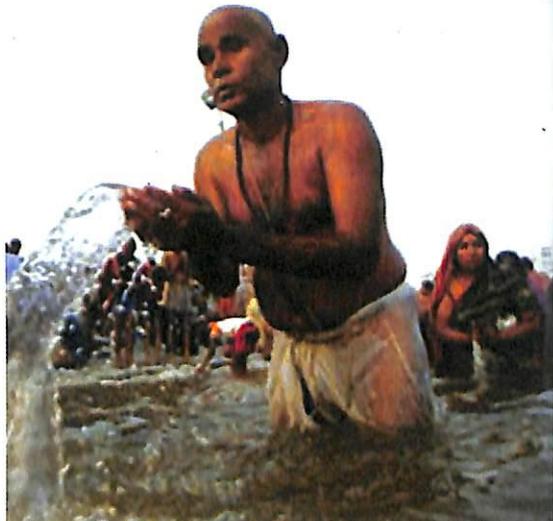


## भारतीय जीवन शैली में पानी परम्परा

पानी परम्परा भारतीय जीवन शैली में इस तरह समाहित है कि जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त तक और युग-युगान्तरों से जीवन्त रहती हुई आज भी जीवन्त है और भविष्य में जीवन्त ही रहेगी। पानी की परम्पराएं भारतीय भूखण्ड के हर क्षेत्र में पानी से जीवन और जन्म से जुड़ती चली आ रही हैं।

श्रीराम के पूछने पर वसिष्ठ जी ने जल तत्व की धारणा के विषय में बताया कि जल तत्व की धारणा से जल रूप होकर वहां भी वैसे ही जगत् का दर्शन किया। जैसे कांट-छांट कर स्वच्छ किये गए इन्द्रनीलमणि के समान नील वर्ण वाले भगवान् विष्णु शेषनाग के अंगों पर

भगवती लक्ष्मी के साथ विश्राम करते हैं। उसी प्रकार श्याम शरीर वाले मैंने भी बादलों के आने पर विद्युन्मयी वनिता के साथ विश्राम किया। रस रूप होने के कारण मैंने जिह्वा संबंधी एक-एक अणु के साथ रहकर उत्तम अनुभव प्राप्त किये। जैसे मैं अपने शरीर



का नहीं केवल ज्ञान रूप आत्मा का ही अनुभव मानता हूँ। जल का रूप धारण करके हवा के साथ रथ पर चढ़ कर मैंने आकाश की निर्मल गलियों में सुगन्ध की भाँति विचरण किया। जल समता प्राप्त करा देने वाली उस जलमयी धारणा के द्वारा अजड़ होकर भी जड़ (जल) सा बनकर तथा समस्त पदार्थों के भीतर ज्ञाता रूप से रहता हुआ भी दूसरों के द्वारा अज्ञात होकर रहा।

**सलिल एको द्रष्टद्वैतो भवत्येष ब्रह्मलोकः सम्राडिति हैन  
मनुशशाम एषास्य परमा गतिरेषास्य परमा सम्पदे षोस्य परमो  
लोक एषो स्य परम आनन्दः । - याज्ञवल्क्य महर्षि**

“जो सलिल (जल) के समान अत्यन्त स्वच्छ, शुद्ध, माया-मल रहित है, एक, अद्वैत, अविपरिलुप्त स्वात्मज्योति रूप दृष्टिका दृष्टा है। यही ब्रह्म विद्वान होता है। यही ब्रह्मरूप स्व-प्रकाश लोक होता है।”

**यथोदकं शुद्धे शुद्ध मासिक्तं ताद्गेव भवति ।  
एवं मुनोर्विजानम् आत्मा भवति गौतम ॥**

“यमराज नचिकेता से कहते हैं - हे गौतम ! जैसे शुद्ध जल में मिला हुआ शुद्ध जल तद्रूप हो जाता है, वैसे ही आत्मज्ञानी तद्रूप हो जाता है।”

- कल्याण साधनांक से सादर।

भारतीय जीवन शैली में पानी परम्परा को सामाजिक जीवन के हर पहलू में स्वतः प्रवाहित होते हुए सजीव जीवन्तः देखा जा सकता है। इसके लिए किसी प्रकार की व्यवस्थाओं की आवश्यकता नहीं होती। पानी परम्परा भारतीय समाज की नैतिकता की आत्मा या देव देवत्व कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। क्योंकि पानी जीवन है जो सत्य है। जीवन सत्य के दर्शन भारतीय समाज दैनिक जीवन में पानी परम्पराओं के माध्यम से अपनाता आ रहा है। इसका न तो कोई इतिहास है और न निश्चित तिथि।

हमारे देश में पुरुष, ऋषभ, द्रविण और देवक नाम वाले चार वर्णों के लोग रहते हैं और जल स्वरूप भगवान की स्तुति करते हैं।

हे जल ! तुम परम पुरुष परमात्मा के रेतस् हो अथवा परमेश्वर ही तुम्हारी शक्ति है; तुम भूः भुवः स्वः तीनों लोकों को पवित्र करते हो । अतः स्वभाव से ही पापनाशक हो । हम अपने शरीर से तुम्हारा स्पर्श करते हैं । तुम हमें पवित्र कर दो ।

- कल्याण संत अंक से सादर

श्री वसिष्ठ जी और श्रीराम का संवाद : ‘जल तत्व की धारणा  
- योग वसिष्ठ से

मानवजाति कहें या मनुष्य, जल का पुत्र है । जल ही उसका स्वरूप है । जल से ही उसका जन्म हुआ है । जल का आश्रय ही उसकी स्थिति, गति और श्रीवृद्धि है । जल को लक्ष्य करके ही उसकी साधना होती है । जलस्वरूप में स्थिति प्राप्त करने में उसके मानव-जन्म की सार्थकता है तथा जल रूप में प्रतिष्ठा लाभ करने का उसे जन्मसिद्ध अधिकार है । भारतीय ऋषि-मुनियों ने विश्व के समस्त मनुष्यों को पुकार कर उनके इस जन्मसिद्ध अधिकार की घोषणा की है । यह अधिकार केवल किसी विशेष जाति या वर्ण का ही नहीं है, किसी विशेष समाज या सम्प्रदाय का भी नहीं है । जल लोक के दरवाजे की चाबी किसी व्यक्तिविशेष के हाथ में नहीं है । किसी व्यक्तिविशेष को वहां के मालिक का इकलौता ‘पुत्र’, पूर्णतम अवतार अथवा विशिष्टतम सन्देशवाहक (पैगम्बर) स्वीकार करने, अर्थवान करने के साथ उस अधिकार का कोई संबंध नहीं है और न किसी खास आचार और अनुष्ठान की रीति-पद्धति से ही वह अधिकार नियमित है । उस जल लोक का द्वार तो सर्वदा ही खुला रहता है । इच्छा करते ही प्रवेश कर सकता है । प्रत्येक मानव शिशु जन्ममात्र से ही इसका उत्तराधिकारी होकर उत्पन्न होता है, वह जलप्राप्ति का पूरा हकदार है ।

भारतीय शास्त्र मनुष्यमात्र के भीतर इस गौरवमयी चेतना को जाग्रत करने में लगे हैं कि “मैं जल पुत्र ही मृत्युलोक में अवतीर्ण हुआ हूं, जल के द्वारा ही मेरी सत्ता का

निर्माण हुआ है। मेरे चारों ओर की सब चीजें मृत्यु के अधीन होने पर भी मैं स्वरूपतः अजर-अमर हूं, उन सबको मृत्यु खा जाती है, परन्तु मुझे स्पर्श करने की क्षमता मृत्यु में नहीं है। मैं मृत्यु के राज्य में अपने को मृत्युंजयरूपी से प्रतिष्ठित करके जल की विजयपताका फहराने के लिए प्रकट हुआ हूं।”

जल के प्रति ऐसी सोच से भारतीय पानी की परम्पराओं को हमेशा बल मिला है। बल क्यों न मिले ? जब हमारे ऋषि-मुनियों की जल तत्व की धारणा ही ऐसी रही, जिससे हमारे समाज का मार्गदर्शन और दृष्टिकोण जल तत्व की प्रधानता को स्वीकार कर जीवनशैली के विधि-विधान बनाये गये। ‘जल तत्व की धारणा’ के विषय में यहां ऋषि-मुनियों के विचार उल्लेखनीय हैं।

## भारतीय ऋषि-मुनियों के मतानुसार जल और जीवनदृष्टि

1. परमानन्द प्रदान करने वाली गंगाजी आप जल रूप में अवतीर्ण साक्षात् परब्रह्म हैं।
2. हाथ की अंजलि में रखे हुए जल की भाँति यह जीवन शीघ्र स्खलित हो जाता है।
3. जैसे बच्चे अपनी मां की ओर दौड़ते जाते हैं, वैसे ही प्यास से प्राणी जल की ओर भागते जाते हैं। उसी प्रकार वे जलादि पदार्थ ब्रह्माण्ड नामक महाशरीर के निकटतम भाग की ओर दौड़ते हैं।
4. जैसे जल तरंगों की शोभा ही नदियों की रचना बन गई है। उसी तरह सृष्टि की सत्ता चेतन सत्ता से अलग नहीं है।
5. सूर्य, शिव, गणेश, विष्णु, शक्ति के उपासक भी मुझे ही प्राप्त होते हैं। जैसे वर्षा का जल सब ओर से समुद्र में ही जाता है, उसी प्रकार पांचों के उपासक मेरी ही पास आते हैं। मैं एक ही हूं।
6. महासमुद्र का जल भी जल है, एक बूँद का जल भी जल ही है। एक बूँद जल जिन वस्तुओं में समिष्ट है, महासमुद्र के जल में भी वे ही पदार्थ वर्तमान हैं। इस भाव से परमात्मा का अंश आत्मापूर्ण है, परमात्मा ही है।

7. आत्मा की मुक्ति के लिए जल चाहिए और जल को आत्मा (ब्रह्महत्या) से छुटकारा पाने के लिए जल में जो मनुष्य अज्ञान के अधीन होकर मल-मूत्र त्याग करेगा, तो उस पर ब्रह्महत्या चली जाती है।
8. जैसे प्यासा मनुष्य बड़ी व्याकुलता के साथ पानी को याद करता है, उसी प्रकार मैं भी आकुल होकर विष्णु का स्मरण करता हूँ।
9. जड़ को जल से सींचने पर ही वृक्ष पर हरे-हरे पत्ते दिखाई देते हैं।
10. जैसे समुद्र में एक ही जल अनेक तरंगों के रूप में प्रतीत होता है। उसी तरह एक सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म ही जगत् के अनेक रूपों में प्रतीत होता है।
11. जिस प्रकार जल में 'रस' सार वस्तु है। उसी प्रकार सब पदार्थों की सार वस्तु परमात्मा ही है।
12. जैसे पता लगने पर मृगतृष्णा जल मिथ्या सिद्ध होता है। उसी प्रकार बारम्बार इन्द्रियों के सम्पर्क में आने पर भी यह दृष्ट्य-प्रपञ्च तत्व ज्ञान होते ही मिथ्या सिद्ध हो जाता है।
13. जैसे पास ही खड़े हुए पुरुषों के सामने दिखाई देने पर भी मृगतृष्णा का मिथ्या जल उनकी प्यास नहीं बुझा सकता, वैसे ही ये असत्य विषय किसी भी ज्ञानी पुरुष को कैसे रुचिकर प्रतीत हो सकते हैं?
14. जैसे जल में द्रवत्व, आकाश में शून्यता और वायु में स्पन्दन ओत-प्रोत है, वैसे ही परब्रह्म परमात्म में अनिर्वचनीय विवर्तस्य यह जगत् है।
15. जगत् में जितनी अनुभूतियाँ हैं, ये सभी महाभित्तिरूप जल की द्रव्य स्वरूप हैं।
16. जैसे समुद्र के जल नदियों के जल के साथ मिलकर एक हो जाते हैं। आकाश में विद्यमान वायु के भीतर मृत प्राणियों के प्राण हैं।

## भारतीय जीवन शैली में जल के उपयोग

हमारे शास्त्रों के अनुसार भारतीय जीवन शैली में जल के उपयोग के संबंध में दैनिक-जीवन के लिए मार्गदर्शी नियम दिए हैं। जो निम्नवत् हैं -

1. जल का अपव्यय रोकना - “जल से भरे हजारों घड़ों द्वारा अभिषेक करना क्लेश और श्रम को ही बढ़ाना है। स्नान तो एक घड़े से भी हो सकता है।”

2. अंजलि से जल न पीयें।
3. पानी पर कभी पैर या हाथ से आधात न करें।
4. अगाध जल में न घुसें।
5. बायें हाथ से जल उठाकर या पानी में मुँह लगाकर न पीयें।
6. अनजान जल में न उतरें।
7. पानी में वीर्य न छोड़ें।
8. जल में मैथुन न करें।
9. जल में न थूकें।
10. जल, वायु और धूप आदि के द्वारा दूसरे को कष्ट न पहुंचायें।
11. देर तक जल के अन्दर न रहें।
12. पानी में पेशाब या पाखाना न करें।
13. नम्र होकर स्नान न करें।
14. नम्र होकर जल में प्रवेश न करें।
15. जल में अपनी परछाई न देखें।
16. जल की कभी चोरी न करें।
17. जल का प्रबंध किये बिना यात्रा न करें।
18. स्नान किया हुआ वस्त्र तथा घड़े से छलकता हुआ जल, इन दोनों से बचना चाहिए।

## **स्नान**

जो मनुष्य शास्त्रोक्त नियमों से युक्त होकर स्नान करता है, वह हरिभक्त पुरुष अति पापों के समूह से छुटकारा पाकर विष्णुपद को प्राप्त होता है।

**स्नातो हं सर्वतीर्थं गर्ते प्रसवणेषु ।  
नदीषु सर्वं तीर्थेषु ततनानं देहि मे ।**

मैं संपूर्ण तीर्थों, कुण्डों, झरनों तथा नदियों में स्नान कर चुका हूं। जल ! तुम मुझे उन सब में स्नान करने का फल प्रदान करो।

## जल से संबंधित लोक जीवन में व्याप्त उपमाएं एवं मुहावरे । (महाभारत धारावाहिक से)

1. इतिहास के पुल से जो समय का पानी बह गया है, वह पानी अब लौट कर नहीं आ सकता है। – भीष्म
2. लाठी मारने से पानी अलग नहीं होता। – कुन्ती
3. गंगाजी का सारा जल इस कालिख को धोने के लिए कम पड़ जाएगा। – विदुर
4. नदी आपको अपना पानी देने से इंकार कर दे। – गांधारी
5. लोभ और धर्म में आग-पानी का बैर है। – द्रोपदी
6. दुर्योधन उल्टी गागर है, जल जाने के सारे रास्ते बन्द हैं। – भीष्म
7. जिस सूर्य को तैरना न आता हो, वह इतने गहरे पानी में उतरा ही क्यों । – विदुर
8. अपने क्रोध पर लज्जा का पानी डालना सीखो कर्ण। – भीष्म
9. जल, पवन, अग्नि, धरती और आकाश का अपमान भला कौन कर सकता है। – श्रीकृष्ण
10. कभी-कभी जल की भाँति क्रोध को पी जाना अच्छा ही होता है। – कुल गुरु कृपाचार्य
11. प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए, जितनी आवश्यकता हो, यदि मनुष्य इसका ध्यान रखना छोड़ देगा, तो प्रकृति का भण्डार ही समाप्त हो जायेगा। – युधिष्ठिर
12. भला तुम्हारा यह रूप छिप सकता है। पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और जल के समान यह रूप छिपाना असंभव है। – द्रौपदी
13. अनुज सहदेव तनिक पेड़ पर चढ़कर तो देखो कहीं जल के दर्शन हो जायें। व्यास के कारण कंठ में कांटे पड़ गए हैं। – युधिष्ठिर
14. यह सरोवर मेरा है। मेरे रोकने के पश्चात् भी इस सरोवर का जल पीने का अपराध किया है। – यक्ष

15. जल और पवन पर हर प्राणी का अधिकार होता है। इसलिए मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना ही जल पीऊंगा और ले भी जाऊंगा। – अर्जुन
16. प्यासे होने का यह अर्थ तो नहीं कि तुम दूसरों का जल छीनने के अधिकारी हो गए। यदि तुम्हें जल चाहिए, तो पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए बिना कोई भी यह जल नहीं पी सकता। – यक्ष
17. पहले मैं जल पीऊंगा और यह सिद्ध करूंगा कि जल पर तेरा कोई अधिकार नहीं है। – भीम
18. इन बूँदों से मेरी प्यास नहीं बुझी। – युधिष्ठिर
19. ठहरे हुए जल से धोखा न खाओ। इस ठहरे हुए जल के नीचे बड़ा प्रपञ्च चल रहा है। धारायें एक-दूसरे को काट रही हैं। – शकुनि
20. द्यूत तो वह लाठी है, जो जल को भी अलग कर देती है। – विदुर
21. पिताश्री का आनन्द तो पानी से भरी हुई गागर में से पानी की तरह छलक पड़ रहा था। – दुर्योधन
22. व्यर्थ जल बहाना भी जल का अपमान है। आप रक्त बहाने की बात कर रहे हो। – बलराम
23. बहती नदी मिले या पानी का सागर, उसमें से प्यास भर पी लो, पर उस पर अधिकार न जताओ। – युधिष्ठिर
24. यदि वर्षा हो, धरती उसके मोती समेटने के लिए आंचल नहीं फैलाये, तो वर्षा का महत्व नहीं। – विदुर
25. जीवन के लिए जल और वायु दोनों महत्वपूर्ण हैं। – श्री कृष्ण
26. संदेश रूपी जल की वर्षा से शान्ति करें।
27. दुःख के अगाध जल में डूबना।
28. ‘मनुष्य के जीवन-विलास जल की उत्ताल तरंगों के समान चंचल एवं अनित्य हैं।’
29. गंगा जल के समान स्वच्छ व पवित्र।
30. क्रोध के गहरे पानी में इतने दूर नहीं जाना चाहिए जिसमें स्वयं डूब जायें। – श्री कृष्ण



## पानी परम्परा के रूप-स्वरूप

पानी परम्परा को हम तीन रूपों में देख सकते हैं, पानी परम्परा के कुछ रूप-स्वरूप का वर्णन निम्नवत् है :

- ✓ पानी और भारतीय जीवन शैली
- ✓ पानी का परम्परिक ज्ञान
- ✓ पानी की परम्परागत संरचनाओं का निर्माण

### पानी और भारतीय जीवन शैली

पानी परम्परा भारतीय जीवन शैली है, इसके अनेक रूप हैं।

#### जीव का जन्म

भारतीय समाज में मान्यता है कि जीव जगत् की सृष्टि के लिए स्वयंभू भगवान् इस समस्त जगत् को प्रकट करने के अभिप्राय से अन्धकार का भेदन करके प्रादुर्भूत हुए। उस समय जो इन्द्रियों से परे, परात्पर, सूक्ष्म से सूक्ष्म महान् से महान् अविनाशी और नारायण नाम से विख्यात हैं, वह स्वयं ही अकेले आविर्भूत हुए। उन्होंने अपने शरीर से

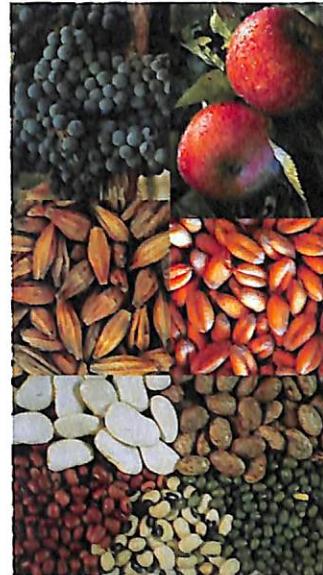


अनेक प्रकार के जगत् की सृष्टि करने की इच्छा से (पूर्वसंषिका) भली-भांति ध्यान सर्वप्रथमतः जल की ही रचना की और उसमें अपने वीर्य स्वरूप का निष्केप किया। उसी से सूर्य, ब्रह्मा हुए और ब्रह्मा की रचना में स्वर्गलोक, भूलोक, आकाश, विद्युत मेघमण्डल, नदियां, पहाड़, वनस्पति आदि जल से ही उत्पन्न हुए हैं।

## जीव का पोषण

जल ऊर्जा का स्रोत है। ऊर्जा सभी प्रकार की शक्ति का प्रतीक है। ऊर्जा से सारी सृष्टि गतिमान है। जीव शरीर के लिए ऊर्जा चाहिए जिससे जीव ऊर्जावान बना रहता है। जीव शरीर के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। सभी प्रकार के पोषक तत्व जल से ही मिलते हैं। वे चाहे किसी भी रूप में क्यों न हों, उन सबका आधार-बिन्दु जल ही है।

मानव शरीर को ऊर्जावान बनाये रखने के लिए अन्न की आवश्यकता होती है। अन्न ही प्राणियों का जीवन है तथा जल के बिना अन्न की उत्पत्ति कठिन है। भारतीय जीवन शैली में जीव रक्षा के लिए अन्न जीवन है। ब्रह्म है।



## जीवन शरीर का शुद्धिकरण

जल के बिना हमारे शरीर की शुद्धि नहीं होती है। जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक हमें शरीर की शुद्धि के विभिन्न प्रकार की रोजमर्रा जिन्दगी यापन में जल की आवश्यकता होती है। अभी तक विज्ञान ने इतना विकास नहीं किया है कि जल बिना शरीर की शुद्धि करे। जल से शुद्धिकरण की हमारी अपनी परम्पराएं हैं। वे विज्ञान के आविष्कारों से भुलाई नहीं जा सकती हैं।



## जीवन शरीर के लिए कुआं, तालाब पूजन

हमारे देश में जब बच्चा जन्म लेता है तो जन्म संस्कारों के अवसर पर जीवन को जल के अधीन किया जाता है कि जीवन में कभी पानी की कमी न होने पाए। कुआं पूजन, तालाब पूजन, बावड़ी पूजन अन्य पानी के साधन जहां से बस्ती अपनी पानी की जरूरतों को पूरा करती है, वे सब पानी के स्रोतों की पूजा-अर्चना करते हैं और जीवन को जल के अधीन करते हैं।

## शरीर की शुद्धि के लिए स्नान

भारतीय भौगोलिक परिवेश में और दैनिक जीवन-शैली में शरीर की शुद्धि के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी के बगैर शारीरिक जीवन-चर्या शुरू ही नहीं होती। उसे हर प्रकार से पानी से अपने को शुद्ध करना है। पानी से शरीर को शुद्ध करने के लिए अनेक प्रकार के विधि-विधान हैं। उनका दैनिक जीवन में विधिवत् अनुकरण होता रहता है। उसके लिए किसी यंत्र और यत्न की आवश्यकता नहीं होती है।



## स्नान मंत्र

परमानन्द बोधाब्धिनिमग्निजमूर्तये ।  
साङ्ग मिदं स्नानं कल्पयाम्यह मीशते ॥

है ईश ! आप अपने परमानन्द स्वरूप ज्ञान समुद्र में स्वयं निमग्न हैं; आपके लिए साङ्गोपाङ्ग स्नानार्थ जल में समर्पित करता हूं।

## अतिथि सत्कार

हमारे देश में अतिथि देवो भवः के रूप में पूज्यनीय माना गया है। अतिथि का सर्वप्रथम सत्कार पानी से ही किया जाता है। अतिथि की थकावट दूर करने के लिए चरण पखारे जाते हैं और पीने के लिए शीतल जल दिया जाता है। उसके बाद ही कुशलक्षेम व आपसी बातचीत शुरू होती है। आतिथ्य के प्रति सेवा भाव यह हमारी अपनी पानी की परम्पराएं हैं और हमारी जीवनचर्या भी। देश के



किसी भी भाग में जायें तो पायेंगे कि अतिथि सत्कार में पानी को विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जाता है। हमारे यहां यह परम्परा गरीब-अमीर के भाव की दूरियों को युगों-युगों से कम करती आ रही है। ब्रेता युग में राम के वनवास के समय केवट ने राम-लक्ष्मण और सीता का स्वागत सत्कार उनके चरण कमल को पानी से धोकर किया था और उस पानी का आचमन भी किया। द्वापर युग में कृष्ण भगवान ने अपने अतिथि सुदामा के चरण पानी से ही धोए। महाभारत में दृष्टांत है कि युधिष्ठिर ने राज्य अभिषेक के समय आए ऋषि-मुनियों के चरण जल से धोए थे। अतिथि के चरणों के स्पर्श से पानी का गुण अमृत के समान हो जाता है। तभी तो हमारी परम्पराओं में ऐसे पानी को चरणामृत कहते हैं। आज भी भगवान की सेवा के जल को चरणामृत मानकर आमजन अमृतपान करता है।

## जल दान

हमारे शास्त्रों में जलदान को महादान एवं पुण्य कार्य माना गया है। जलदान पानी की परम्परा को समाज का हर वर्ग और आदमी अपनी क्षमतानुसार निभाता आ रहा है। इसके लिए जगह-जगह प्याऊ-पौंसले चलाये जाते हैं।



राहगीरों के लिए पानी की सुविधा करना और पशुओं के लिए कुएं, तालाब बनवाना पक्षियों के लिए वृक्षों पर पानी के छींके लटकाना या मकान के एक ओर

चारदीवारी पर किसी पात्र में पानी रखना, पेड़-पौधों को सींचना आदि ऐसे कार्य हैं जो स्वप्रेरित होकर आदमी को करने होते हैं और वह करता है।

हर भारतवासी अपने घर और आस-पास के लोगों के बीच रहकर ही सीखता और जीवन-पर्यन्त तक करता जाता है। यही कार्य उसके घर में जन्मा बच्चा बड़ा होकर आगे करता है। ऐसे पानी परम्परा आगे बढ़ती है।

प्यासे को पानी पिलाना ही मुख्य कार्य नहीं है। यह एक जीवन पद्धति है, जीवन दर्शन है, जलदान में सुष्ठि की रक्षा का संकल्प है जो मनुष्य को प्रकृति के प्रति उसके उत्तरदायित्व का बोध कराता है और प्रकृतिमय बने रहने के लिए भी प्रेरित करता है। ऐसे विशाल दर्शन के धनी देश की पानी की परम्पराओं को तोड़ने का प्रयास एक सुनियोजित संगठित कुप्रयास है। आज हमारे देश में एक लीटर पानी की बोतल दस से लेकर एक सौ पचास रुपए तक में बिकती है, फिर भी चैत्र मास से जेठ मास तक देश में इतनी प्याऊ-पौंसलों की व्यवस्था होती है कि उस पानी का हिसाब पैसों में नहीं लगाया जा सकता है। हमारी पानी की परम्पराएं इतनी सशक्त रही हैं कि पानी के मूल्य का आकलन कभी पैसों में नहीं किया। हमारी बहुत सी परम्पराओं पर बाजार का वर्चस्व हो गया है। विदेशियों ने और हमारे पूंजीपतियों ने उन्हें तोड़कर लाभ का साधन बना दिया है। जलदान जैसी जीवन्त परम्परा को तोड़ने के लिए बाजार में पानी बेचा जा रहा है। आज हमारी इस पानी परम्परा पर चहुंओर से हमला हो रहा है। जब कोई लोककल्याणकारी कार्य को रोजगार का साधन बना दिया जाता है तो परम्पराएं खत्म हो जाती हैं और आदमी की वैचारिक सोच में पैसे की मध्यस्थता बढ़ जाती है। जिससे समाज में लोककल्याण की भावना को भी ठेस पहुंचती है फिर भी हमारे देश ने विदेशियों के शासनकाल में अपनी पानी जैसी अनेक लोककल्याणकारी परम्पराओं को जिन्दा रखा और पूरे जोश के साथ निभाया भी। यही किसी देश की जीवन्तता के उदाहरण होते हैं। आज भी परोक्ष रूप में विदेशियों का हमला हो



रहा है। परम्पराएं दूट रही हैं और जलदान की परम्परा पर भी काले बादल मण्डराने लगे हैं। लेकिन चैत्र से जेठ मास में समाज के हर वर्ग में जलदान करने का जोश आशान्वित करता रहता है कि कितनी ही बाधाएं क्यों न हों, हमारी प्याऊ राहगीरों को पानी पिलाती रहेगी। जयपुर में जलदान के दर्शन सभी जगह देखने को मिलते हैं। अगर प्याऊ के अलावा किसी दुकान में भी पानी पीना पड़े तो दुकानदार सहज रूप से पानी देगा।

## पूजा-पाठ और आस्था

हमारी जीवन पद्धति में प्रकृति से सदैव जुड़े रहने के लिए पूजा-पाठ की परम्परा को विकसित किया गया, जिससे आत्मशुद्धि और शुद्ध विचार से प्रकृतिमय होकर ही पूजा-अर्चना के द्वारा अपनी आस्था बनाये रखना एक बड़ी बात है। हमारे पूर्वजों ने पूजा-पाठ और अपनी प्रकृतिमय आस्था को विदेशी आताताइयों और शासकों से हमेशा बचाए रखा। इस परम्परा पर सबसे ज्यादा हमला हुआ। हमारी आस्था और संकल्पों को तोड़ने का प्रयास किया गया। ऐसी पूजा-पाठ और आस्था बगैर पानी के संभव नहीं है। जिस देश का दर्शन पानी के प्रति जितना सशक्त होता है, उस देश में पूजा-पाठ और आस्था उतनी पवित्र और आस्थावान होती है। वहां के लोग प्रकृति के पूजक और प्रेमी होते हैं। भारतीय जल दर्शन में किसी भी प्रकार की पूजा-पाठ में जल को सर्वप्रथम पूज्य माना है। पूजा-पाठ के लिए मनुष्य का शुद्ध होना जरूरी है। शरीर की शुद्धिकरण के लिए पानी की आवश्यकता होती है। विधि-विधान के अनुसार पानी से शरीर को शुद्ध करना ही होता है, जिससे पूजा-पाठ और आस्था को बल मिलता है। मनुष्य अपने इष्टदेव की आराधना में शान्तचित्त होकर बन्दना करता है तथा पूजा-पाठ में उपयोग जल का आचमन कर अपने व अपने परिजनों के

साथ - साथ  
सारी प्रकृति के  
आयामों की  
रक्षा के लिए  
आहुति अर्पित  
करता है।



## जल

समस्त देव देवेरु सर्वत्रृप्तिकरं परम ।  
अखण्डानन्द संपूर्ण ग्रहण जल मुत्तम् ॥

हे देव देवेश्वर, हे अनन्म, आनन्द से परिपूर्ण, आपके लिए मैं सबको तृप्तिपूर्ण देने वाला यह उत्तम जल समर्पित करता हूं। कृपया इसे स्वीकार करें।

ईश्वरीय रूप कृष्ण कहते हैं कि जो श्रद्धा और भक्ति-भाव से मुझे जल भी अर्पण करता है तो मैं जल को आदर सहित स्वीकार करता हूं, बिना श्रद्धा और भक्ति के मैं बहुमूल्य रत्नों को भी स्वीकार नहीं करता हूं।



### तालाब, कुआं, बावड़ी, मकान, शहर के निर्माण में भूमि-पूजन के लिए जल-घट की स्थापना

जब हमारा शरीर जलमय है और जल के अधीन है तो स्वाभाविक ही हमारे संस्कारों में जल के प्रति आस्था होती ही है। किसी शुभ कार्य की शुरुआत में जल-पूजन अनिवार्य होता है। तालाब, कुआं, बावड़ी, मकान, शहर के निर्माण में भूमि पूजन के लिए जल-घट की स्थापना की जाती है। यह परम्परा हमारे भारतीय जीवन दर्शन के साथ-साथ बनी, पनपी और पल्लवित हुई। आज के आधुनिक युग में भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। आज ग्रामीण अपने छोटे से गांव या ढाणी में तालाब, कुआं, मकान का निर्माण करते हैं तो सबसे पहले भूमि को पवित्र करके मिट्ठी के घड़े में जल भर कर पूजा-अर्चना के साथ जलघट (कलश) स्थापित करते हैं। आधुनिकता के प्रतीक बड़े-बड़े शहर और महानगरों में बड़ी-बड़ी कॉलोनियों के भूमि-पूजन में जल-घट की सर्वप्रथम स्थापना की जाती है। जल-घट की स्थापना इस बात का प्रतीक है कि तालाब, कुआं, बावड़ी में सदैव पानी बना रहे। मकान में रहने वाले परिवार जनों को पानी की परेशानी न हो। शहरवासियों को कभी पानी की समस्याओं का सामना न करना पड़े। इसी कारण भारतीय जीवन शैली में एकरूपता के दर्शन होते हैं।



## संकल्प

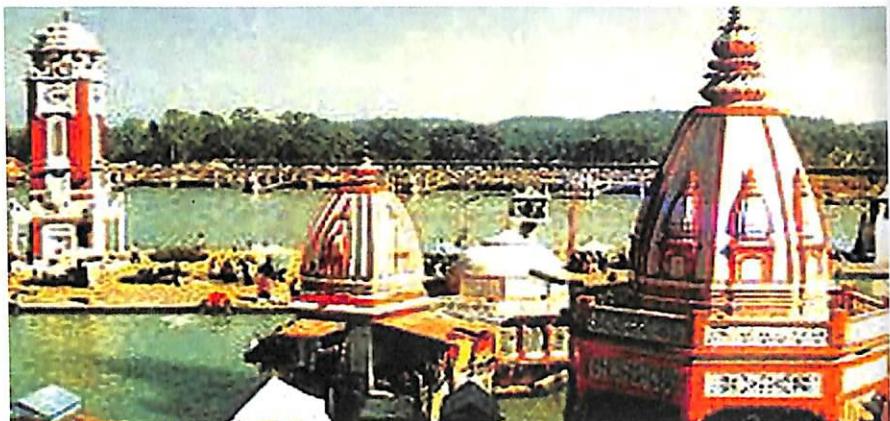
भारतीय जीवन शैली में प्राचीन काल और ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ वर्तमान युग में संकल्प की परम्परा रही है। इसके लिए किसी प्रकार की लिखा-पढ़ी



की जरूरत नहीं होती, न ही कोई दस्तावेज रखने की। यह केवल मनुष्य को किसी कार्य करने या न करने के अपने स्वयं के निर्णय को प्रतिबद्ध करना होता है। वह मनुष्य पानीदार होता है। उसके पानी को संसार नमन करता है। जब तक वह इस भूलोक में रहता है, सबका पूज्यनीय होता है। मृत्यु उपरान्त आदर्श बन जाता है। संकल्पबद्ध मनुष्य लाखों-करोड़ों में सम्मानित और महान् होता है। वह देश और समाज के लिए बन्दनीय होता है। अगर हम प्राचीन और ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन पर एक नजर डालें, तो पायेंगे कि पितामह भीष्म और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दोनों ही महापुरुष हमारे लिए आदर्श हैं। दोनों के संकल्प में प्रतिबद्धता बनाये रखने के लिए पानी का होना जरूरी माना गया है। संकल्पकर्ता अपनी अंजलि में पानी लेकर संकल्पबद्ध होता है और भूमि पर संकल्पित जल को छोड़ता है। इस प्रकार के संकल्पों की परम्परा समाज के हर वर्ग में देखने को मिलती है।

## तीर्थ

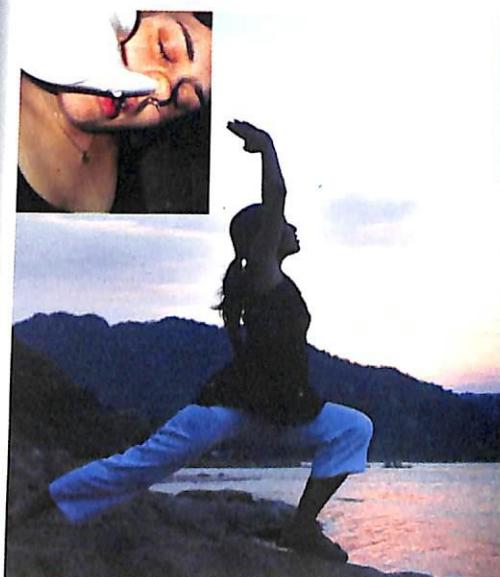
भारतीय ऋषि-मुनियों ने जल को पवित्र माना है। कोई भी तीर्थ जल के बिना संभव नहीं है। भारतीय शास्त्रों और वेद-पुराणों में तीर्थस्थल उसी स्थान को कहते हैं, जहां पानी परिपूर्ण मात्रा में उपलब्ध होता है। तीर्थयात्री उस पवित्र जल में स्नान कर अपने शरीर को पवित्र करते हैं। तीर्थजल का आचमन कर आन्तरिक भावनाओं को शुद्ध करते हैं। तीर्थ जल से प्रकृति की रक्षा के लिए संकल्पबद्ध होते हैं। हमारे शास्त्रों में



जल तीर्थ बस्ती के बाहर कुआं, बावड़ी, तालाब, झरना, नदी के गंगाजल के समान बताया है। ऐसे तीर्थ जल गंगा में स्नान के समान मानकर स्नान करना चाहिए।

### स्वास्थ्य

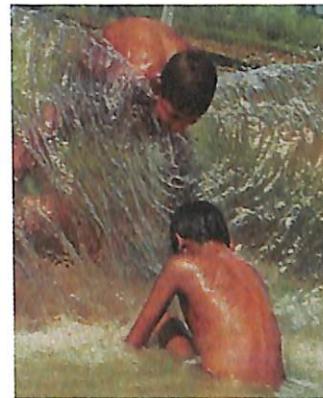
जल एक महाऔषधि है। इसमें सभी औधषितत्व होते हैं। सभी औषधियों पर जल का आधिपत्य है। बिना जल के किसी प्रकार की औषधि तैयार नहीं हो सकती है। जीवन का निर्माण जल से हुआ है। शरीर में भी जल का आधिपत्य है। इसीलिए



शरीर में आयी व्याधियों का उपचार भी जल में निहित है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पानी चाहिए। पानी भोजन के लिए, प्यास तृप्ति के लिए, शारीरिक शुद्धि के लिए, प्रसन्नचित रहने के लिए, साफ-सफाई के लिए, ये सब हमारे जीवन का एक दैनिक अतिआवश्यक कार्य है तथा हमारी पानी परम्पराओं का मुख्य कार्य भी है। ऐसी जीवन-शैली में स्वतः ही व्याधियों से छुटकारा मिल जाता है। जल के अभाव में शरीर ही क्या, सारा जीवन व्याधि बन जाता है। शरीर की आन्तरिक शुद्धि के लिए व व्याधियों के उपचार के लिए जल की आवश्यकता होती है। आधुनिक चिकित्सा की उपचार पद्धति में जल की अधिकता बढ़ी है।

## मनोरंजन

जब जीव जगत् का जनक जल है तो उसके साथ यह शरीर रूपी जल उसमें विलीन होने के लिए उद्दत्त होता है, उसे देख उह्नासित हो जल के साथ अठखेलियां करता है। जीव जल में ही तैरता है, इसलिए मनुष्य भी तालाब, नदी जल में तैर कर तरह-तरह के मनोरंजन करता है, नदियों व झीलों में नौकायन के द्वारा सैर करता, उसे निहारता है। झरनों के किनारे गुनगुनाता है। पानी की तरंगों में अपनी आवाज को समाहित करता है।



## रोजगार के साधन

हमारे देश में नौकायन प्राचीन काल से ही रहा है। पुराणों में इसके प्रमाण हैं। हमारे यहां जाति विशेष आधारित रोजगार का साधन रहा है और



आज भी देश के हर कोने में मल्लाह जाति के लोग नौकायन करते हैं। रोजगार के लिए मछवारे जाति के लोग तो गहरे सागर में जाकर मछली पकड़ते हैं। उससे अपनी आजीविका चलाते हैं। देश में मछली व्यापार से लाखों को रोजगार मिलता है।

## यातायात में सहायक

पानी हमारे जीवन की रक्षा के साथ हमारी दैनिक जरूरतों को भी पूरा करने में सदैव सहायक सिद्ध है। नाव या जहाजों द्वारा हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।



जरूरत के सामान को भी इन्हीं साधनों से पहुंचाते हैं। यह एक रोजगार का बड़ा साधन है।

## कृषि और उद्योग

भारत कृषि प्रधान एवं ग्रामीण सम्पन्न देश है। भारत की खेती और उद्योग मानसून आधारित रहे हैं। अगर देश में मानसून समय से आता है तो खेती अच्छी होती है। पानी की चमक समाज के हर वर्ग में देखने को मिलती है। भारत की खेती और किसान का जीवन पानी के बिना वीरान और सूना है। न उसमें उत्साह होता है और न ही उमंग, उसके जीवन में पराधीनता की झलक दिखाई देती है। अच्छी वर्षा के बिना अच्छी खेती नहीं होती, देश की अधिकांश जनता गांव में रहती है, उसका जीवन खेती पर ही आधारित होता है। वह अपने पेट की आग बुझाने के लिए दो रोटी की जुगाड़ में ही भटकता है। उसकी सबसे पहली जरूरत पेट की आग को बुझाना है। बिना पानी के उसका जीवन कष्टप्रद व्यतीत होता है।

बरसात के दिनों में अच्छी बरसात होती है तो भारतीय किसानों के लिए पूरे साल का संवत् बन जाता है। समाज में और देश में खुशहाली का वातावरण बना रहता है। सरकार और व्यापार भी अच्छा चलता है। देश का प्रगति-चक्र भी ठीक रहता है। समाज का प्रत्येक वर्ग विभिन्न प्रकार के उद्योगों की ओर उन्मुख होता है।



हमारे देश में कृषि भी एक पर्व और उत्सव के रूप में देखी जाती है। देश में जितने भी त्यौहार हैं, उनमें भारत की कृषि समाहित रही है। देश में जितनी अच्छी पैदावार होती है और उसका उचित मूल्य भी मिल जाता है तो गांव से लेकर बड़े-बड़े शहरों के बाजारों में गहमा-गहमी भी बढ़ जाती है। बाजार की गहमा-गहमी इस बात का सबूत है कि समाज में उत्साह है, उमंग है, खुशहाली है और समाज प्रगतिशील है!

## श्मशान और अस्थि विसर्जन

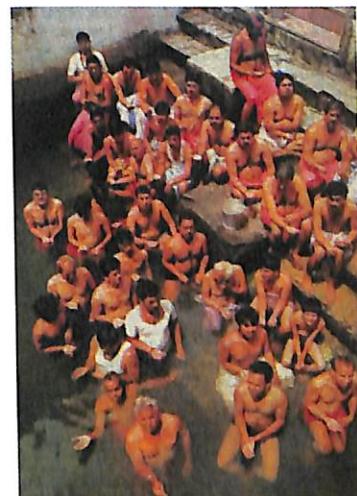
मनुष्य जीवन की रची-बसी जीवन शैली में पानी ऐसा समाहित है कि वह जीवन के आदि से अन्त तक साथ रहता है। मृत्यु के बाद मृत शरीर को श्मशान ले जाया जाता है। श्मशान ऐसे स्थान पर होते हैं जो बस्ती से दूर, जहां



तालाब, नदी हो और उसमें पानी भी हो। उसी जगह मृत शरीर का अन्तिम संस्कार किया जाता है। अंतिम संस्कार के बाद अस्थि विसर्जन के लिए किसी तीर्थ में सरोवर, तालाब, नदी, झारना या समुद्र आदि में विसर्जित किया जाता है। ये सब भारतीय जीवन शैली की परम्पराएं जो पानी के साथ मनुष्य जीवन-चक्र को पूरा करती हैं। पानी जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य के साथ जुड़ा रहता है।

## तर्पण

हमारे समाज में तर्पण संस्कार का विधान भी सामाजिक जीवन शैली का एक कर्तव्य और दायित्व माना जाता है। पूर्वजों और पितरों की शान्ति के लिए तर्पण श्रद्धाभाव का विधान है। तर्पण ऐसी सभी ईश्वरीय शक्तियों को समर्पित होता है जो सारी सृष्टि को गतिमान बनाए हुए हैं। मनुष्य अपने पूर्वजों-पितरों को मृत्युपरान्त तर्पण करता है। वंशजों को तर्पण के बगैर पितर योनि में शान्ति नहीं मिलती है। वे नाना प्रकार की कष्टदायी योनियों में विचरते रहते हैं। उनकी यातना बढ़ती जाती है। इसलिए पितरों के कष्टों



का निवारण विधान तर्पण ही है। वैसे तो तर्पण संस्कार को मनुष्य नित-प्रतिदिन भी करता है और विशेष समय पर पूरे विधि-विधान के अनुसार करता है। तर्पण संस्कार जल के बगैर नहीं होता है। तर्पण के लिए जल अवश्य चाहिए। पितरों को संस्कृत में आपः नाम से संबोधित किया है और जल को भी आपः कहा गया है, जब दोनों का नाम एक ही है तो सामीप्य भी है। तभी हमारी जीवन शैली में पितरों के लिए जल के तर्पण विधान है। ये प्रतिदिन स्वतः होता है। इस प्रकार हमारी जीवन शैली जल को केन्द्र-बिन्दु मानकर गतिमान रहती है।

नन्दकेश्वर बोले - नारद जी ! स्नान के बिना शरीर की निर्मलता और भाव-शुद्धि प्राप्त नहीं होती, अतः मन की विशुद्धि के लिए (सभी व्रतों में) सर्वप्रथम स्नान का विधान है। कुएं आदि से निकाले हुए अथवा बिना निकाले हुए नदी, तालाब आदि के जल से स्नान करना चाहिए।

आज के भौतिकवादी युग में भी हमारी पानी की परम्परा समाचार पत्रों की मुख्य खबर बनती है। देश के प्रसिद्ध समाचार पत्र-पत्रिकाओं में पानी के पास समाज के जीवन्त चित्र इस बात के साक्षी हैं कि भारत में चाहे कितनी भी आधुनिकता या पश्चिमी देशों की आंधियां ही क्यों न आएं, लेकिन हमारी पानी की परम्पराओं को आंच तक न आयेगी। ऐसी सजीव और जीवन्त पानी की परम्पराएं दुनिया के अन्य देशों में देखने को नहीं मिलती हैं।

वर्ष 2000 के प्रयाग कुंभ मेले में देखने में आया कि इलाहाबाद दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाला स्थान है। कुंभ के मुख्य स्नान पर्वों पर इलाहाबाद की आबादी 3 करोड़ रही। जो विदेशियों के लिए अपने-आप में एक रोमांच रहा और आश्चर्यचकित करने वाला भी। वर्ष 2000 के कुंभ मेले ने बरबस विदेशियों को यह सोचने को मजबूर किया कि आखिर भारत के हर क्षेत्र में समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग बिना किसी भेद-भाव के नदियों में स्नान कैसे और क्यों करते हैं ? ऐसा क्या कारण है कि भारत का समाज वर्ष में विशेष पर्वों पर नदियों, जलाशयों, कुएं, बावड़ी में स्नान करके अपने को पवित्र करता है और दान-पुण्य भी आखिर क्यों ?

इलाहाबाद का मेला पूरे एक माह चलता है। मेले के अवसरों पर शहरों में आबादी की व्यवस्थाओं के अलावा जो भी बाहर से आने वाली जनता के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाएं की जाती हैं, वे सब भी विदेशियों के लिए अध्ययन का विषय बना।

## पानी का पारम्परिक ज्ञान

पानी प्राकृतिक है। जब सारा जगत प्रकृतिमय है तो मनुष्य प्रकृति से अछूता नहीं रह सकता। प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धि रूपी शास्त्र से इस प्रकार सुसज्जित किया है कि वह जीवन की विपरीत परिस्थितियों में अपने जीवन को प्रकृति के विभिन्न रूपों में पहचान लेता है और प्राप्त करने का जतन भी करता है। मनुष्य जीवन को जीने के लिए जीवन को केन्द्र में रखकर जीवन जीता आ रहा है। उसी के अनुसार उसने अपनी रहन-सहन की व्यवस्थाएं कीं और आज भी जारी हैं।

भारतीय जीवन शैली प्रकृतिमय है तो उसका जीवन-दर्शन भी प्रकृतिमय ही होगा। क्योंकि प्रकृति अपनी रचना से कभी अलग नहीं होती, यह सत्य है। भारतीय जीवन विभिन्न भौगोलिक परिस्थिति में रहते हुए पानी को खोज लेता है। चाहे हिमागिरि के हिम खण्डों को पिघलाकर या फिर मरुभूमि के बीच धरती की शिराओं से।

पानी की खोज के लिए मनुष्य को प्राकृतिक ज्ञान के आधार पर आसानी होती है। उसने पानी को इन्हीं लोक आधारित ज्ञान से समझा और खोजा है।

आचार्य वराह मिहिर की प्रमुख रचना बृहत् संहिता से पानी के विषय में भारतीय ज्ञान-विज्ञान के दर्शन होते हैं। देश की भिन्न-भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में पानी का ज्ञान बहुत ही सूक्ष्म और तर्कसंगत विश्लेषणात्मक लोक ज्ञान आधारित है। उसमें कहीं किसी यंत्र का उपयोग भी नहीं दिखता कि पानी को पाने के लिए किसी विशेष यंत्र का होना आवश्यक ही हो। बृहत् संहिता के 21, 22, 23 और 53 अध्यायों से सादर संकलित कर लोककल्याण के लिए पानी परम्परा में समाहित किया है।

॥ गर्भलक्षणाध्यायः ॥ २१ ॥

### वर्षा काल का प्रयोजन

अन्न ही प्राणियों का जीवन है तथा वर्षा के बिना अन्न की उत्पत्ति कठिन है। इसलिए देवज्ञों को वर्ष में वर्षा का विचार विशेषतया करना चाहिए। वर्षाकाल के जो लक्षण

गर्ग, पाराशर, वशिष्ठ, कश्यप, वज्र आदि ने कहे हैं, उन सबका विचार करके मैं (वराहमिहिर) यहां इस अध्याय में वर्षाकाल का लक्षण कहता हूं।

## गर्भलक्षण की प्रशंसा

जो देवज्ञ मन होकर सावधान चित्त से गर्भ लक्षण का विचार करता है उस देवज्ञ की वाणी मुनियों के वचनों के समान वर्षा की भविष्यवाणी में मिथ्या नहीं होती है। कलियुग में इस ज्योतिष के अलावा कौन सा शास्त्र विशेष प्रशंसनीय हो सकता है? इसी शास्त्र के ग्रन्थों के आधार पर सब शास्त्रों के लोप काल प्रधान कलियुग में भी व्यक्ति ज्योतिष के अध्ययन से त्रिकालदर्शी हो जाता है।

## मेघगर्भ के दिन

मेघ गर्भ से तात्पर्य आकाश में भावी वर्षा का बीज वपन है। अर्थात् इस गर्भधारण काल में जैसे नक्षत्रों में लक्षण बनता है तदनुसार ही आगामी वर्षाकाल में वर्षा होती है।

## वराहमत से मेघकाल

मार्गशीर्ष शुक्ल में जब प्रतिपदा आगे चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (जल देवतनक्षत्र) में आए तब से शुरू करके मेघगर्भलक्षण का विचार करना चाहिए। माघ ने कहा है कि पूर्वी हवा चले तो इतनी वर्षा होगी जिससे सूखी नदी में भी नाव चलेंगी। ‘जो पुरवा लावै पुरवाई। सूखे नद में नाव चलाई।’

## मेघगर्भ के प्रसव समय का निश्चय

जिस नक्षत्र में चन्द्रमा के रहने पर गर्भधारण के लक्षण मिलें, उस दिन से गिनकर पूरे 195 दिनों बाद अर्थात् साढ़े छः महीने बाद उसी नक्षत्र में चन्द्रमा रहने पर वर्षा होती है अर्थात् वर्षा आरंभ होती है यहां 195 दिनों की गणना सावन मास से (सूर्योदय से सूर्योदय तक 1 दिन) रहनी चाहिए। चान्द्रदिन (तिथि) से गिनती नहीं होगी।

शुक्ल पक्ष में गर्भ हो तो 195 दिन बाद कृष्ण पक्ष में प्रसव होता है। इसी तरह कृष्ण पक्ष के गर्भ का मोक्ष शुक्ल पक्ष में होता है। दिन के गर्भ रात में व रात के धूत गर्भ दिन

में प्रसूत होते हैं। सन्ध्या काल के गर्भ का भी प्रातः सन्ध्या वाला सायं सन्ध्या में व सायं सन्ध्या वाला प्रातः सन्ध्या में प्रसव होता है।

## गर्भ लक्षण विचार

मार्गशीर्ष शुक्ल में मेघगर्भ धारण हो तो कम वर्षा होती है। पौष शुक्ल के गर्भ भी वर्षा वाले होते हैं। पौष कृष्ण के मेघगर्भ श्रावण शुक्ल पक्ष में बरसते हैं।

माघ शुक्ल के गर्भ श्रावण कृष्ण में, माघ कृष्ण के गर्भ भाद्रपद शुक्ल में, फाल्गुन शुक्ल के गर्भ भाद्रपद कृष्ण में, फाल्गुन कृष्ण के गर्भ आश्विन के शुक्ल पक्ष में बरसते हैं। चैत्र शुक्ल के गर्भ आश्विन कृष्ण में बरसते हैं।

## मेघ व हवा के लक्षण

गर्भधारण के समय जो बादल पूर्व दिशा में उठे, वे प्रसव के समय पश्चिम में रहते हैं। गर्भधारण काल में पश्चिम के बादल हों तो पूर्व में बरसते हैं।

इत्यादि प्रकार से गर्भधारण के समय पक्ष दिशा आदि को प्रसव समय विपरीत समझना चाहिए।

यही व्यवस्था गर्भधारण करते समय वायु की भी है। गर्भधारण के समय पूर्व की वायु वर्षा प्रसव काल में पश्चिम में, उत्तर की दक्षिण में, दक्षिण की उत्तर में, पश्चिम की पूर्व में रहेगी।

पाराशर जी ने स्पष्ट कहा है

**अथ माधेन श्रावणं फाल्गुनेन भाद्रपदं चैत्रेणाश्वपुजं  
वैशाखेन तु कार्तिकं शुक्लेन कृष्णं कृष्णेन शुक्लं दिवसेन  
रात्रिं रात्र्यो दिवसं गर्भाः प्रवर्षन्ति ।**

मेघ गर्भधारण के समय मध्यम व कोमल गति की हवा, शरीर को प्रसन्नता देने वाली हवा, उत्तरी, ईशान, या पूर्वी हवा चलती है। आसमान साफ रहता है। सूर्य व

चन्द्रमा में चमक अधिक होती है और चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर गोलाकार बादलों का वलय परिवेश बनता है।

गर्भधारण के समय बादल विशाल व घने होते हैं। सूर्य के समान नुकीले या खुरपे, उस्तरे या फावड़े के समान बादलों का आकार बनता है। उनका रंग कौए के अण्डे के समान अधिक काला होता है। लेकिन चन्द्रमा के तारे खूब चमकते हैं। सन्ध्या कालों में इन्द्रधनुष दिखता है। मधुर बादल गर्जना होती है। बिजली कड़कती है तथा प्रतिसूर्य भी दिखता है। पक्षी व जंगली पशु प्रायः उत्तर ईशान दिशा की ओर मुँह करके खड़े होते हैं या भागते हैं, लेकिन सूर्य मण्डल की ओर नहीं देखते हैं। पशु-पक्षियों की आवाज मधुर होती है।

ग्रहों के बिम्ब बड़े आकार वाले, नक्षत्रों के उत्तर मार्ग से गमन करने वाले होते हैं। ग्रहों की किरणें कोमल उत्पात रहित होती हैं। पेड़-पौधों में अंकुरण होता है। मनुष्य व पशु प्रसन्नता अनुभव करते हैं। इस प्रकार के लक्षणों को मार्गशीर्ष शुक्ल से वैशाख के अन्त तक देखना चाहिए। ये सभी लक्षण गर्भ की पुष्टि को संकेतित करते हैं। इनके अतिरिक्त मौसम के अनुसार कोई अन्य सम्भव लक्षण दिखे तो उनसे भी गर्भ वृद्धि या गर्भ हानि का विचार करना चाहिए।

### मासानुसार शुभ गर्भलक्षण

मार्गशीर्ष व पौष मास में सन्ध्या काल में आकाश अधिक लाल हो, बादल घिरे हुए हों। मार्गशीर्ष में अधिक ठंड न पड़े, पौष में पाला या बर्फ कम गिरे तो आगामी वर्षा के लिए शुभ लक्षण है।

माघ में तेज हवाएं, सूर्य व चन्द्रमा की रोशनी गर्द, कोहरे या हिम से दबी रहे। चन्द्रमा धुंधला हो, सूर्योदयास्त के समय सूर्य के निकट बादल रहें तो ये भी भावी वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा की सूचना देते हैं।

फाल्गुन में रुखी हवाएं चलें। तेज हवा बहे। बादल छाने लगें। सूर्य व चन्द्रमा ढके से रहें। सूर्य ताबें के रंग जैसा या पीला सा दिखे तो शुभ है।

चैत्र मास में खूब बादल छाएं तथा बूंदा-बांदी भी हो। वैशाख मास में बादल, बिजली गरजे तथा बूंदें भी गिरें तो उत्तम वर्षा आगे वर्षा ऋतु में होती है।

इस तरह इन लक्षणों की परीक्षा मार्गशीर्ष शुक्ल से शुरू करके लगातार वैशाख तक करते चलें। इन्हीं बातों के आधार पर बाद में शक्ति लक्षण परीक्षा के नियम प्रचलित हुए हैं जो निराधार नहीं हैं।

**तपै मृगसिरा जोय । पूरन बरखा होय ॥ (घाघ)  
‘मार्गशीर्ष में सर्दी कम हो तो उत्तम वर्षा होगी ।**

माघ अंधेरी सप्तमी मेह बिरजदमकन्त ।  
मास चारि बरसे सही मत सौचै तू कन्त ॥ (घाघ)  
माघ कृष्ण में बिजली, बादल, हवाएं चलें तो खूब वर्षा होगी ।

### गर्भकालीन बादलों की पहचान

गर्भकाल में मोती व चांदी के समान चमकीले बादल हों अथवा ढाक के पत्ते के समान काले हों, पानी के जन्तुओं का आकार सा बादलों से हुआ दिखे। ऐसे बादल वर्षाकाल में अच्छी वर्षा करते हैं।

गर्भकाल में बादल तो दिखें, लेकिन सूर्य की चमकीली धूप हो, मामूली हवा चले तो प्रसव काल (वर्षाकाल) में बहुत तीव्र वर्षा करते हैं, अर्थात् अतिवृष्टि का पूर्व लक्षण होता है।

### गर्भघात के लक्षण

गर्भ लक्षण धारण के बाद यदि उल्कापात हो, बिजली गिरे, धूल भरी हवाएं चलें, दिशाएं प्रज्ज्वलित हों अर्थात् अधिक लाल बादलों की लपटों सी दिखें, भूकम्प आए, गन्धर्व नगर दिखे, तामसकीलकादि सूर्योत्पात हों, धूमकेतु दिखे, ग्रह युद्ध हो या निर्धाति (तेज स्वर के साथ हवा बवंडर) चलें तो गर्भ की हानि या नाश होता है। अर्थात् वर्षाकाल में पूर्वोक्त लक्षणों के अनुसार वर्षा नहीं होती है। सामान्यतः

पीछे जो लक्षण गर्भवृद्धि के लिये शुभ कहे हैं उनके विपरीत सारे लक्षण भी गर्भनाश के लिए होते हैं।

## गर्भ नक्षत्र से अधिक वर्षा

पूर्वी भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, पूर्वाषाढ़, रोहिणी इन पांच नक्षत्रों में गर्भ लक्षण दिखें अथवा गर्भ पुष्टि के लक्षण दिखें तो वर्षाकाल में खूब वर्षा होती है।

शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति, मघा, श्लेषा इन पांच नक्षत्रों में लक्षण दिखें तो बहुत दिनों तक वर्षा होती है। यदि इन नक्षत्रों के गर्भ लक्षणों के बाद दिव्य अन्तरिक्ष या भूतलीय उत्पाद हो तो गर्भ नष्ट होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। ग्रह नक्षत्रीय उत्पात दिव्य भूमि पर होने वाले जड़ चेतन से सम्बद्ध उत्पात भीम या भूतलीय और दिग्दाह उल्कापात अधिक हवा आदि अन्तरिक्ष उत्पात होते हैं।

## वर्षा समय का निश्चय

इन पूर्वोक्त शतभिषादि पांच नक्षत्रों में से किसी एक में यदि मार्गशीर्ष मास में गर्भ लक्षण हो तो 195 दिन व्यतीत हो जाने के बाद 8 दिनों तक वर्षा होती है। पौष में इन नक्षत्रों में मेघगर्भ हो तो 24 दिनों तक, चैत्र में गर्भ हो तो 20 दिनों तक, वैशाख में गर्भ हो तो 3 दिनों तक वर्षा होती है।

यह वर्षा की अवधि गर्भधारण से 195 दिन बीत जाने पर ही समझानी चाहिए।

## वर्षा के जल की मात्रा

पाराशर द्वारा बताया गया मान इस प्रकार है :

मेघ गर्भ धारण के समय हवा चलना, पानी बरसना, बिजली कड़कना, बादलों की गड़गड़ाहट और बादल छाए रहना, ये 5 लक्षण गर्भ धारण के समय विचारणीय हैं। एक योजन का मान सामान्यतः 5 किलोमीटर समझ सकते हैं।

1. आठ अंगुल ऊंचा, समतल पैंदी वाला, चौकोर, 20 अंगुल लम्बा-चौड़ा बर्तन खुले में रख दें। यदि वह वर्षा के जल से भर जाए तो 'आढ़क' वर्षा की माप समझें।

2. इससे चार गुनी वर्षा समझी जायेगी।

## गर्भ नक्षत्र में ग्रह स्थिति

जिस नक्षत्र में मेघ गर्भ धारण हो उस नक्षत्र में पापी ग्रह स्थित हो तो ओले वज्रपात (बिजली गिरना) व मछलियां भी वर्षा के पानी में शामिल होती हैं। यह बात गर्भ मोक्ष के समय (वर्षाकाल 195 दिनों के बाद) विचार करनी होगी। यदि उस गर्भ नक्षत्र में सूर्य या चन्द्रमा स्थित हो तथा उन्हें बुध, गुरु, शुक्र में से कोई एक देखता हो या योग करें तो मेघ गर्भ के मोक्ष के समय बहुत वर्षा होती है।

## गर्भ लक्षण के समय विचारणीय

यदि गर्भ लक्षण जिस दिन दिखें, उस दिन बिना किसी कारण के बहुत अधिक वर्षा हो तो गर्भ का नाश हो जाता है। द्रोण तुल्य वर्षा का अष्टमांश अर्थात् आधे आढक के समान वर्षा हो जाए तो गर्भ नाश समझना चाहिए।

## गर्भ पुष्टि की पहचान

गर्भधारण के समय जो गर्भ पुष्ट लक्षण से युक्त हो और 195 दिनों के बाद गर्भ प्रसव काल में ग्रहोपघातादि से पीड़ित न हो तो समयानुसार वर्षा देता है। लेकिन ग्रहोपघातादि से समय से पूर्व या पश्चात् भी वर्षा का कारक हो सकता है। गर्भस्नाव के बाद पुनः गर्भधारण के समय ओले सहित वर्षा होती है।

## गर्भ पुष्टि के लक्षण (पंच निमित)

गर्भधारण के समय हवा चलना, मामूली पानी गिरना, बिजली कड़कना, बादलों की गड़गड़ाहट व बादलों का खूब छा जाना - ये 5 निमित गर्भ पुष्टि के पहचान हेतु बताए गए हैं। जो गर्भ इन पांचों लक्षणों से युक्त हों तो आगे वर्षा काल में बहुत वर्षा देता है। यदि गर्भ लक्षण के समय अधिक वर्षा हो तो प्रसव के समय केवल पाला पड़ता है, वर्षा नहीं होती है।

## ॥ गर्भधारणाध्यायः ॥ २२

### **वायु धारण के दिन**

ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष की अष्टमी, नवमी, दशमी व एकादशी ये 4 दिन वायु धारण दिवस कहलाते हैं। इन दिनों प्रायः प्रसव नहीं होता है अपितु हवाएं चलती हैं। इन दिनों में कोमल शरीर को सुख देने वाली शीतल उत्तर ईशान या पूर्व की हवा चले तथा आसमान में चिकने बादल छाए रहें तो वर्षा का निश्चय किया जाता है। इसके विपरीत तेज हवा व रुखे बादल होना अशुभ होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल में जब भी स्वाति नक्षत्र पड़े, वहां से गिनकर स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा इन चार नक्षत्रों की स्थिति देखें। यदि ज्येष्ठ शुक्ल में इन चार नक्षत्रों में वर्षा हो जाए तो आगे श्रावण, भाद्रपद अश्विन व कार्तिक में वर्षा नहीं होती है।

- काश्यप

स्वाति में वर्षा हो तो आगे श्रावण में, विशाखा में वर्षा हो तो आगे भाद्रपद में, अनुराधा में वर्षा हो तो आगे आश्विन में व ज्येष्ठ नक्षत्र भीग जाए तो आगे कार्तिक में वर्षा की संभावना शून्य हो जाती है।

जैसे पहले गर्भ लक्षण कहे हैं, उसी तरह ये वायु धारण के लक्षण कहे जा रहे हैं। सब बातों का समन्वय बिठाकर अन्तिम निष्कर्ष निकाले जाते हैं। यदि ज्येष्ठ शुक्ल में इन नक्षत्रों में वर्षा न हो तो आगे सुन्दर वर्षा व उत्तम फसलें होती हैं।

**जेठ मास को तपै निरासा । तो जानो बरखा की आसा ॥  
(घाघ)**

सामान्यतः ज्येष्ठ मास में खूब गर्मी, अच्छी वर्षा का लक्षण माना जाता है।

**जेठ उजारे पाख में आर्द्धादिक दस रिच्छ ।  
सजल होय निर्जल कह्यौ निर्जल सजल प्रतच्छ ॥  
(घाघ)**

ज्येष्ठ शुक्ल में आर्द्रा से लेकर 10 नक्षत्रों में (स्वाति तक) यदि धरती भीग जाए तो आगे आषाढ़ सावन में बिल्कुल वर्षा नहीं होगी। ऐसी माघ की कहावत है जो उक्त वराहोक्त नियम से मेल खाती है।

**जेठ उजारि तीज दिना आर्द्रा रिख बरसंत ।  
जोसी भाखै भड्डरि दुभिछ अवसि परन्त ॥ (भड्डरी)**

अर्थात् ज्येष्ठ में वर्षा न होना आगे वर्षा की सन्तोषजनक स्थिति बताना है।

### धारण दिवसों का विशेष लक्षण

**यदि ताः स्युरेकरूपाः शुभास्ततः सान्तरास्तु न शिवाय ।  
तस्करभयदाशचोक्ताः श्लोकाश्चाप्यत्र वासिष्ठः ॥**

**एकरूपाः शुभाज्ञेया अशुभा सान्तराः मताः ।  
अनायैस्तस्करैर्घरोरैः पीडा चैव सरीसृपैः ॥ (काश्यप)**

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी आहद चारों धारणा दिवस एक जैसे ही मौसम वाले हों तो कल्याण कारक होते हैं। यदि इनमें अलग तरह की आकाशीय स्थिति (सूखा, वर्षा, धूप, छांह आदि) रहे तो दुर्भिक्ष पड़ता है तथा चोरी बढ़ती है। लोग बेर्इमानी पर उतारू हो जाते हैं।

### शुभ धारणा दिवसों की पहचान

इस विषय में वशिष्ठ मुनि के श्लोकों को ही यथावत् आगे रखा जा रहा है।

**सविद्युतः सपृष्टतः सपांशूत्करमारुताः ।  
सार्कचन्द्रपरिच्छन्न धारणाः शुभधारणाः ॥**

**यदा तु विद्युतः श्रेष्ठाः शुभाशाः प्रत्युपस्थिताः ।  
तदापि सर्वसस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥**

सपांशुवर्षा सापश्च शुभा बालक्रिया अपि ।  
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीडा पांशुजलादिषु ॥

रविचन्द्रपरीवेषाः स्निग्धा नात्यन्तदूषिताः ।  
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्वसस्यार्थसाधिका ॥

मेघा स्निग्धाः संहताश्च प्रदक्षिणगतिक्रियाः ।  
तदा स्यान्महती वृष्टिः सर्वसस्याभिवृद्धये ॥

उक्त धारणा दिनों में बिजली कड़कना, पानी की बूँदों सहित धूलयुक्त आंधीनुमा हवा चलना, सूर्य व चन्द्रमा का बादलों से ढका होना, शुभ लक्षण है।

यदि पूर्व-उत्तर व ईशान में बिजली कड़के तो सब प्रकार के धान्यों की खूब बढ़ोत्तरी होती है। अर्थात् फसल अच्छी होती है।

धूल भरी हवाएं व उसमें पानी की बूँदें मिली रहें तो भी वर्षा आगे अच्छी होती है। बच्चे जल या धूल में इन दिनों में खेलें, पक्षियों की मधुर आवाज सुनाई दे। सूर्य-चन्द्रमा के चारों ओर सुन्दर परिवेश हो तो भी सब फसलों की वृद्धि करने वाली वर्षा होती है।

इन दिनों में बादल काले हों तथा घने हों और प्रदक्षिण गति से चल रहे हों अर्थात् पूर्व के हों तो दक्षिण की ओर बढ़ते दिखें या दक्षिण में हों तो पश्चिम में, उत्तर में हों तो पूर्व की ओर बढ़ते चलें तो बहुत उत्तम वर्षा होती है।

ये 5 श्लोक वशिष्ठ मुनि के हैं, ऐसा स्वयं वराहमिहिर ने तीसरे श्लोक में कहा है। सामान्यतः ज्येष्ठ शुक्ल में मामूली वर्षा भी बड़ी हानि कर देती है। अतः उक्त धारणा लक्षणों में जहां बूँद मिश्रित हवा कही है, वहां जमीन गीली न होना ही समझना चाहिए। हवा के साथ एकाध बूँदों से तात्पर्य है, पहले से धारित गर्भ का धारण किये रहने व परिपक्व होने की पहचान का विवेचन होने से इस अध्याय का नाम गर्भ धारणाध्याय कहा गया है।

## ॥ प्रवर्षणाध्यायः ॥ २३

### प्रथम वर्षा का लक्षण

ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा बीतने पर पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) हो उस दिन से प्रतिदिन प्रथम वर्षण का निरीक्षण करना चाहिए। पूर्वाषाढ़ादि जिन नक्षत्रों में वर्षा हो, उस नक्षत्र के अनुसार वर्षा के विषय में शुभाशुभ का विचार करें तथा बरसने वाले पानी का प्रमाण (नाप-तोल) भी जानें। अर्थात् आषाढ़ कृष्ण में पूर्वाषाढ़ से कर सब नक्षत्रों में वर्षा हो तो शुभ है तथा वर्षा न हो तो शुभ नहीं है।

### वर्षा नापने की विधि

समतल व गोलाकार या वर्गाकार, एक हाथ लम्बाई-चौड़ाई व गहराई वाला अर्थात् 18 घन इंच का समतल बर्तन, वर्षा के दौरान खुले में रख दें। यह भर जाए तो 50 पल जल होता है। 50 पल जल को एक आढ़क वर्षा समझना चाहिए। चार आढ़क का एक द्रोण होता है। इस तरह वर्षा जल को नापें। यह नाप तोल वर्षा काल (मेघ गर्भ प्रसव काल) में विचार करनी है। प्रथम वर्षा के समय नहीं।

### प्रथम वर्षा नक्षत्र का निश्चय

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र से शुरू करके प्रतिदिन आषाढ़ कृष्ण में वर्षा देखना प्रारंभ करें। जिस नक्षत्र में इतनी वर्षा हो कि पृथ्वी की धूल दब जाये अथवा घास की नोंकों पर पानी की बूँदें झिलमिलाने लगें, उसे नक्षत्र समझें। गर्भधारण के बाद प्रवर्षण अर्थात् प्रथम वर्षण का विचार आवश्यक है। गर्भ लक्षण दिख चुके हों, धारणा विचार भी अनुकूल हो, लेकिन इन प्रवर्षण नक्षत्रों में धरती न भीगे तो आगे वर्षा काल (सावन-भादो) में वर्षा प्रायः नहीं होती है।

अतः मार्गशीर्ष शुक्ल से गर्भ लक्षण परीक्षा ज्येष्ठ शुक्ल में धारणा परीक्षा व आषाढ़ के सारे नक्षत्रों में (पू.षा. से गिनकर) प्रवर्षण, देखना, वर्षा की मात्रा व भविष्यवाणी के अनिवार्य अंग हैं।

## **प्रवर्षण में मतान्तर**

**प्रवर्षणे यथा देशं वर्षणं यदि दृश्यते ।  
वर्षाकालं समासाद्य वासवो बहु वर्षति ॥ (कश्यप)**

कश्यप मुनि का मत है कि प्रवर्षण के दिनों में यदि कहीं भी वर्षा हो तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है।

**प्रवर्षणे यथा देशं वर्षणं यदि दृश्यते ।  
वर्षाकालं समासाद्य वासवो बहु वर्षति ॥ (देवल)**

देवल प्रभृति का मत है कि प्रवर्षण के दिनों में कम से कम 10 योजन (लगभग क्षेत्रफल 50 किलोमीटर) के क्षेत्र में वर्षा दिखनी चाहिए, इससे कम क्षेत्र में नहीं।

**आषाढादिषु वृष्टेषु योजन द्वादशात्मके ।  
प्रवृष्टे शोभनं वर्ष वर्षाकाले विनिर्दिशेत् ॥ (गर्ग)**

गर्ग, पाराशर व वशिष्ठ का मत है कि कम से कम 12 योजन के क्षेत्र में प्रवर्षण होना चाहिए तभी वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है।

## **वर्षाकाल का नक्षत्र**

प्रवर्षण काल में जिस पूर्वाषाढादि नक्षत्र में प्रथम वर्षा हो, उसी नक्षत्र में सावन-भादो में प्रायः वर्षा होती है। यदि पूर्वाषाढादि किसी भी नक्षत्र में प्रवर्षण न हो तो आगे प्रसव समय में अनावृष्टि का खतरा बढ़ जाता है।

**तपा जेठ में जो चुर्डि जाय ।  
सभी नखत हल्के परि जाएं ॥ (घाघ)**

यह प्रवर्षण कभी भी ज्येष्ठ मास में नहीं होना चाहिए। संहिता के इन नियमों का किसानों में खूब प्रसार है। माघ ने कहा है कि यदि जेठ चू जाए अर्थात् धारणा दिवस गीले हो जाएं तो वर्षा प्रायः नष्ट हो जाती है।

## जेठ अन्त तिथि रात में रहै मेघ जो छाय। कहै घाघ तेहि साल में जल दे भूमि बहाय ॥ (घाघ)

कहावत है कि जेठ पूर्णिमा की रात में ही अर्थात् 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' में ही बादल घिर जाएं (और मामूली वर्षा हो) तो आगे वर्षा काल में खूब वर्षा होगी। यह बात वराह संहिता के इसी नियम पर आधारित है।

### नक्षत्रानुसार वर्षा का प्रमाण

हस्त, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, धनिष्ठा, इनमें कोई नक्षत्र प्रवर्षणकाल में वर्षायुक्त हो तो वर्षाकाल में आगे 16 द्रोण वर्षा होती है। शतभिषा, ज्येष्ठा, स्वाति नक्षत्रों में प्रवर्षण हो तो 4 द्रोण वर्षा होती है। कृतिका के प्रवर्षण से 10 द्रोण वर्षा होती है।

श्रवण, मध्या, अनुराधा, भरणी, मूल नक्षत्रों के प्रवर्षण से 14 द्रोण वर्षा पूर्वाषाढ़ फाल्गुनी के प्रवर्षण से 25 द्रोण वर्षा। पुनर्वसु से 20 द्रोण वर्षा। विशाखा उत्तराषाढ़ में भी 20 द्रोण वर्षा। उत्तरा भाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, रोहिणी में 25 द्रोण वर्षा। अश्लेषा में 13 द्रोण। पूर्वा भाद्रपद, पुष्य में 15 द्रोण। अश्विनी में 12 द्रोण। आद्र्ग में 18 द्रोण वर्षा होती है।

यदि प्रवर्षण नक्षत्र के समय नक्षत्र उपद्रव मुक्त हो अर्थात् सूर्य से युक्त न हो तथा केतु से पीड़ित न हो, पाप ग्रह व इस नक्षत्र की युक्ति न हो रही हो तो कहीं गई मात्रा में ही वर्षा होती है। यदि शुभ ग्रह से युक्त वह नक्षत्र हो तो कल्याणकारक वृष्टि होती है। प्रवर्षण नक्षत्र में सूर्य या केतु (धूमकेतु) हो, मंगल के द्वारा उस नक्षत्र से भेद युति हो रही हो अथवा तीनों प्रकार के उत्पातों में से कोई उत्पात हो तो वृष्टि नहीं होती और अकल्याण भी होता है। इसके विपरीत निरुपद्रव व शुभ युक्त नक्षत्र हो तो उत्तम वर्षा व मंगल होता है।

उक्त मान आजकल की नाप से बहुत अधिक है। संभवतः सारे वर्षा मास की वर्षा को जोड़कर उक्त नाप बताई गई है। आजकल से.मी. में वर्षा नापी जाती है। 45

से.मी. वर्षा होने पर 1 आढक वर्षा होती है। अतः 180 से.मी. वर्षा होने पर द्रोण वर्षा मानी जाएगी। जब 20-25 द्रोण वर्षा हो तो यह एक दिन की वर्षा नहीं हो सकती है। अतः सारे वर्षा मासों की वर्षा का योग ही होना चाहिए।

## ॥ दकार्गलाध्यायः ॥ ५३

### दकार्गल का प्रयोजन

गांव या बस्ती के अग्नि कोण में कुआं बनाया जाए तो बस्ती में सदा कोई भय बना रहता है। अग्नि द्वारा विनाशलीला होती है। नैऋत्य कोण में कुआं, बस्ती के शिशुओं के लिए अशुभ होता है। वायव्य कोण में कुआं बनवाया जाए, तो शुभ होता है।

### सारस्वत मत : उपसंहार

सारस्वत मुनि ने जो दकार्गल के नियम लिखे थे, उन सबका निरीक्षण करके आर्य छन्दों का सारस्वत दकार्गल विचार है।

### मनुमत से दकार्गल

जहां पर स्वाभाविक रूप से उगे हुए वृक्ष, लताएं, पौधे, स्निग्ध पल्लवों वाले छिद्र रहित पत्तों वाले हों तो उनके नीचे तीन पुरुष (22'.6'') पर शिरा होती है। अथवा भूमि कमल, गुलाब आदि गोखरू, खसखस, कुलगुण्डू आदि घास-फूस व जड़ियां हों। अथवा खजूर, जामुन, बैंत आदि हों या दूध वाले वृक्ष हों अथवा दूध वाली लताएं या पौधे हों। अथवा खुम्ब उगती हो, हस्तिकर्ण, नागकेसर, कमल, कदम्ब, करंज, सिन्दुवार, बहेड़ा, मदयन्ती आदि वृक्ष या पौधे हों तो वहां तीन पुरुष नीचे जल होता है। जहां पहाड़ पर पहाड़ चढ़ा हुआ दिखे तो वहां भी तीन पुरुष नीचे जल होता है।

जिस भूमि पर मूँज, कांस, कुशाएं हों, नीली मिट्टी, रेत कणों से मिली हो तो उस भूमि के नीचे स्वादिष्ट मीठा जल बहुत मात्रा में होता है। जहां काली व लाल मिट्टी हो तो वहां भी मीठा पानी होता है।

तांबे के समान रंगत वाली मिट्टी, रेतकणों से युक्त हो तो कसैला पानी होता है। भूरी पीली मिट्टी हो तो खारा पानी होता है। पाण्डु रंग की मिट्टी हो तो नमकीन पानी व नीली मिट्टी हो तो मीठा पानी होता है।

शाक, अश्वकर्ण, अर्जुन, बेल, सर्ज, श्रीपर्णी, नीम, धव, शीशम के वृक्ष को गौर व धुरन्धर भी कहते हैं। हिन्दी में धावड़ा कहते हैं। इसके पत्ते अमरूद जैसे होते हैं। शाक सागौन को कहते हैं। श्रीपर्ण खुशबूके लिए धूप आदि में डाली जाती है।

जहां पर भूमि सूर्य, अग्नि, राख, ऊंट, गधे के रंग वाली हो तो वह जल रहित होती है। जहां करील के झाड़ पर लाल फूल या अंकुर हों और उनमें से दूध निकले, लाल रंग की जमीन हो तो वहां पत्थर के नीचे पानी होता है।

जहां पर शिला वैदूर्य (प्राचीन मतानुसार पत्रा) या लहसुनिया के रंग वाली या मूँग, बादल के समान रंग वाली हो अथवा पकने वाले गूलर के फल के समान हो। तोड़ने पर जो शिला भीतर से काली निकले या पीली हो तो वहां पास में ही खूब जल होता है।

जहां पर पत्थर कबूतर के समान रंग वाला, शहद या धी की रंगत वाला हो या सोमलता के समान रंगत वाला हो तो वहां पर प्रभूत मात्रा में जल होता है।

जिस शिला पर ताप्र वर्ण के बिन्दु हों अथवा अनेक रंग के छींटे हों; पाण्डुर हल्का पीला रंग हो या राख, ऊंट या गधे की रंगत वाली हो; अथवा भंवरे के समान रंगत हो अथवा अगुष्ठिक वृक्ष के समान हो अर्थात् लाल काला मिश्र वर्ण हो सूर्य या अग्नि के समान रंग की हो तो वहां पानी नहीं होता है।

जहां भूमि स्फटिक पत्थर, चांदनी, मोती, स्वर्ण, नीलम, काजल, हिंगुलक (लाल) सदृश रंग वाली हो अथवा उदीयमान सूर्य की किरणों के समान वर्ण वाली हो या हरताल के समान हो वहां जल होता है।

मनु के अनुसार बताई गई उक्त शिलाएं जिस देश, प्रदेश में हों तो उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि ये शिलाएं यक्ष, नागादि को प्रिय होती हैं। उन प्रदेशों में सदा यथोचित वर्षा होती है।

वास्तुविद्या कथन के पश्चात् अब मैं वराहमिहिर, धर्मसाधन व यशः साधन रूप ‘दकार्गल’ को कहता हूं। दकार्गल के ज्ञान से जल की उपलब्धि होती है। जिस तरह पुरुषों के शरीर में शिराएं होती हैं, उसी तरह पृथ्वी में भी शिराएं होती हैं। उन शिराओं के ऊपर-नीचे स्थित होने का ज्ञान होने से भीतरी ज्ञान हो जाता है। आकाश से बरसने वाला जल यद्यपि स्वाद वरंग में समान होता है, तब भी पृथ्वी के विशेष भूभागों के सम्पर्क में आने से अनेक स्वाद वर्ण को प्राप्त हो जाता है। अतः पृथ्वी के कण के समान जल के वर्ण की भी परीक्षा करनी चाहिए।

उदक शब्द का ही रूप ‘दक’ भी है। अतः ‘दक’ का अर्थ जल है। मेदिनी कोष के अनुसार ‘अर्गल’ का अर्थ कल्लोल भी है। अतः दकार्गल का अर्थ पानी की धारा होता है।

### **पृथ्वी की शिराओं के नाम**

इन्द्र, अग्नि, यम, निक्रियति, वरुण, वायु, चन्द्रमा, शंकर यक पूर्वादि दिशाओं के प्रदक्षिण क्रम से स्वामी हैं। इन्हीं दिव्यालों के नाम पर इनकी दिशाओं में स्थित जलशिरा का भी नाम होता है। पूर्व में ऐन्द्री, अग्निकोण में आग्नेयी, दक्षिण दिशा में याम्सा, नैऋती वारुणी, वायवी चान्द्री शैली शिराएं होती हैं।

सब दिशाओं व विदिशाओं के बीच में नवीं शिरा ‘महाशिरा’ कहलाती है। इन शिराओं के अतिरिक्त भी सैकड़ों प्रकार की अन्य शिराएं होती हैं। पाताल से सीधी ऊपर की ओर आने वाली शिरा उर्ध्वशिरा शुभा होती है। चारों दिशाओं में स्थित शिरा भी शुभा होती है। हवदहशाओं में स्थित शिरा शुभ नहीं होती है।

### **निर्जल स्थान में जल ज्ञान**

निर्जल सूखे प्रदेश में यदि कहीं पर स्वाभाविक रूप से झाड़ उगा हो तो उस बेंत से तीन हाथ पश्चिम में (लगभग 4'.6'') डेढ़ पुरुष नीचे खोदने पर जल मिलता है। ऊपर की ओर हाथ उठाकर पुरुष की लम्बाई को पुरुष माना जाएगा। 120 अंगलु - 1 पुरुष के पैमाने से 180 अंगुल अर्थात् 135'' या 11.6' लगभग खोदने पर जल होगा।

खुदाई के दौरान आधा (45') खोदने पर भूरे रंग का मेढक मिलता है। इसके नीचे पीली मिट्ठी आती है। मिट्ठी की समाप्ति के बाद शिला आती है। शिला (पत्थर) भेदने के बाद जल मिलता है। इस जल शिरा का नाम 'पश्चिमा शिरा' होता है।

## निर्जल में जल का द्वितीय चिह्न

निर्जल प्रदेश में जामुन का पेड़ उगा हो तो उससे उत्तर की ओर तीन हाथ चलकर दो पुरुष नीचे (180' या 15' नीचे) पूर्व शिरा बहती है। आधी खुदाई हो जाने पर लोहे की खुशबू वाली मिट्ठी आती है। इसके नीचे भूरी-पीली मिट्ठी तथा बाद में मेढक निकलता है। उसके बाद पानी मिलता है।

जामुन के पेड़ से पूर्व की ओर पास में ही मिट्ठी की बांबी हो तो जामुन के पेड़ से दक्षिण में तीन हाथ दूर 15 फीट खोदने पर मीठा जल मिलता है। 45' खोदने पर मछली आती है। इसके नीचे कबूतरी रंग का पत्थर निकलता है। इसके पश्चात् नीली-काली मिट्ठी आती है। तब वहां काफी मात्रा में जल होता है।

## गूलर से जल की पहचान

निर्जल स्थान में यदि गूलर का पेड़ स्वाभाविक रूप से उगा हो तो गूलर से तीन हाथ पश्चिम में ढाई पुरुष (225') नीचे श्रेष्ठ जल की शिरा धारा होती है। यहां पर आधा पुरुष (3'.9') खोदने पर सफेद सांप मिलता है। इसके बाद बहुत काला पत्थर व उसके नीचे जल शिरा होती है।

## अर्जुन वृक्ष से जल

निर्जल स्थान में स्वाभाविक रूप से उगा हुआ अर्जुन का पेड़ हो तथा उससे उत्तर दिशा की ओर मिट्ठी की बांबी हो तो अर्जुन वृक्ष से पश्चिम दिशा में तीन हाथ दूर तीन पुरुष जमीन खोदने पर (315' या 25' से अधिक) जल होता है। जमीन खोदते समय आधा पुरुष (45') खोदने पर सफेद बड़ी छिपकलीनुमा गोह मिलती है। 7'.6' खोदने पर धूसर रंग की भूरी-काली मिश्रित मिट्ठी मिलती है। इसके बाद बहुतायत से जल होता है।

## **निर्गुण्डी वृक्ष से जल लक्षण**

निर्गुण्डी वृक्ष (सम्भाल) के पास यदि बांबी हो तो निर्गुण्डी से दक्षिण की ओर तीन हाथ दूर जाकर सवा दो पुरुष नीचे (लगभग 16'-17' फुट) खोदने पर जल रहता है। यह जल मीठा व न सूखने वाला होता है। पौने चार फीट नीचे रोहित मछली, उसके नीचे गोरे रंग की मिट्टी, बाद में सफेद मिट्टी पुनः रेत व पश्चात् जल होता है। निर्गुण्डी या शेफालिका सफेद व नीली दो होती है। आयुर्वेद में इसके गुण बताए गए हैं।

## **बेर से जल का संकेत**

बेर के पेड़ से पूर्व दिशा में यदि बांबी हो तो पेड़ से तीन हाथ पश्चिम में जाकर तीन पुरुष (लगभग 22').6' खोदने पर पानी होता है।

## **ढाक से जल की पहचान**

यदि निर्जल स्थान में ढाक (पलाश) व गेर का पेड़ पास-पास हों, बांबी हो या न हो तो बेर से पश्चिम दिशा में तीन हाथ दूर सवा तीन पुरुष नीचे (26'-27') खोदने पर जल होता है।

बेल या गूलर का पेड़ यदि साथ-साथ उगा हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण में साढ़े तीन पुरुष (22'.6') खोदने पर पानी होता है।

जंगली अंजीर के पास यदि बांबी हो तो उसी बांबी के नीचे पानी की शिरा होती है। सवा तीन पुरुष (लगभग 25') नीचे पश्चिम की ओर शिरा होती है। यहां खोदने पर हल्की पीली मिट्टी, बाद में गाय के दूध के समान रंगत वाला पत्थर होता है। लगभग पौने चार फुट खोदने पर सफेद रंग का चूहा दिखता है।

## **निर्जल स्थान पर**

निर्जल स्थान पर, स्वाभाविक रूप से उगा कम्पिल्क वृक्ष हो तो उससे पूर्व की ओर तीन हाथ छोड़कर सवा तीन पुरुष लगभग 25 फीट खोदने पर पानी की शिरा होती

है। प्रारंभ में काली मिट्ठी मिलती है। लगभग एक हाथ खोदने पर भेड़-बकरी जैसी गन्धवाली मछली निकलती है। इससे नीचे थोड़ी मात्रा में नमकीन पानी होता है।

जलहीन प्रदेश में स्थित शोणाक पेड़ से वायव्य कोण में दो हाथ दूर 'कुमुदा' नामक जल शिरा होती है। वहां पर तीन पुरुष खोदने से जल होता है।

### **बहेड़ा से जल परिज्ञान**

विभीमक वृक्ष से दक्षिण की ओर पास में वल्मीक (बांबी) हो तो बहेड़े से पूर्व में दो हाथ छोड़कर डेढ़ पुरुष (लगभग 11') से अधिक बहेड़े के पेड़ से पश्चिम में वल्मीक हो तो पेड़ से उत्तर की ओर लगभग एक हाथ दूर साढ़े चार पुरुष नीचे (लगभग 30') जल होता है। 7.5 फीट खोदने पर सफेद रंग का जीव मिलता है। इसके बाद केसरी रंग का पत्थर और उसके बाद पश्चिम दिशा की ओर शिरा बहती है। यह पानी तीन वर्षों तक ही रहता है, अर्थात् तत्पश्चात् सूख जाता है।

सप्तपर्ण (छितवन) के पेड़ के चारों ओर या उससे सटी हुई बांबी हो तो सप्तपर्ण से उत्तर की ओर एक हाथ दूरी पर पांच पुरुष नीचे (लगभग 37.5') पानी होता है।

आधा पुरुष (पैने चार फीट) नीचे हरे रंग का मेढक, यहां की जमीन में भी हरिताल जैसे वर्ण का होता है। तब बादलों के समान काला पत्थर होता है। तब उत्तरा शिरा मिलती है। यहां पर बहुत स्वाद जल होता है।

निर्जल प्रदेश में स्वाभाविक रूप से उगे हुए किसी भी पेड़ के नीचे यदि मेंढक हो तो उस पेड़ से उत्तर की ओर एक हाथ हटकर साढ़े चार पुरुष (34') नीचे पानी होता है।

### **करंज वृक्ष से जल ज्ञान**

यदि करंज वृक्ष से दक्षिण की ओर बांबी हो तो दक्षिण की ओर दो हाथ छोड़कर साढ़े तीन पुरुष (26'-27') नीचे जल होता है। यहां लगभग पैने चार फीट खोदने पर

कछुआ मिलता है। प्रारंभ में पूर्वी शिरा प्रकट होती है। इसके बाद उत्तर में स्वाद जल की शिरा होती है। उससे नीचे हरे रंग का पत्थर व उसके बाद भरपूर जल होता है।

### **महुआ से जल विचार**

मधक वृक्ष (महुआ) से उत्तर में यदि सांप बांबी हो तो उस वृक्ष से पश्चिम की ओर पांच हाथ छोड़कर साढ़े सात पुरुष नीचे (52'-53' लगभग) जल होता है।

साढ़े सात फीट नीचे सांप दिखता है। तब धुएं की रंगत वाली मिट्टी, पश्चात् कैथ की दाल की रंगत का पत्थर (गाढ़ा लाल काला मिश्रित रंग) तत्पश्चात् पूर्वी शिरा व उसके नीचे सदा रहने वाला झागदार पानी होता है।

### **तिलक वृक्ष से जल विचार**

तिलक वृक्ष के दक्षिण में यदि बांबी हो, बांबी पर घास व कुशाएं उगी हों तो उस वृक्ष से पश्चिम में पांच हाथ दूरी पर पांच पुरुष नीचे (38') जल होता है। तिलक वृक्ष बांस प्रजाति का वनस्पति है। पुराने जमाने में इसकी कलम बनाकर लिखा करते थे।

### **कदम्ब वृक्ष से जल**

कदम्ब वृक्ष से पश्चिम में बांबी हो तो वृक्ष से दक्षिण की ओर तीन हाथ छोड़कर पौने 6 पुरुष नीचे (लगभग 43') जल रहता है। यहां पर उत्तरी शिरा बहती है। इस जल में लोहे जैसी गन्ध होती है। यहां पर खूब पानी होता है। साढ़े सात फुट खोदने पर सुनहरा मेढ़क दिखता है। मिट्टी पीले रंग की होती है।

### **ताड़ से जल ज्ञान**

वल्मीक युक्त ताड़ वृक्ष हो या नारियल हो या दसी जाति का खजूर आदि वृक्ष हो तो वृक्ष से पश्चिम में 6 हाथ छोड़कर 4 पुरुष नीचे (30') दक्षिणा शिरा बहती है।

### **कपित्थ वृक्ष से जल ज्ञान**

कपित्थ वृक्ष से दक्षिण में बांबी हो तो वृक्ष से उत्तर दिशा में सात हाथ छोड़कर पांच पुरुष नीचे (38') जल होता है। एक पुरुष (7'.6') नीचे चितकबरा सांप, बाद में

काली मिट्टी, फिर पत्थर और उसके बाद सफेद मिट्टी, तब पश्चिम की ओर एक शिरा होती है तथा इसके बाद उत्तरा शिरा होती है।

### अशमन्तक वृक्ष से जल ज्ञान

अशमन्तक (झिंझोड़ा) वृक्ष से उत्तर की ओर बेर का पेड़ हो या बांबी हो तो अशमन्तक से उत्तर में 6 हाथ छोड़कर साढ़े तीन पुरुष नीचे ( $26'$ - $27'$ ) जल होता है। साढ़े सात हाथ नीचे कछुआ, नीचे धूल की रंगत वाला पत्थर बाद में रेतीली मिट्टी तब दक्षिण शिरा व पश्चात् ईशानी शिरा बहती है।

### हरिद्रवृक्ष से जल ज्ञान

हल्दी के पौधे के उत्तर में बार्यी और वल्मीक हो तो पौधे से पूर्व में तीन हाथ छोड़कर पांच पुरुष व एक-तिहाई नीचे अर्थात्  $40'$  नीचे जल होता है। साढ़े सात फीट नीचे काला सर्प तब पीली मिट्टी पश्चात् हरे रंग का पत्थर बाद में काली मिट्टी तब पश्चिम शिरा व दक्षिण में अन्य शिरा होती है।

निर्जल प्रदेश में कहीं पर पानी के पास होने वाले पौधे, जन्तु या अन्य चि दिखें अर्थात् बेंत, तिलक, वीरण, हरी घास आदि हों तो एक पुरुष के भीतर ही जल होता है।

### अन्य वृक्षों से जल की पहचान

तिलक आम्रतक वरुणक भला तक बेल तिन्दुक (तेंदू) अंकामल पिण्डार शिरीष अंजन परुषक वंजुल अति बला ये वृक्ष यदि चिकने पत्तों वाले बांबी से युक्त हों तो इनसे उत्तर में तीन हाथ छोड़कर साढ़े चार पुरुष ( $34$  फीट) नीचे जल होता है।

### भूमि की आवाज व जल

जलहीन प्रदेश में जहां पर पैर पटकने से जमीन की आवाज गहरी व मधुर तथा नादयुक्त हो तो उसी स्थान पर साढ़े तीन पुरुष नीचे ( $26'$ ) जल की उत्तरी शिरा होती है।

## **झुकी टहनी से जल का ज्ञान**

यदि किसी वृक्ष की एक शाखा झुकी हुई हो तथा उसके पत्ते कुछ हो गए हों, उसी टहनी के नीचे तीन पुरुष ( $22'.6'$ ) खोदने पर जल होता है।

## **फल-फूलों के विचार से जल ज्ञान**

जिस पेड़ के फलों या फूलों में विकार अर्थात् अस्वाभाविक परिवर्तन हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ पूर्व में चार पुरुष नीचे ( $30'$ ) जल होता है। वहां पर पीली मिट्टी व पीला पत्थर निकलता है।

## **कटैली से जल परिज्ञान**

यदि कटैली के पौधे पर कांटे न हों तथा सफेद फूल हों तो उसी कटैली के नीचे साढ़े तीन पुरुष ( $26'-27'$ ) खोदने पर जल होता है। छोटी कटैली को कण्टकारि कहते हैं। यह पीले कांटों वाला व बैंगनी फूल वाला पौधा होता है।

## **खजूरी से जल ज्ञान**

खजूर से थोड़े बड़े पत्तों वाली खजूर की ही एक जाति का वृक्ष खजूरी होता है। यदि निर्जल प्रदेश में खजूरी का पेड़ दो चोटियों वाला हो तो उससे पश्चिम में तीन पुरुष ( $22'.6.'$ ) नीचे जल होता है।

## **ढाकव कनेर से जल ज्ञान**

यदि कर्णिकार (कनक चम्पा) के पौधे पर सफेद फूल हों या पलाश (ढाक) के पेड़ पर सफेद फूल हों तो दक्षिण में दो हाथ छोड़कर पुरुष ( $15'$ ) नीचे जल होता है।

## **भूमि की ऊष्मा से जल**

जहां जमीन को छूने से अकारण गर्मी लगे या धुआं सा निकले तो वहां  $15'$  नीचे बहुत मात्रा में पानी होता है। जिस खेत में फसल पैदा होकर नष्ट हो जाती है या जहां पर खेती बहुत मात्रा में होती हो अथवा भूमि पर बहुत पीलापन सा हो तो वहां पर दो पुरुष नीचे  $15'$  बहुत जल वाली महाशिरा होती है।

## **रेगिस्तान में विशेष विचार**

रेगिस्तानी प्रदेश में जलशिरा के विषय में विचार है कि जिस तरह से ऊंट की गर्दन बहुत टेढ़ी व नीची सर्पकार होती है, वैसे ही रेगिस्तान में बहुत नीचे जल शिराएं होती हैं।

## **पीलू वृक्ष से जल विचार**

पीलू वृक्ष से ईशान कोण में यदि सांप या चींटियों की बांबी हो तो वृक्ष से पश्चिम में साढ़े चार हाथ (लगभग 7') दूर पांच पुरुष नीचे (38') जल होता है। यहां पर उत्तर की ओर बहने वाली शिरा होती है। साढ़े सात फुट पर मेढ़क बाद में पीली भूरी मिठ्ठी, बाद में हरी चमकीली मिठ्ठी तत्पश्चात् पत्थर व उसके नीचे जल होता है। पीलू वृक्ष छोटा और बड़ा दो प्रकार के होते हैं। बड़ा पीलू सफेद शाखाओं वाली हरी झाड़ी होती है। अण्डाकार पत्ते हरे-पीले फूल व गोल लाल फल होता है। छोटा पीलू 7-8 फीट ऊंचा, पत्ते की आकृति नोंकदार व फल पीले होते हैं। पीलू वृक्ष से पूर्व में यदि वल्मीक हो तो वृक्ष से दक्षिण में साढ़े चार हाथ छोड़कर 7 पुरुष नीचे (52'-53') जल होता है। यहां साढ़े सात फुट के आस-पास काला-सफेद हाथ का सांप दिखता है। दक्षिण में नमकीन या खारे पानी की बहुत जल वाली शिरा होती है।

## **करीर वृक्ष से जल**

करीर वृक्ष से उत्तर की ओर यदि बांबी हो तो करीर से दक्षिण में साढ़े चार हाथ दूर 10 पुरुष नीचे (75') मीठा पानी होता है। करील को ही संस्कृत में करीर कहते हैं। यह 20' तक का पेड़ होता है।

## **रोहीतक वृक्ष से जल ज्ञान**

रोहित वृक्ष से पश्चिम में बांबी हो तो पेड़ से दक्षिण में तीन हाथ छोड़कर 12 पुरुष नीचे (90') खारे पानी की शिरा पश्चिम की ओर बहती है। रोहित या राहितक की कलियां अनार की तरह होती हैं। जिगर तिळी में वैद्य लोग इसका प्रयोग करते हैं। कोई उसे करंज भी समझते हैं।

## **अर्जुन वृक्ष से जल**

इन्द्र तरु या इन्द्र जौ के पेड़ से पूर्व में वल्मीक हो तो पश्चिम में एक हाथ छोड़कर 14 पुरुष नीचे ( $14.7'.6'$ ) जल की पश्चिमी शिरा होती है।

## **धूरे से जल**

सुवर्ण (पीली धतूरा या सत्यानाशी) वृक्ष से बायीं ओर उत्तर दिशा में वल्मीक हो तो दक्षिण में 2 हाथ छोड़कर 15 पुरुष के लगभग ( $108'$ ) जल होता है। यहां पर खारा पानी मिलता है।

## **बेर से जल ज्ञान**

बेर व लाल करंज का पेड़ साथ-साथ चिपके हुए हों, वहां वल्मीक हो या न हो, उनसे तीन हाथ दूर पश्चिम में 16 पुरुष नीचे ( $16.7.5'$ ) जल होता है। यहां पहले मीठे पानी की दक्षिण शिरा बहती है। दमसरी शिरा उत्तर की ओर बहती है। यहां चावल के समान रंगवाला पत्थर नीचे बिछू निकलता है। बेर व करील साथ-साथ हों तो पश्चिम में तीन हाथ दूर 18 पुरुष नीचे खूब जल वाली ऐशानी शिरा बहती है।

पीलू व बेर का पेड़ साथ हों तो पूर्व में तीन हाथ छोड़कर 20 पुरुष नीचे ( $150'$ ) खारा पानी बहुत मात्रा में होता है।

जहां अर्जुन या करील और बेल साथ हों तो पश्चिम में दो हाथ दूर 25 पुरुष नीचे जल होता है।

## **कुशा से जल ज्ञान**

यदि बांबी के ऊपर दूब या कुशा पीले रंग की हो तो वल्मीक के ठीक नीचे ( $21$  पुरुष नीचे) पानी होता है। कदम्ब के पेड़ के पास वल्मीक के ऊपर दूब हो तो दक्षिण में दो हाथ दूर  $25$  पुरुष नीचे ( $25.7.5'$ ) जल होता है।

तीन बांबियों के बीच में रोहित वृक्ष हो तथा साथ में पेड़ हों तो वहां जल होता है। वृक्ष से 4-5 हाथ दूर (4 हाथ 16 अंगुल) 40 पुरुष नीचे पत्थर व उसके नीचे जल की शिरा होती है।

## **शमी वृक्ष से जल**

जहां अनेक गांठों वाली शमी हो तथा उत्तर में वल्मीक हो तो पश्चिम दिशा में 5 हाथ छोड़कर 50 पुरुष नीचे जल की शिरा बहती है।

## **पांच बांबियों से जल**

एक जगह पर पांच बांबी हो तो उसी बीच वाली वल्मीक में 53 पुरुष नीचे जल की शिरा बहती है।

## **ढाक व शमी से जल**

जहां ढाक व शमी के वृक्ष साथ हों तो शमी से पांच हाथ पश्चिम में 60 पुरुष नीचे जल होता है। पौने चार फीट नीचे सांप, बाद में रेतीली मिट्टी तत्पश्चात् पीली मिट्टी निकलती है।

सफेद रोहित वृक्ष यदि वल्मीक युक्त हो तो वृक्ष से पूर्व में एक हाथ छोड़कर 70 पुरुष नीचे जल होता है।

बहुत कांटेवाली सफेद शमी हो तो दक्षिण में एक हाथ छोड़कर 75 पुरुष नीचे जल होता है। आधे पुरुष (3'.9') नीचे सांप होता है।

## **जल ज्ञान का एक नियम**

रेगिस्तानी प्रदेशों के नियमों का प्रयोग यदि जांगल प्रदेशों में किया जाए तो कम जल मिलता है। सामान्य नियमों से साधारण प्रदेशों में जो गहराई कही है, मरुदेश में उससे दुगुनी गहराई में जल होता है।

अनूप नम या जल प्रदेश, जांगल कम जल वाला प्रदेश व मरु सूखे प्रदेश को कहते हैं, यह सर्वत्र ध्यान रखें।

## **अनूप प्रदेश में जल**

जामुन, निसोत, मौर्वी, शिशुमारी, सारिवा, शिवा (शिवा) श्यामा, वाराही, ज्योतिष्मी व गरुण वेगा ये जड़ियाँ और सूकरिका, माषर्णीति, (जंगली उड़द) व्याघ्रपदा के पास बांबी हो तो बांबी से तीन हाथ उत्तर में तीन पुरुष नीचे (22°.6') नीचे जल होता है।

यह गहराई अनूप (बहु जल) देशों में और जांगल प्रदेशों में पांच पुरुष व मरुदेश में 7 पुरुष नीचे उक्त औषधियों से समझना चाहिए।

## **भूमि के रंग से जल**

जहां पर भूमि एक रंग की हो तथा किसी एक जगह पर अलग सी दिखे। उस भूमि पर धास, पेड़, बांबी, झाड़ कुछ भी न हो तो अलग सी दिखने वाली भूमि के नीचे पांच पुरुष खोदने पर जल होता है।

जहां पर भूमि चिकनी, दबी हुई, रेतीली, ठोकने पर आवाज करती हो, खोखली हो या अनुनाद हो तो साढ़े चार पुरुष नीचे खूब जल होता है।

जहां पर हरे पेड़ हों तो उन वृक्षों से दक्षिण में चार पुरुष नीचे खूब जल होता है। बगीचे में जहां बहुत से पेड़ों के बीच कोई पेड़ अपने स्वाभाविक रूप में न हो तो उस पेड़ से दक्षिण में चार पुरुष नीचे जल होता है।

जंगल व उन प्रदेशों में जहां धरती पैर रखने से धंसती हो, वहां पर पौने चार फीट नीचे ही जल होता है। जहां पर चीटी आदि बिना बिल के ही दिखती हों, वहां भी जल होता है।

सर्वत्र गर्म भूमि के बीच जहां पैर रखने से ठंडक लगे अथवा सर्वत्र ठंडी लगने वाली भूमि के बीच कहीं पर गर्म हो तो वहां साढ़े तीन पुरुष नीचे जल होता है। जहां जमीन पर सूर्य की किरणें पड़ने से इन्द्र धनुषी रंग दिखें या मछली या बांबी दिखे, वहां चार हाथ नीचे जल होता है।

लगातार कई वल्मीक हों और उनमें से एक ऊंचा हो तो उस अपेक्षाकृत ऊंचे वल्मीक के नीचे चार हाथ पर ही जल शिरा होती है। जहां पर बोया बीज न उगे और उगी फसल सूख जाए, वहां चार-चार हाथ नीचे पानी होता है।

## बड़, ढाक, गूलर से जल ज्ञान

बड़, ढाक व गूलर ये तीनों वृक्ष एक साथ हों तो इनके नीचे तीन हाथ खोदने पर उत्तरा शिरा बहती है। इसी तरह बड़ व पीपल साथ हों तो भी तीन हाथ नीचे जल होता है।

## कुएं की दिशा का निश्चय

गांव या बस्ती के अग्नि कोण में कुआं बनाया जाए, तो वहां बस्ती में सदा कोई भय बना रहता है। अग्नि द्वारा विनाशलीला होती है। नैऋत्य कोण में कुआं, उस बस्ती के शिशुओं के लिए अशुभ होता है।

वायव्य कोण (North West) में कुआं हो तो स्थियों के लिए अशुभ है। अतः इन दिशाओं में छोड़कर कुआं बनवाया जाए तो शुभ होता है।

## सारस्वत मतः उपसंहार

सारस्वत मुनि ने जो दकार्गल के नियम लिखे थे, उन सबका निरीक्षण करके आर्या छन्दों में मैंने यहां सारस्वत दकार्गल विचार किया है।

अब आगे अन्य छन्दों में मनु रचित दकार्गल कहता हूं।

## मनुमत से दकार्गल

जहां पर स्वाभाविक रूप से उगे हुए, वृक्ष, लताएं, पौधे स्निध पल्लवों वाले, छिद्र रहित पत्तों वाले हों तो उनके नीचे तीन पुरुष पर ( $22'.6'$ ) शिरा होती हैं।

अथवा भूमि कमल (गुलाब, आदि), गोखरू, खसखस, कुल, गुण्डू आदि घास-फूस व जड़ियां हों।

अथवा खजूर, जामुन, अर्जुन, बेंत आदि हों या दूध वाले वृक्ष हों अथवा दूध वाली लताएं या पौधे हों।

अथवा खुम्ब (मशरूम) उगती हों, हस्तिकर्ण, नाग केसर, कमल, कदम्ब, करंज, सिन्दुवार, बहेड़ा, मदयन्ती आदि वृक्ष या पौधे हों तो वहां तीन पुरुष नीचे जल होता है।

पहाड़ के ऊपर पहाड़ चढ़ा हुआ दिखे तो वहां भी तीन पुरुष नीचे जल होता है।

जिस भूमि पर मूँज, कांस, कुशाएं हों, नीली मिट्ठी रेत कणों से मिली हो तो उस भूमि के नीचे स्वादिष्ट मीठा जल बहुत मात्रा में होता है। जहां काली व लाल मिट्ठी हो तो वहां भी मीठा पानी होता है।

तांबे के समान रंगत वाली मिट्ठी, रेतकणों से युक्त हो तो कसैला पानी होता है। भूरी पीली मिट्ठी हो तो खारा पानी होता है। पाण्डु रंग की मिट्ठी हो तो नमकीन पानी व नीली मिट्ठी हो तो मीठा पानी होता है।

शाक, अश्वकर्ण, अर्जुन, बेल, सर्ज, श्रीपर्णी, नीम, धव, शीशाम के वृक्ष छेदों वाले पत्तों से युक्त हों अथवा लताएं आदि छिद्रित पल्लवों से युक्त हों तो पास में ही जल होता है।

सर्ज राल का पेड़ होता है। इसी से राल प्राप्त होती है। धव वृक्ष को गौर व धुरन्धर भी कहते हैं। हिन्दी में धावड़ा व अंग्रेजी में (Button tree) कहते हैं। इसके पत्ते अमरुद जैसे होते हैं। शाक सागौन को कहते हैं। श्रीपर्ण खुशाबू के लिए धूप आदि में डाली जाती है।

जहां पर भूमि सूर्य, अग्नि, राख, ऊंट, गधे के रंग वाली हो तो वह जलरहित होती है। जहां करील के झाड़ पर लाल फूल या अंकुर हों और उनमें से दूध निकले, लाल रंग की जमीन हो तो वहां पत्थर के नीचे पानी होता है।

जहां पर शिला वैदूर्य (प्राचीन मतानुसार पन्ना) या लहसुनिया के रंग वाली या मँगू, बादल के समान रंग वाली हो अथवा पकने वाले गूलर के फल के समान हो। तोड़ने पर जो शिला भीतर से काली निकले या पीली शिला हो तो वहां पास में ही खूब जल होता है।

जहां पर पत्थर कबूतर के समान रंग वाला, शहद या धी की रंगत वाला हो या सोमलता के समान रंगत वाला हो तो वहां पर प्रभूत मात्रा में जल होता है।

जिस शिला पर ताम्र वर्ण के बिन्दु हों अथवा अनेक रंग के छीटे हों; पाण्डुर (हल्का पीला) रंग हो या राख, ऊंट या गधे की रंगत वाली हो; अथवा भंवरे के समान रंगत हो अथवा अंगुष्ठिक वृक्ष के समान हो अर्थात् लाल काला मिश्र वर्ण हो, सूर्य या अग्नि के समान रंग की हो तो वहां पानी नहीं होता है।

जहां भूमि स्फटिक पत्थर, चांदनी, मोती, सुवर्ण, नीलम, काजल, हिंगुलक (लाल) सदृश, रंग वाली हो। अथवा उदीयमान सूर्य की किरणों के समान वर्ण वाली हो या हरताल के समान हो वहां जल होता है। इस विषय में मनु प्रोक्त कुछ श्लोकों को मैं (वराह) यथावत् उद्धृत कर रहा हूँ।

**मनु के श्लोक :** श्लोक 110 में बताई गई शिलाएं जिस देश-प्रदेश में हों तो उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि ये शिलाएं यक्ष नागादि को प्रिय होती हैं। उन प्रदेशों में सदा यथोचित वर्षा होती है।

यदि किसी पत्थर को काटना या तोड़ना कठिन हो तो यह विधि अपनाएं। ढाक की लकड़ी, तेंदू की लकड़ी जलाकर शिला को तपाकर लाल कर लें। पश्चात् दूध मिले जल की धार डालने से पत्थर टूट जाता है।

मणीवक या मोक्षक वृक्ष की लकड़ी की राख को पानी में मिलाकर काढ़ा बनाएं। उसमें सरकण्डे की राख डालें तथा पकाएं। पूर्वोक्त प्रकार से पत्थर को तपाकर सात बार उक्त पानी डालें। अर्थात् सात बार तपाकर पानी डालें तो शिला टूट जाती है।

कांजी, मट्ठा, शराब, कुलुथ की दाल, बेर फल, इन सब को सात रात तक भिगोए रखें। तब इस द्रव को पूर्ववत् तपाकर शिला पर डाले तो पत्थर टूट जाता है।

नीम की छाल व पत्ते, तिल का नाल, अपामार्ग (बरचिटा), तेन्दूफल, गिलोय (गुद्धूची) इन सबकी एकत्रित भस्म को गोमत्र में मिलाएं। इससे पूर्ववत् शिला को तपाकर 6 बार सींचने से शिला टूट जाती है।

### बावड़ी का विचार

बावड़ी यदि पूर्व-पश्चिम की ओर अधिक लम्बी हो, अर्थात् उत्तर-दक्षिण की भुजाएं लम्बी हों तो लम्बे समय तक जलयुक्त रहती है। उत्तर-दक्षिण की ओर लम्बी हो तो जल्दी सूखने की संभावना रहती है। वायु के प्रहार के कारण, अधिकांश पूर्वी या पश्चिमी हवा चलने से उक्त वाषी की जल राशि प्रायः बिखरती रहती है।

यदि उत्तर-दक्षिण में लम्बाई रखनी हो तो उसके किनारों को ठेस लकड़ी से ऊंचा बनाना चाहिए। अथवा पत्थरों से ही दीवार की आड़ ऊंची रखें। इन किनारों को हाथी, सांड, भैंसा या घोड़े आदि से दबाव डलवाकर मजबूती देते चलें।

बावड़ी के किनारे : ककुभ (अर्जुन), बड़, आम, पिलखन, कदम्ब, बेंत, जामुन, कुरबक, ताड़, अशोक, महुआ, मौलसिरी आदि वृक्षों को किनारों पर लगाना चाहिए।

### पानी का निकासी द्वार

बावड़ी के एक ओर, पत्थरों से चुना हुआ, तली के समतल बनवाकर, लकड़ी के बिना छेदों वाले तख्ते से रोकने या बन्द करने की व्यवस्था से युक्त, मिट्टी से ढका हुआ, पानी का निकासी मार्ग बनवाएं।

कूप में डालने के पदार्थ : अंजन, मोथा, खस, राजकोशातक (तोरई), आंवला, कतक (निर्मली) के रस को कूप में डालें।

इनके डालने से गन्दा हुआ, कड़वा, नमकीन व बेस्वाद पानी भी खुशबूदार होता है। स्वाद शुद्ध, गन्ध उत्तम होकर खारापन भी दूर हो जाता है।

कुआं बनवाने के नक्षत्र : हस्त, मधा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्ठा, तीर्णों उत्तरा, रोहिणी, शतभिषा ये नक्षत्र कुआं खुदवाने की शुरुआत के समय शुभ होते हैं।

वरुणदेव को बलि, उपहार आदि देकर, बड़ या बेंत की कील को यथा स्थान शिरा प्रदेश में गाड़कर धूप गन्धपुष्पादि से पूजा करके खुदाई शुरू करें।

इसके बाद एक श्लोक अधिक भी मिलता है। लेकिन भट्टोत्पल के संस्करण में वह नहीं है। हमने भी उसे नहीं रखा है। उसका अर्थ इस प्रकार है -

‘जेठ मास के बाद होने वाला बादलों का पानी, आकाशीय दकार्गल पहाड़ बलदेवादि के मतानुसार कहकर, अब यहां जमीनी दकार्गल कहा है।’

## तरुण भारत संघ की जल-दृष्टि और विश्वास

### तरुण भारत संघ की जल दृष्टि

जल का संरक्षण एवं संवर्द्धन करते हुए समाज अपनी आवश्यकतानुसार अनुशासित तरीके से जल का उपयोग करे। प्राकृतिक सम्पदा को किसी प्रकार की क्षति पहुंचाए बिना अपना जीवन यापन करने वाला समाज ही निरन्तर समृद्ध व स्वावलम्बी बना रह सकता है। प्राकृतिक संसाधनों के रक्षण-संरक्षण व संवर्द्धन करने का दायित्व भी समाज का ही है। तरुण भारत संघ (तभास) मानता है कि जल के स्वावलम्बन से ग्राम स्वावलम्बन हासिल किया जा सकता है। जल स्वावलंबन से खेती सुधरती है। साझा बनता है। समय व पैसा बचता है। विश्वास जागता है। दरअसल स्वावलंबी तरीके से आया पानी ग्राम स्वावलंबन के रास्ते खोल देता है। समाज के साथ तरुण भारत संघ के बीस साल के कार्यों में यही झलक दिखती है। गांव के साझा प्रयासों से पानी आता है, तो इससे पूरा समाज ही पानीदार हो जाता है। तरुण भारत संघ इसी दृष्टि से समाज के काम में लगा है।

# पानी की परम्परागत शंखनाईों का निर्माण

## आओ ! करके सीखें।

तरुण भारत संघ के सहयोग से समाज ने जल संरक्षण के लिए मेडबन्दी, मिट्टी के जोहड़, एनीकट, खेत, तलाई, खुले टांके, बन्द टांके, छत के वर्षा जल के टांके तथा जल कुर्झियों जैसे विविध ढांचों का निर्माण किया। संक्षेप में इनका विवरण निम्नवत् है:

### जोहड़

अलवर के देहात में जल संरक्षण के लिए एक प्रचलित नाम है - जोहड़। राज्य तथा देश के अन्य भागों में इसे विभिन्न नामों से जानते हैं। सबसे अधिक प्रचलित नाम तालाब है। जोहड़ सदियों से अलवर के समाज को पानी पिलाता आया है। इसलिए यहां के समाज की परम्पराओं में जोहड़ को भुलाया नहीं जा सका। आज का युग चाहे कितना ही आधुनिक क्यों न हो जाए, अलवर के जोहड़ ही स्थानीय प्राकृतिक समृद्धि का मूलाधार बने रहेंगे। बीस साल पहले जब तरुण भारत संघ इस ग्रामीण इलाके में आया था, तब समस्याएं तो बहुत थीं, लेकिन तात्कालिक व सर्वप्रधान समस्या जल की ही थी। गांव पानी, अनाज और चारे के बिना बेचैन था। दरअसल जिस गांव के पास ये तीन चीजें होती हैं, वह गांव सम्पन्न होता है। गांव की



खुशहाली इन्हीं वस्तुओं से आंकी जाती है। गांव का जीवन इन तीन जरूरतों के पूरा होने से चैन से बीतता है। अनाज और चारा, पानी के बगैर संभव नहीं है। यह सत्य है। जिस क्षेत्र में संस्था ने कार्य प्रारंभ किया, वह पूरा क्षेत्र पहाड़ी व ढालू है। ऐसे क्षेत्र में बिना जोहड़ के जल की कल्पना संभव नहीं है। यह सत्य है। यहां पहले-पहल जोहड़ के निर्माण की मांग गांव से ही आई थी। गांव की पहल पर जोहड़ का निर्माण गोपालपुरा में शुरू हुआ था। यह 1985-86 की बात है। उस समय गोपालपुरा में पीने के लिए भी पानी नहीं था। ऐसी स्थिति में जोहड़ का महत्व और भी बढ़ गया था। तभासं ने भी इस कार्य में गहरी रुचि ली। जोहड़ बन गया। पहली बारिश में गोपालपुरा के जोहड़ में पानी क्या आया, पूरे क्षेत्र से जोहड़ की मांग आने लगी। संस्था ने भी इस कार्य की क्षेत्रीय जरूरत मानते हुए जोहड़ निर्माण को प्राथमिकता दी। जोहड़ का प्रभाव फैलता गया; समाज की जल समस्या हल होती गई। जोहड़ का निर्माण समाज ने किया। जोहड़ में पानी रुका। धरती के पेट में गया। फिर वही पानी ऊपर आकर कुएं के द्वारा खेत-खलिहानों को सींचता हुआ समाज के जीवन में समाहित हो गया। इस तरह जोहड़ और उसे बनाने वाले समाज की खुशहाली का प्रतीक बन गया। आज गोपालपुरा पानीदार है। 1999-2003 के अकाल में भी यहां पानी की ऐसी किलूत नहीं हुई कि कुएं या हैंडपम्प ने किसी को उसे बिना पानी निराश लौटाया हो। ये सब जोहड़ द्वारा जल संरक्षण की परम्परा से ही संभव हुआ है।

आज जोहड़ से जल संरक्षण के कार्यों को देखने और समझने देश-दुनिया के जल प्रेमी आते हैं। अपनी-अपनी तरह से अध्ययन करते हैं। यह सोचकर अलवर के ग्रामीण समाज को बहुत अच्छा लगता है, कि उनके छोटे से काम से देश-दुनिया के समाज को भी दिशा मिली है। इस तरह यहां का ग्रामीण ग्राम गुरु की भूमिका में आ गया है। आइए जानें कि इस ग्राम गुरु की परम्परागत संरचनाएं कैसी होती हैं?

## जोहड़ निर्माण की विधि

जोहड़ अक्सर अर्द्ध चन्द्राकार आकृति में बनाया जाता है। परिस्थितिनुसार आकृति भिन्न भी हो सकती है। जोहड़ बनाते वक्त जमीन के ढलान क्षेत्र में मिट्टी की पाल



बनाते हैं। क्षेत्र एवं आवश्यकतानुसार पाल कच्ची व पक्की दोनों तरह की होती है। पाल कितनी लम्बी, कितनी ऊँची और कैसी हो? यह ढाल तथा वर्षा की औसत आदि पर निर्भर करता है। पानी का आगमन क्षेत्र खुला रहता है, जिससे जोहड़ में आसानी से पानी आ जाए। भराव क्षमता के अनुसार जोहड़ के एक किनारे पर उपरा बना दी जाती है। उपरा का काम है, जोहड़ की भराव क्षमता से अधिक पानी आ जाने पर पाल को किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाए बिना उतने पानी को आसानी से बाहर निकाल देना। इससे नीचे वाले क्षेत्र के जोहड़ों को भरा जा सकता है। जोहड़ का निर्माण हर प्रकार की मिट्टी से किया जा सकता है। जोहड़ का निर्माण एवं रख-रखाव एक स्वावलम्बी प्रक्रिया है। इसके निर्माण में बाहर से किसी प्रकार की सामग्री लाने की जरूरत नहीं रहती। तरुण भारत संघ ने अलवर, सवाई माधोपुर, करौली और जयपुर के पहाड़ी, पथरीली, दोमट, रेतीली मिट्टी तथा जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, पाली, जालौर और बाड़मेर आदि रेगिस्तानी इलाकों के धोरों, रेत और टीबों के बीच में जोहड़ निर्माण कराए हैं।

## लाभ

पशु पालन में सहायका भूजल समस्या को हल करने तथा पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में मददगार। बाढ़-सुखाड़ दोनों के निदान में सर्वश्रेष्ठ। फसल चक्र नियंत्रक। ग्रामीण रोजगार का स्थायी साधन। पेयजल समस्या का समाधान। ग्राम संगठन में मजबूती व प्रेम का प्रेरक।

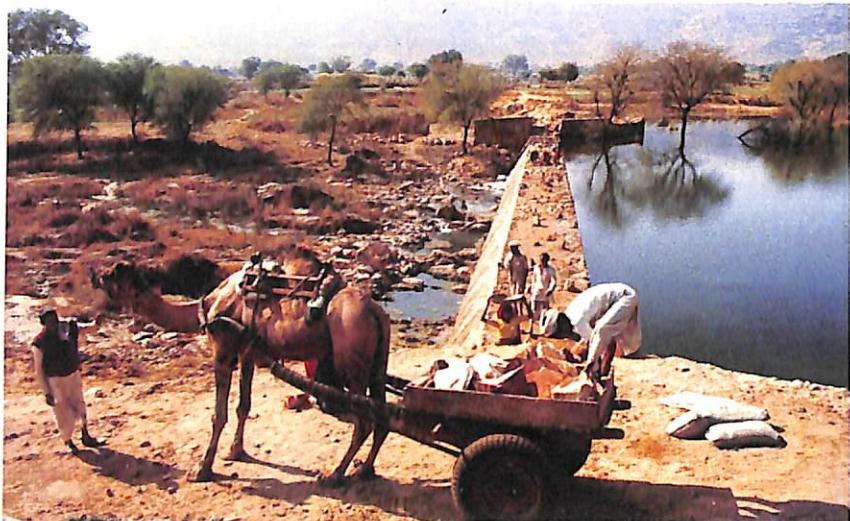
## एनीकट

नदी-नालों के जल प्रवाह क्षेत्र में बनी पक्की पालें ही एनीकट... चकडैम कहलाती हैं। इन्हें हैडवाल भी कहते हैं। यह पानी रोकने की मुख्य दीवार होती है। एनीकट में जल भराव क्षमता मुख्य दीवार की ऊँचाई तक ही होती है। एनीकट के दोनों ओर एक-एक दीवार और बनानी पड़ती है, जो मुख्य दीवार से 4-5 फीट ऊँची होती है। इनके दोनों ओर मिट्टी की पाल बनाते हैं। मिट्टी की पाल एनीकट की भराव क्षमता के अनुसार छोटी-बड़ी होती है। इसी प्रकार मुख्य दीवार भी छोटी-बड़ी हो सकती है। एनीकट के निर्माण के लिए जगह का चयन स्थानीय भूगोल के आधार पर करना होता है। एनीकट निर्माण में अध्ययन के साथ-साथ ग्राम ज्ञान की मुख्य भूमिका होती है। सामान्यतः मुख्य दीवार की ऊँचाई 8-10 फीट की होती है। पक्की-कच्ची पाल की मजबूती का हिसाब एनीकट के जलागम क्षेत्र के अनुसार आकलित किया जा सकता है। नक्शा बनाने के बाद एनीकट की अनुमानित लागत निकाली जाती है। तरुण भारत संघ ने जहां भी एनीकट निर्माण में भागीदारी निभाई; समाज के सहयोग के प्रति संतुष्ट होने के बाद ही निर्माण कार्य आरंभ किया है। कार्य पूर्ण करने की जिम्मेदारी भी समाज की ही होती है। रख-रखाव का दायित्व भी समाज का होता है। अंततः उसका मालिक भी समाज ही बनता है। तरुण भारत संघ ने इन सब



कार्यों में समाज की भूमिका व दायित्व सुनिश्चित करने के साथ-साथ एनीकट के निर्माण में भी सहयोग दिया है। संस्था ने एनीकट निर्माण कार्य वर्ष 1987-88 में अलवर जिले के गांव किशोरी में तेजी वाला एनीकट से शुरू किया, फिर जयपुर, करौली, सवाई माधोपुर से लेकर उदयपुर तक किया। पहाड़ी, पठरीली, दोमट-पीली-रेतीली सभी प्रकार की मिट्टी में अब तक सैकड़ों एनीकट बनाए हैं। एनीकट की लागत जोहड़ निर्माण से अधिक होती है; क्योंकि इसमें पक्के कार्य का खर्च अधिक होता है।

पत्थर, पानी, कल्पी, चूना, सीमेंट, बजरी... एनीकट निर्माण हेतु जरूरी मुख्य सामग्री होती हैं। कुशल कारीगर, अतिरिक्त श्रम व लकड़ी के सामान आदि की भी जरूरत होती है।



## लाभ

जोहड़ द्वारा होने वाले सभी लाभ एनीकट के भी लाभ हैं। उनके अलावा एनीकट नदी घाटी क्षेत्र में जल संरक्षण के प्रभाव को बढ़ाने में सहायक होता है। एनीकट में नदी-नालों के जलागम क्षेत्र का पानी आता है।

## खेत तलाई

जहां जमीन पहाड़ी या पठारी न हो अथवा तालाब निर्माण में आर्थिक-सामाजिक दिक्षत हो, वहां निजी स्तर पर खेत के भीतर ही खेत तलाई बनाई जा सकती है।



संस्था ने खेत तलाई का निर्माण करौली और सर्वाई माधोपुर जिलों के माल क्षेत्र में वर्ष 2000-2001 में शुरू किया। उस समय अकाल की भयंकर मार थी। अकाल के समय संस्था ने खेत तलाई बनाकर प्रभावितों को रोजगार देने का काम किया था।

माल क्षेत्र की धरती में पानी तो बहुत है, लेकिन खारा है। ऐसे खारे पानी का उपयोग न तो सीधे पीने के कार्य में लिया जाता है और न खेती में। इससे उस क्षेत्र के किसानों की अच्छी जमीन होते हुए भी उसका उचित लाभ नहीं मिलता था। माल क्षेत्र के एक युवा किसान ने संस्था के कार्यकर्ताओं से खेत के एक भाग में पानी के लिए कुछ कार्य करने में सहयोग मांगा। पहले कार्य को व्यक्तिगत लाभ मानते हुए संस्था के प्रतिनिधि झिझके, लेकिन कार्य की सफलता और क्षेत्र की मांग को देखकर संस्था ने इसे आगे बढ़ाने का मन बना लिया। इस कार्य में जन सहयोग अधिक रखा। खेत

तलाई निर्माण में लाभार्थी परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए जन सहयोग कुल लागत का दो-तिहाई अथवा आधा रखा। यह कार्य माल क्षेत्र में बहुत फैला। खेत तलाई के लाभ का आकलन करके वहां के क्षेत्रीय बैंकों ने भी खेत तलाई निर्माण कार्य हेतु ऋण की सुविधा देनी आरंभ कर दी। जिससे संस्था सहयोग के बिना भी खेत तलाई के निर्माण हुए। आज दोनों जिलों में हजारों की संख्या में खेत तलाई बनाई गई हैं। इससे क्षेत्र में पैदावार अच्छी हो गई है। अब किसान रबी-खरीफ दोनों फसल लेता है। अपने खेत में उपलब्ध संरक्षित जल से सुविधानुसार अधिक व उपयोगी फसल ली जाती है। खेत तलाई के लाभ को देखते हुए संस्था का संकोच भी जाता रहा। अगर संस्था प्रारंभिक समय में संकोच अथवा सिद्धान्तवश खेत तलाई के निर्माण में रुचि नहीं लेती तो इतने अच्छे कार्य के विचार और प्रभाव से वंचित व अदूरदर्शी ही रहती। खारे पानी का और कोई इलाज नहीं है। संस्था ने माल जैसे क्षेत्र में खेत तलाई के माध्यम से वर्षा जल संरक्षण का सफल प्रयोग किया। आज जिन किसानों ने संस्था के सहयोग से या व्यक्तिगत स्तर पर, अपने रिश्तेदारों या बैंकों से आर्थिक सहयोग लेकर खेत तलाई बनाई है, अब उनके पारिवारिक जीवन में खुशहाली दिखती है और चेहरों पर पानी की चमका।

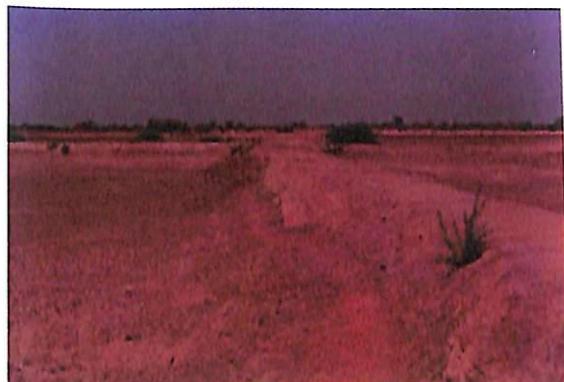
## खेत तलाई निर्माण विधि

खेत तलाई का निर्माण खेत में ही होता है। खेत आयताकार-वर्गाकार या किसी भी आकृति का हो सकता है। इसमें भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार ढलान होता ही है। खेत के अन्तिम ढलान क्षेत्र में खेत आकार व अपनी जरूरत के अनुसार लम्बाई-चौड़ाई लेकर 5-8 फीट की गहराई का गढ़ा बनाते हैं। बारिश के दिनों में खेत क्षेत्र में हुई बारिश की जल बूँदों को खेत तलाई में एकत्रित किया जाता है। इस एकत्रित जल को अपनी रबी फसलों में काम में लेते हैं। जिन खेतों में खेत तलाई होती है, उस खेत में अन्य खेत में बोई जाने वाली फसल से भिन्नता होती है। अन्य खेतों में अधिकतर एक ही किस्म की फसल होती है, जबकि खेत तलाई वाले में तीन-चार तरह की फसल होती है। पानी के नजदीक क्रमशः गेहूं, जौ, सरसों, चना, तरा या ऐसी अन्य फसलों को बोया जाता है। उपलब्ध पानी अथवा नमी के अनुसार किसान स्वयं निर्णय ले लेते हैं कि तलाई से कितनी दूरी पर क्या बोना है?

खेत तलाई के लाभ : पारिवारिक इकाई को जोड़ने व परिवार के जीवन स्तर को सुधारने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है। सामाजिक सम्मान, जीवन में गतिशीलता, खेती में गुणवत्ता व विविधता और रोजगार के साधनों को बढ़ाने में सहायक।

## मेड़बन्दी

मेड़बन्दी भी जल और भूमि दोनों को संरक्षित करने का एक देसी तरीका है। मेड़बन्दी जल बहाव की गति को नियंत्रित करती है। जल ठहराव व भूजल को बढ़ाने में पूरा योगदान करती है। ये वर्षा काल के दौरान कटाव को भी रोकती है। भूमि के उपजाऊ तत्त्व भी न बहें और मिट्टी में उर्वरा शक्ति भी बनी रहे। इसका यह एक खास लाभ है। मेड़बन्दी का निर्माण अपने खाली समय में किसान स्वयं अपने परिवारजनों के सहयोग से कर लेता है। अतः किसी प्रकार का आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ता। मेड़बन्दी का कार्य भले ही देखने में छोटा लगता हो, लेकिन इनकी उपयोगिता बड़े जोहड़ या एनीकट से कम नहीं होती। मेड़बन्दी की मदद से पूरे क्षेत्र में बड़े पैमाने पर जल संरक्षण का कार्य किया जाए, तो अधिक उपयोगी होता है। इसके साथ ही ढलान क्षेत्रों में टिंच वाल बनाई जाती है, जो मेड़बन्दी की सहायक छोटी बहिन की भूमिका में रहती है। ये तरीके तरुण भारत संघ ने अपने कार्य क्षेत्र अलवर, करौली और सर्वाईमाधोपुर में स्वयं करके देखे हैं। संस्था ने सबसे पहले वर्ष 1992-93 में सूरतगढ़ गांव से मेड़बन्दी का काम आरंभ किया था। संस्था ने पूरे गांव के साथ इसकी योजना बनाकर कार्य किया था। अध्ययनों के अनुसार इसके सामाजिक प्रभाव भी अच्छे रहे। फिर बहुत से गांवों में एक साथ कई प्रकार के जल संरक्षण के कार्य किए। मेड़बन्दी सचमुच छोटी, किन्तु अति उपयोगी संरचना है।



## **मेड़बन्दी निर्माण विधि**

ढलान व आवश्यकतानुसार मेड़बन्दी बनाई जा सकती हैं। खेत के ढलान क्षेत्र में 2 से 4 फीट की ऊँचाई तथा 3-4 फीट चौड़ाई की मेड़ जरूरत व खेत की लम्बाई के आधार पर बनाई जाए। इसकी सुरक्षा के लिए उपयोगी घास भी लगाई जा सकती है।

## **मेड़बन्दी के लाभ**

वर्षा जल के अलावा मेड़बन्दी की सहायता से खेत में कुएं अथवा नलकूप से सिंचाई करने में सुगमता रहती है। खेत में बारिश के पानी का पूरा लाभ मिलता है। मेड़बन्दी समय की बचत के साथ ही जल संरक्षण में भी सहायक होती है। मेड़बन्दी का अन्य लाभ खेत का सीमांकन भी होता है। इससे आपसी वाद-विवाद कम होते हैं। आज ग्रामीण क्षेत्र में इंच-इंच जमीन विवाद की जड़ मानी जाती है। इससे मुक्ति मिलेगी।

## **टांके**

पके टांकों के जरिए वर्षा जल को शुद्ध व सुरक्षित रखा जा सकता है। इससे कम पानी वाले क्षेत्रों में अधिक समय तक पीने का पानी उपलब्ध रहता है। टांके मनुष्य को पेयजल समस्या से मुक्ति देते हैं। टांके व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों स्तर पर बनाए जाते हैं। व्यक्तिगत व परिवार स्तर पर बनाए गए टांके परिवार की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं। इन टांकों का निर्माण ज्यादातर निजी जमीन में होता है। टांके में संरक्षित जल का उपयोग अक्सर परिवार जन ही करते हैं। संबंधित



परिवार की अनुमति से अन्य ग्रामीण जल ले सकते हैं। समाज की सहभागिता से बनाए गए टांके पूरे समाज के होते हैं। ये समाज की जरूरत को ध्यान में रखकर सार्वजनिक जगह पर बनाए जाते हैं। जहां किसी भी व्यक्ति के जाने पर बंदिश नहीं होती। समाज के सहयोग से बनाए गए टांके संख्या में एक, अधिक व आकार में बड़े-छोटे हो सकते हैं। टांकों के जल को सुरक्षित रखने व उपयोग करने का काम तदनुसार परिवार जन और समाज का होता है। टांकों के जल का उपयोग करने वाले समाज का दृष्टिकोण जल के प्रति बहुत ही संजीदा और सजग होता है। संरक्षित जल का प्रथम और प्राथमिक उपयोग पीने के लिए ही है। टांके द्वारा संरक्षित जल समाज में टिकाऊपन लाता है; उसे चिन्तामुक्त करता है। इससे समाज में सह जीवन का भाव आता है।

तरुण भारत संघ ने बीते बीस वर्षों में सर्वार्दमाधोपुर के पहाड़ी तथा शेखावाटी के जिला सीकर, चुरू और झुन्झनू के धोरों के बीच टांके बनाए हैं। वहां का समाज टांकों में जल को सुरक्षित रखता है। आज इन टांकों के काम को आगे बढ़ाने में शेखावाटी जल बिरादरी के सदस्य तथा रघुहरि डालमिया व अमला रूईया जैसे उद्योगपति घराने आगे आए हैं। तरुण भारत संघ ने तो केवल उन्हें इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया है। आर्थिक साधन शेखावाटी समाज के ही है। पक्के टांकों के निर्माण के कारण ही शेखावाटी का समाज इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम युग की तरह दर्ज है। आज भी वहां मौजूद टांकों की भव्यता देखते ही बनती है। ये टांके इस क्षेत्र की समृद्धि को अपने में समेटे आज भी हमारे सामने जल संरक्षण की एक सुदृढ़, सुन्दर टिकाऊ, प्राचीन परम्परा के प्रतीक हैं। आज समय आ गया है, कि जब हमें टांकों की परम्परा पुनः विकसित करनी होगी। तभी अपना जीवन सुरक्षित रह सकेगा।

देश में घटते भूजल के मद्देनजर शेखावाटी क्षेत्र के कुछ भाग को अति संवेदनशील मानते हुए केन्द्र सरकार ने भविष्य में यहां कुएं खोदना और नई नल-बोरिंग पर रोक लगा दी है। राजस्थान में ऐसे छः अतिसंवेदनशील भाग हैं, जहां पर तत्काल प्रभाव से यह नियम लागू हुआ है। इन सब घटनाओं को देखते हुए समाज को अब किसी

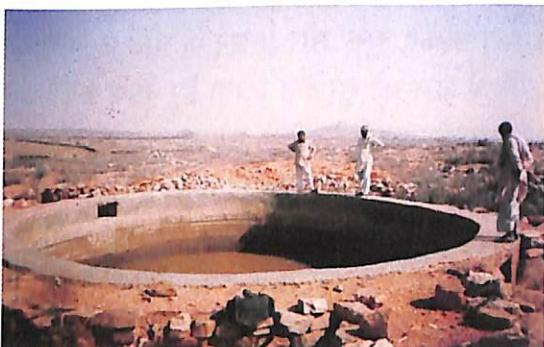
के ऊपर आश्रित न रहकर स्वयं अपने जल को संरक्षित करने के लिए उपाय खोजने होंगे।

### टांकों के प्रकार

संस्था ने तीन प्रकार के टांकों का निर्माण किया है : पहाड़ी क्षेत्र में पहाड़ के ऊपर खुले टांके। रेतीले क्षेत्र में बन्द टांके। छत के पानी के उपयोग के लिए घरेलू टांके।

### खुले टांके

खुले टांके ऐसे पहाड़ी अथवा ढालू स्थान पर बनाए जाते हैं, जहां बरसाती पानी आसानी से और उचित मात्रा में टांके में आ सकें। स्थान ऐसा हो, जहां कम से कम पशु जाते हों, जिससे उस जलागम क्षेत्र में स्वच्छता बनी रहे। शौच आदि के लिए इंसानी आवागमन पर बिल्कुल पाबंदी हो। टांके के पानी को स्वच्छ रखने के लिए लाल दवा या ब्लीचिंग पाउडर का उपयोग किया जाता है। तभासं ने कोचर की डांग में 40-45 टांके बनाए हैं।



### खुले टांके बनाने की विधि

खुले टांके की गइराई 15-20 फीट की गइराई होती है। टांके का व्यास 10-15 फीट होता है। टांके निर्माण में पत्थर, बजरी, सीमेंट व कुशल कारीगर का उपयोग होता है। इसके ऊपरी भाग में पानी आने व जाने के लिए रास्ते बनाए जाते हैं। टांके में पानी आने



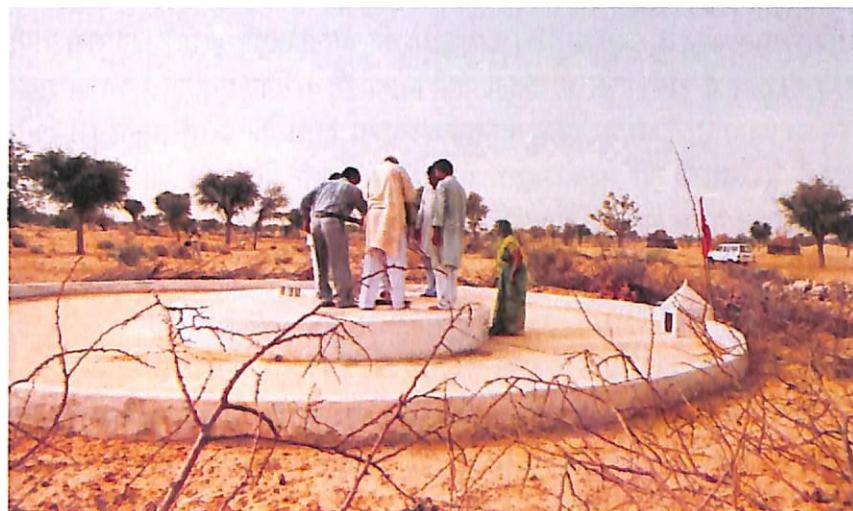
के रास्ते में कुछ छोटे-बड़े पत्थर डाल दिए जाते हैं। आते पानी में जो कुछ भौतिक अस्वच्छता होती है, वह पत्थरों के बीच रुक जाती है। इस तरह टांकों में स्वच्छ पानी पहुंचता है। टांके भरने के बाद पानी निकासी के रास्ते से टांके में आई गन्दगी व कचरा आदि पानी के साथ आसानी से निकल जाए, इसकी व्यवस्था भी जरूरी होती है। टांके में आए जल का उपयोग केवल पीने के लिए ही लिया जाता है। इसका जल जोहड़ के पानी से अधिक स्वच्छ होता है, क्योंकि मवेशी व क्षेत्र की गन्दगी से बचा रहता है। टांके के निर्माण में संस्था ने अक्सर सीमेन्ट व कुशल कारीगर की मजदूरी का भुगतान ही किया। गांव ने टांके बनवाने में पूरी मजदूरी, बजरी तथा पत्थर का सहयोग किया।

## खुले टांके के लाभ

पेयजल स्वच्छ रहता है। दूषित जल संबंधी बीमारियां कम होती हैं। कार्य क्षमता बढ़ती है। आर्थिक स्थिति में सुधार और जीवन में स्वावलम्बन आता है। पानी से चिन्तामुक्त समाज का गतिशील और विकासशील होना स्वाभाविक है।

## बंद टांके

संस्था ने शेखावाटी के क्षेत्र में बंद टांके बनाए हैं। बंद टांके रेगिस्तानी क्षेत्र में वर्षा के पानी को धूल-रेत से सुरक्षित रखने में उपयोगी रहते हैं। इनमें खुले टांकों की अपेक्षा



अधिक स्वच्छ जल रहता है और वाष्पीकरण भी कम होता है। बंद टांके घर के आंगन में, बाड़े में, खेत में, सार्वजनिक स्थान पर, कच्चे रास्ते और सड़कों के किनारे बनाए जाते हैं। तरुण भारत संघ ने शेखावाटी जल बिरादरी की जिन साथी संस्थाओं को जल संरक्षण में कार्य करने के लिए प्रेरित किया, उन्हें आर्थिक सहयोग देकर टांके के निर्माण कार्य में भी लगाया है। संस्था ने शेखावाटी में लगभग 105 टांके बनाए हैं। टांकों के निर्माण में वहां के समाज ने अपना हिस्सा मजदूरी के रूप में दिया। शेष जिस भी वस्तु की आवश्यकता हुई, वे सब तरुण भारत संघ ने दी। जिन घरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर ये टांके बने, समाज में जल संरक्षण की भावना को बढ़ावा ही मिला। आज यहां का समाज स्वप्रेरित होकर इस कार्य को आगे बढ़ाने में लगा है। इस क्षेत्र में तभास की भूमिका अब केवल इस कार्य में लगे समाज को प्रोत्साहित करने तक सीमित है। तरुण भारत संघ इसी में लगा है।

### **निर्माण विधि**

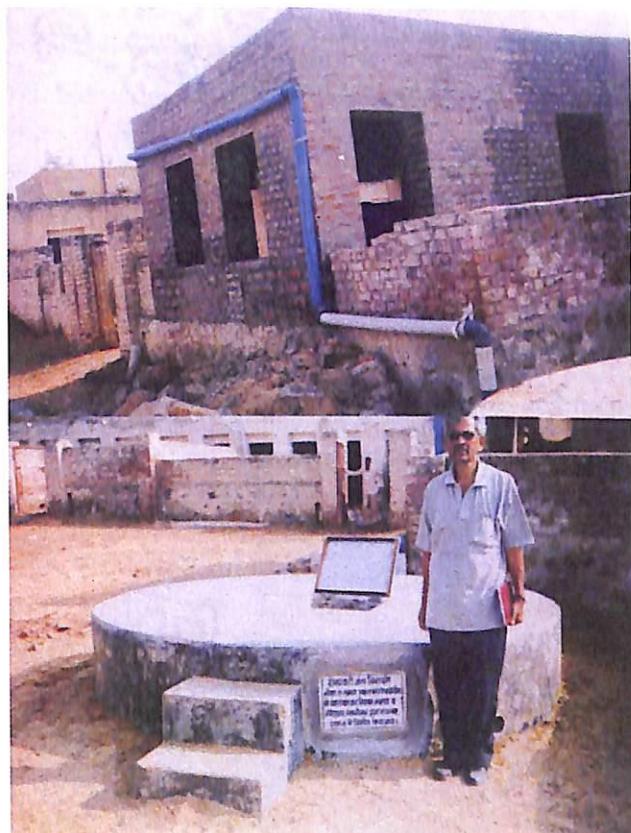
टांके के निर्माण के लिए 20-30 फीट जगह चाहिए। जिसमें बीच में 10-12 फीट के व्यास में 20 फीट गहराई में कुआंनुमा खुदाई करके ईंटों की पक्की दीवार गोलाई में बनाई जाती है। नीचे का फर्श पक्का बनाया जाता है और ऊपर पटाव किया जाता है। 20-30 फीट के शेष भाग को गोलाई में या वर्गाकार आकृति में पक्का फर्श किया जाता है। इस फर्श पर बरसा पानी ही टांके में जाता है। इस फर्श को पायतन भी कहते हैं। टांके की दीवार फर्श से डेढ़-दो फीट ऊँची होती है, जिसमें चारों तरफ टांके में पानी जाने के रास्ते रहते हैं। इनमें लोहे की जाली लगी रहती हैं। जिससे पानी छन कर टांके में जाए। टांके की छत में पानी निकालने के लिए एक 2<sup>u</sup> 2 का दरवाजा बनाया जाता है, जिस पर लोहे का ढक्कन लगा होता है। इसमें ताला भी लगा सकते हैं। बाल्टी या मटकी द्वारा आसानी से पानी निकाला जा सकता है। आवश्यकतानुसार साथ ही साथ छोटा हैंडपम्प भी लगा दिया जाता है, इससे भी पानी निकालने में आसानी होती है।

### **छत के पानी के उपयोग के लिए टांका निर्माण विधि**

जगह की उपलब्धता के अनुसार टांके की आकृति गोल, आयताकार अथवा वर्गाकार में बनाई जा सकती है। इसमें पायतन बनाने की आवश्यकता नहीं होती है।

केवल बन्द टांके का ही निर्माण करना होता है। टांके को पाईप के माध्यम से छत से जोड़ दिया जाता है। बारिश के दिनों में छत पर आया पानी पाईप के द्वारा टांके में आ जाता है। छतों को भली - भाँति साफ करना होता है, जिससे टांके में साफ पानी ही आए। ऐसे टांके छत के आकार

के हिसाब से छोटे-बड़े बनाए जा सकते हैं। तभासं ने शेखावाटी क्षेत्र में गौशाला, पंचायत भवन, छात्रावास, स्कूल, कॉलेज आदि सार्वजनिक स्थानों पर टांके बनाए हैं।



## बंद टांकों के लाभ

खुले टांकों की अपेक्षा बंद टांकों में जल अधिक सुरक्षित व स्वच्छ रहता है। ऐसे टांके मैदानी एवं रेगिस्तानी इलाकों के लिए अधिक उपयोगी होते हैं। फ्लोराइंड वाले क्षेत्रों में भी टांके अधिक उपयुक्त होते हैं। अधिक फ्लोराइंड युक्त पानी पीने से फ्लोरीसिस जैसी खतरनाक बीमारी होती है। ऐसे इलाकों में टांके बेहतर पेयजल उपलब्ध कराते हैं।

## जल कुद्दयां

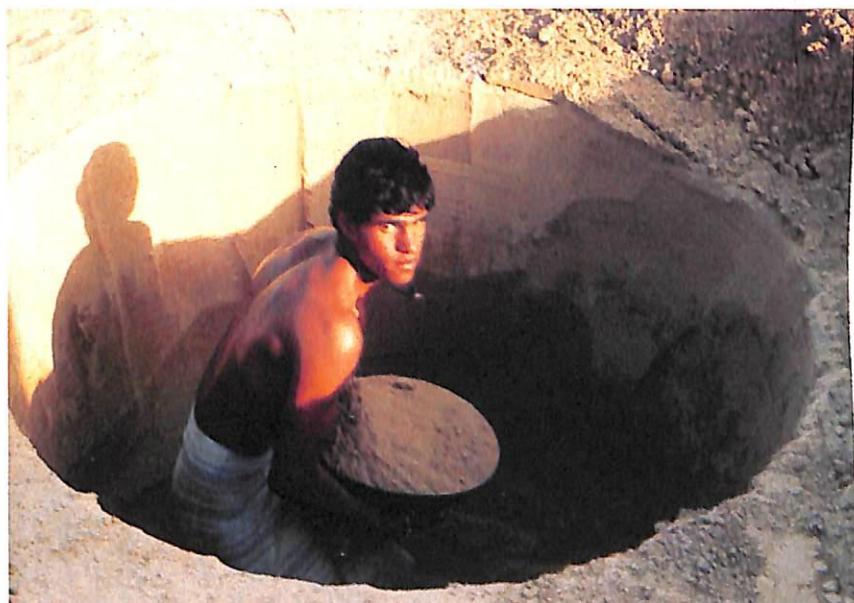
राजस्थान के रेतीले धोरे थार और मारवाड़ के समाज की निवास स्थली हैं। यहां की सभ्यता, संस्कृति, समृद्धि का प्रतीक चिह्न मात्र भी यहां के समाज में विद्यमान हैं। ये हमें सदैव स्थानीय जौहर गाथाओं को याद दिलाते रहते हैं। रेगिस्तानी जीवन शैली से हमें एक साथ जल का दर्शन, दृष्टि, मूल्य, भावना, संरक्षण की परम्पराएं, विधियां एवं उपयोग के तरीकों का ज्ञान होता है। ऐसा समग्र ज्ञान व पानी का अनुशासित उपयोग देश के अन्य भागों में नहीं है। धोरों के बीच बसी आबादी अपनी जरूरत के अनुसार जल संरक्षण के उपाय कर लेती है। प्राकृतिक रचना में रेत के धोरों के बीच ऐसे स्थान होते हैं, जहां जोहड़ व जल कुईयों के निर्माण कार्य आसानी से किए जा सकें। जल कुई भी रेगिस्तानी इलाके की जल संरक्षण परम्परा का एक अनुपम उदाहरण है। यह अधिकतर पारिवारिक स्तर पर ही बनाई जाती है। जल कुईयों में आ जाता है। कुई के पानी का उपयोग परिवार अपनी आवश्यकतानुसार करता है। जल कुई को सार्वजनिक जगह पर व्यक्तिगत स्तर से भी बनाते हैं और अपने घर की चारदीवारी या बाड़े में भी बनाया जा सकता है। इसमें वर्षा जल के अलावा अन्य स्थान से लाए गए पानी को भी सुरक्षित रख सकते हैं।



तरुण भारत संघ ने बीकानेर के राणासर, पाबूसर, लाखासर और बीठनोख गांव में ऐसी 150 जल कुर्झियों के निर्माण में सहयोग किया है। संस्था ने केवल दो-तीन बैग सीमेन्ट तथा बजरी प्रति जल कुर्झी दी, शेष सहयोग लाभार्थी परिवारजनों का रहा।

## निर्माण विधि

जल कुर्झी के निर्माण हेतु 10-15 फीट की गड़िराई में 8-10 फीट के व्यास की खुदाई करते हैं। इस तरह की दीवारों में सीमेन्ट, बजरी या चूना मिट्टी का घोल लेप कर देते



हैं, ताकि मिट्टी कटाव न हो। कुर्झी के पटाव में खुदाई में मिली मिट्टी का उपयोग किया जाता है। गोलाई में पटाव करते हैं। ऊपरी भाग में पानी निकालने के लिए जगह बनाई जाती है। कुर्झी में पानी आने की दिशा में सतह पर भी जगह बना दी जाती है। इससे होकर बरसाती पानी जल कुर्झी में आता है। इस जगह पत्थर और झाड़ लगा देते हैं, जिससे कोई जीव-जन्तु व पंछी अन्दर न जा सके। जल कुर्झी के निर्माण के लिए ऐसी कोई विशेष तकनीकी नहीं होती। ग्रामीण जन आपसी सहयोग से ही इसका निर्माण कर लेते हैं।

## लाभ

रेतीले धोरों में जहां पानी की एक बूँद भी अपनी कीमत रखती है, वहां जल कुईयां सचमुच अपरिहार्य हैं। इनके बिना मरुस्थली आबादी का जीवन ही मुश्किल है। ऐसे में जल कुईयों का महत्व ही महत्व है।

## प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण

प्राकृतिक जल स्रोत - जहां प्रकृति ने स्वयं पानी की व्यवस्था की है और वह स्वतः ही प्रवाहित रहता है, ऐसे जल को प्राकृतिक जल स्रोत कहते हैं। समाज ऐसे जल स्रोतों को झरना कहता है और श्रद्धा भाव से देखता है। समाज अपने जीवन के अनन्त सुख पाने और प्रकृतिमय होने की अपनी आन्तरिक शक्ति को एकरूप करता है और इसी भाव से जल स्रोतों का संरक्षण भी करता है।

तभासं के कार्यक्षेत्र में अनेक ऐसे प्राकृतिक जल स्रोत हैं जो सदियों-सदियों से प्रवाहित हैं। उनके पास सभ्यताओं ने जन्म लिया है। भानगढ़ का इतिहास इसका आज भी साक्षी है। नारायणी धाम, पाराशरजी की तपोस्थली, जहाज स्थान,



पाण्डुपोल का झरना, उज्जैन के राजा भर्तृहरि की तपोस्थली, नलदेश्वर, गरवाजी, तालवृक्ष के स्रोतों से प्रवाहित गर्म-ठण्डा जल। उदयनाथजी, अंगारी गढ़बसई, सूरतगढ़, नाहर खोरा, संजयनाथजी का स्थान आदि ऐसे स्थान हैं, जहां पर समाज का अटूट श्रद्धाभाव है। सभी स्थानों पर छोटे-बड़े मंदिर व देव मूर्तियां हैं और आश्रम भी बने हुए हैं। इन स्थानों पर साधु-संन्यासी भी निवास करते हैं। भर्तृहरि, पाण्डुपोल, नारायणी धाम और ताल वृक्ष में तो प्रतिदिन यहां का समाज अपनी आस्थानुसार इन प्राकृतिक जल स्रोतों के जल से अपने को पवित्र करता है और आचमन-तर्पण आदि कर्मकाण्ड भी करता है।

ग्रामवासी भी अपने प्राकृतिक जल स्रोत के संरक्षण के साथ-साथ आश्रमों में श्रद्धाभाव से व्यवस्था करते हैं। पुण्य पर्वों पर जल स्रोतों में जाकर स्नान तर्पण, पुण्य-दान आदि से अपनी आस्था व श्रद्धा प्रकृति अपने इष्टदेव को समर्पित करते हैं।

आज के युग में भी ग्रामवासी प्राकृतिक जल स्रोतों से अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। अलवर जिले में एक गांव नाहर-खो रहा है जो तहसील लक्ष्मणगढ़ में है। गांव के कुंओं में पानी है, लेकिन पानी खारा है। उस पानी का उपयोग दैनिक आवश्यकताओं में ही होता है। जीवन के लिए अभी भी प्राकृतिक जल स्रोत पर पूरा गांव निर्भर है। पीने के लिए पानी और भोजन व्यवस्था में प्राकृतिक जल स्रोतों का ही उपयोग होता है।

### **प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण कैसे करें**

सबसे पहले ग्राम समाज का ज्ञान और आस्था समझने का प्रयास करें और देखें कि इन प्राकृतिक जल स्रोतों को समाज कैसे देखता है? उसके ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि में प्राकृतिक जल स्रोतों का क्या महत्व है? तभासं के कार्यक्षेत्र में ऐसे अनेक प्राकृतिक जल-स्रोत हैं जो हमें एक झलक में समाज के ज्ञान-विज्ञान का दर्शन कराते हैं।

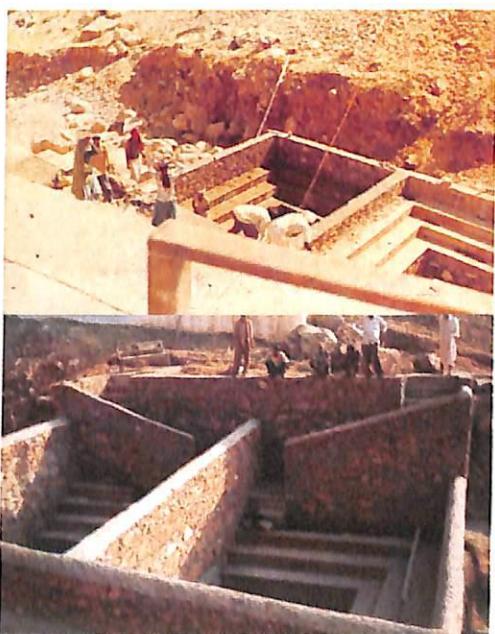
प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने के लिए जल की पवित्रता को बनाये रखना बहुत आवश्यक है। उस स्थान की पवित्रता के लिए ग्रामवासियों का एक मत होना

भी आवश्यक है। जल स्रोत के क्षेत्र में किसी प्रकार की गन्दगी न हो। प्राकृतिक जल स्रोतों के उपयोग के लिए सुव्यवस्थित कुण्ड बनाया जाए, जिसमें पवित्र जल आता रहे और समाज कुण्डों में स्नान आदि करें जिससे प्राकृतिक जल स्रोत भी सुरक्षित रहें। प्राकृतिक जल स्रोतों को सतत प्रवाहित रहने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाएं, पूरे क्षेत्र में छोटी-छोटी वनस्पति और घास का भी संरक्षण करना आवश्यक है। जहां पहाड़ी क्षेत्र में प्राकृतिक जल स्रोत हैं, उसमें पहाड़ पर ट्रिचवाल पत्थरों से छोटी-छोटी पानी रुकावट के लिए दीवारें बनाई जानी चाहिए, जिससे पहाड़ों से वर्षा का पानी रुकता हुआ बहता रहे। ये सब उपाय प्राकृतिक जल स्रोतों को सतत प्रवाहित करने में सहयोगी होते हैं।

तरुण भारत संघ ने अपने क्षेत्र में कई गांवों के प्राकृतिक जल स्रोतों को सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया। ग्रामवासियों ने भी ऐसे पुण्य कार्य में अपना सहयोग दिया है।

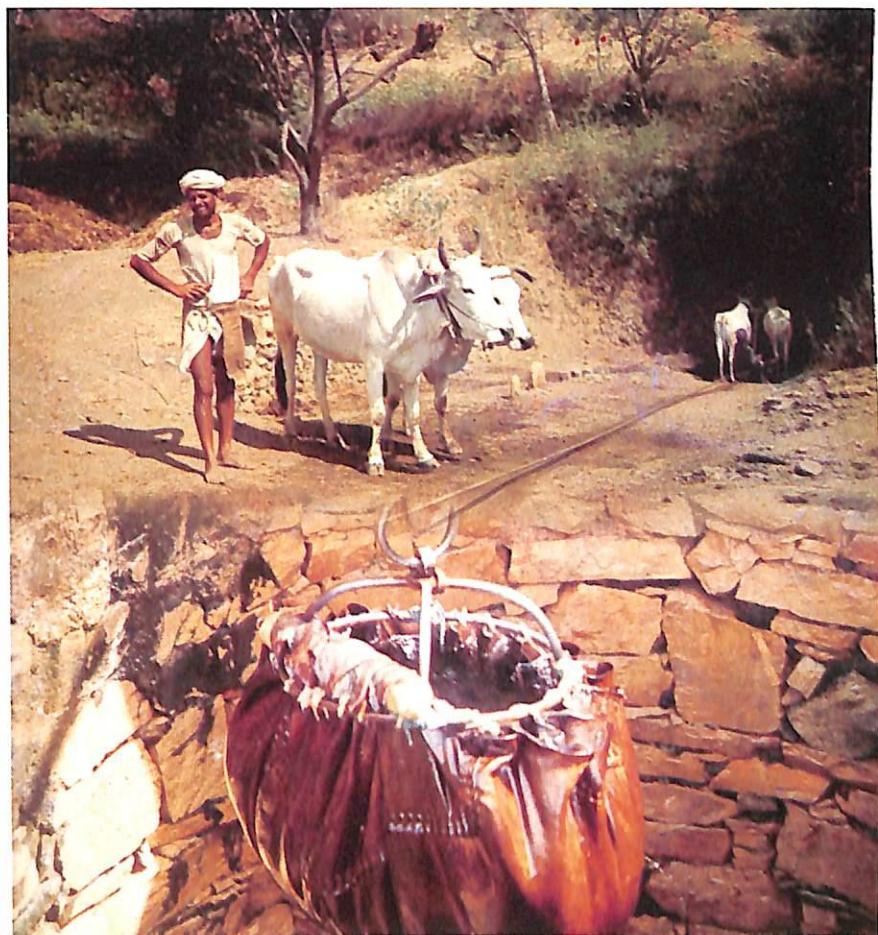
## प्राकृतिक जल स्रोत संरक्षण के उपाय

ग्रामवासियों की सहमति और सहयोग से जल स्रोत के लिए क्षेत्र सीमांकन किया और सीमा क्षेत्र को संरक्षित करने के लिए तारबन्दी व पत्थरों की दीवार बनाकर सुरक्षित किया। सुरक्षित क्षेत्र में वृक्षारोपण और झाड़ी, घास वनस्पति को बढ़ाने के लिए बीज छिड़काव किया। पहाड़ी ढलानों पर ट्रिन्चवाल बनाई और पत्थरों से छोटी-छोटी दीवारें बनाई, जो बरसाती पानी की गति



में अवरोधक का कार्य करें, जिससे मिट्टी का कटाव रुके और नमी बढ़े। संरक्षित क्षेत्र के ग्राम को आपसी विवादों से दूर रखना और हरसंभव उसे संरक्षण देना ग्रामसभा का दायित्व समझना। ऐसे स्थानों के प्रति समाज में श्रद्धा भाव को बढ़ावा देने का कार्य किया है। जहां जल स्रोत हैं उस स्थान पर पक्के कुण्डों पर निर्माण भी किया है। ग्रामवासियों ने इस प्रकार के कार्यों से अपने गांव के प्राकृतिक जल स्रोतों के प्रति आस्था और प्रकृति से जुड़ने का काम किया है।

अलवर में गढ़बसई, अंगारी, नाहर-खोरा, सूरतगढ़-जहाज के प्राकृतिक जल स्रोतों को सुरक्षित व व्यवस्थित किया तथा सर्वाई माधोपुर में खोरा-मनावली में प्राकृतिक जल-स्रोत के संरक्षण के कुण्ड निर्माण व अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं हैं।



# वर्तमान रामय में जल संरक्षण व्यवस्थाएं

वर्तमान केन्द्रीय सरकार देश में बढ़ती जल समस्या के प्रति संवेदनशील दिखाई देती है। राज्य सरकारें भी अपने पानी के हक की लड़ाई लड़ रही हैं। समाज और सरकारें अपने-अपने पानी के हक के लिए आगे आए हैं। पानी के संरक्षण का भाव समाज, सरकार और सरकार के कार्यों में झलकता है। दूसरी ओर हमारे पानी की मालिक दूसरे देशों की बड़ी कम्पनियां बन रही हैं। वह अपना मुनाफा धरती के नीचे और धरती के ऊपर बहने वाले पानी में देखती हैं। वर्षा के पानी पर राज्य सरकारें अपना हक मानती हैं और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को सहेज कर रखने का भरसक प्रयास कर रही हैं।

हमारे देश में प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के लिए कानून तो बने हुए हैं। लेकिन इतने बड़े देश में उनकी पालना करने-कराने वालों का अकाल है। जनता को कुशल और संवेदनशील नेतृत्व चाहिए जो प्राकृतिक संपदा के संरक्षण में सहयोगी बने। पानी भी प्राकृतिक संपदा का एक अंग है। इसे बचाने के लिए और उपभोग के लिए जनता को जागरूक बनाए रखना कुशल नेतृत्व का अहम कार्य है। उसके लिए व्यवस्था ऐसी सुनिश्चित की जाए कि जनता जनार्दन सहज रूप से स्वीकार करते



हुए अपनाती रहे। उसकी उपभोग प्रवृत्ति में लालच और दोहन का भाव न बढ़े। बल्कि संरक्षण और संवर्द्धन का भाव हमेशा पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता रहे। ऐसी व्यवस्था से ही हमारी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

देश के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण देश में बढ़ती जन समस्याओं को देखते हुए हमारी न्याय व्यवस्था ने समय-समय पर अहम भूमिका निभाई है। चाहे वह जंगल संरक्षण के सवाल हों या पर्यावरण के सवाल हों, उसने अपना दृष्टिकोण देश की जनता के सामने रखा है। उसकी पालना के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों को भी पाबन्द किया है। जबकि सरकार ही कानून बनाती है और सरकार ही उन कानूनों का उल्लंघन करती है। जनता केवल देखती है और अपने नेतृत्व का अनुसरण करती है। इससे सामाजिक जीवनशैली और व्यवस्थाएं हमेशा बिगड़ती हैं। ऐसी स्थिति में न्याय व्यवस्था का कार्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। वह सचेत रह कर अपने निर्णय देती है और उसकी पालना के लिए सरकार व जनता को पाबन्द करते हुए दण्ड व्यवस्था को भी सख्ती से लागू करती है।

देश में घटते प्राकृतिक जल स्रोतों के कारण बढ़ती जन समस्याओं को देखते हुए देश में न्याय व्यवस्था की सर्वोच्च संस्था उच्चतम न्यायालय ने प्रकृति की रक्षा के लिए एक अहम फैसला किया। माननीय उच्चतम न्यायालय की व्यवस्था में हमारी पानी परम्पराओं की रक्षा निहित है। जिससे देश में बढ़ती जल समस्या के समाधान हेतु सरकार और समाज को आगे आकर कार्य करना होगा। तभी देश के लिए बढ़ती समस्या का समाधान समय रहते हो सकता है।

**विषय - मा. उच्चतम न्यायालय द्वारा सिविल अपील संख्या-४७८७/२००१, हिंचलाला तिवारी बनाम कमलादेवी आदि में पारित आदेश दिनांक २५.७.२००१ का अनुपालन किए जाने सम्बन्धी।**

माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपील संख्या ४७८७/२००१, हिंचलाल तिवारी बनाम कमला देवी आदि में निर्णय व्यवस्था इस प्रकार है।

मा. उच्चतम न्यायालय का  
निर्णय/प्राथमिकता  
प्रेषक,  
अध्यक्ष,  
राजस्व परिषद्, उ.प्र.  
लखनऊ।  
सेवा में,

१. समस्त मण्डलायुक्त, उत्तर प्रदेश।
२. समस्त जिलाधिकारी, उत्तर प्रदेश।

पत्र संख्या-जी-८६५/५-६ आर/२००१ दिनांक- २४ जनवरी, २००२



**विषय -** मा. उच्चतम न्यायालय द्वारा सिविल अपील संख्या-४७८७/२००१, हिंचलाला तिवारी बनाम कमलादेवी आदि में पारित आदेश दिनांक २५.७.२००१ का अनुपालन किए जाने सम्बन्धी।

**महोदय,**  
उपर्युक्त विषयक शासनादेश संख्या-३१३५/१-२-२००१-रा-२, दिनांक ०८ अक्टूबर, २००१ की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए आपसे अपेक्षा की जाती है कि ग्राम उगापुर, तालुका आसनांव जिला संतरविदास नगर से संबंधित तालाबों हेतु सार्वजनिक उपयोग की भूमि के समतलीकरण के परिणामस्वरूप अवैधानिक रूप से आवासीय प्रयोजन हेतु अवैध रूप से किए गए आवंटन को मा. उच्चतम न्यायालय द्वारा अपने निर्णय दिनांक २५.७.२००१ में यह उल्लेख करते हुए कि तालाबों को विशेष ध्यान देकर तालाब के रूप में ही बनाये रखना चाहिए एवं उसका विकास एवं सौन्दर्यीकरण किया जाना चाहिए, जिससे जनता इसका उपयोग कर सके। अग्रेतर यह भी उल्लेख किया गया है कि जंगल, तालाब, पोखर, पठार तथा पहाड़ आदि समाज की बहुमूल्य धरोहर हैं और उनका अनुरक्षण पर्यावरणिक संतुलन बनाये रखने हेतु आवश्यक है। उक्त मामले में तालाबों के समतलीकरण के परिणामस्वरूप किए गए आवासीय पट्टों को निरस्त किए जाने तथा संबंधित आवंटियों द्वारा स्वयं उस पर निर्मित भवन ६ माह के भीतर ध्वस्त

करके तालाब की भूमि का कब्जा गांवसभा को दिए जाने के आदेश देते हुए निर्धारित अवधि के भीतर आवंटियों द्वारा ऐसा न करने पर प्रशासन को उक्त आदेश का अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

मा. उच्चतम न्यायालय के उपर्युक्त महत्वपूर्ण निर्णय से स्वतः विदित होता है कि आवासीय प्रयोजन से भिन्न किसी अन्य सार्वजनिक प्रयोजन की भूमि, चाहे वह तालाब/पोखर, रास्ता/चकरोड, खलिहान आदि के लिए आरक्षित भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु आबादी की श्रेणी में परिवर्तित किया जाना अत्यन्त आपत्तिजनक है, क्योंकि इस प्रकार की अवैधानिक कार्यवाही के फलस्वरूप एक ओर पर्यावरणिक संतुलन (Ecological Balance) बनाये रखने में कठिनाई होती है वहीं दूसरी ओर जल संरक्षण, पशुओं के चारे तथा पेयजल आदि जैसी विकट समस्याएं भी जन्म लेने लगती हैं, जल के स्रोत संकुचित होने लगते हैं एवं भू-जल स्तर बनाये रखना सम्भव नहीं हो पाता है, जिसका सीधा कुप्रभाव मानव एवं पशु पर पड़ता है।

तालाब/पोखर के अनुरक्षण के संबंध में पूर्व में परिषदादेश संख्या-२७५१/जी-५-११ डी/६८ दिनांक १३ जून २००१ निर्गत किया जा चुका है।

मा. उच्चतम न्यायालय के उपरोक्त निर्णय के परिप्रेक्ष्य में परिषद की यह अपेक्षा है कि राजस्व विभाग के अधिकारी शीतकालीन भ्रमण के दौरान सार्वजनिक भूमि के दुरुपयोग के विषय में जानकारी करें तथा मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें। मण्डलायुक्त कृपया इस संबंध में जिलाधिकारियों से समयानुसार सूचना एकत्र कर लें तथा उसे संकलित करके अपनी आख्या राजस्व परिषद को एफ.डी.ओ. में शामिल कर भेजते रहें।

मा. सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी अपेक्षा की है कि इस प्रकार के सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा की जाये तथा राज्य सरकार एवं राजस्व विभाग इनका विकास करते रहें ताकि ऐसा होने के कारण पर्यावरणिक संतुलन (Ecological Balance) बनाये रखने में कोई कठिनाई न होने पाये। कृपया राजस्व विभाग

आवश्यकतानुसार राहत कार्य के अन्तर्गत एवं पंचायती राज विभाग की योजनाओं के अन्तर्गत इन तालाबों की मेड़ को ऊंचा करने तथा गहरा करने की कार्यवाही सुनिश्चित करें ताकि इनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। अधिक से अधिक संख्या में यदि सार्वजनिक भूमि पर वृक्ष लगाये जायें तो उससे भी खाली भूमि सुरक्षित रहेगी। कृपया इस संबंध में विभिन्न पंचायती राज संस्थानों, जिला परिषद, क्षेत्र समिति, डी.आर.डी.ए. इत्यादि को उनकी बैठकों में अवगत करायें। इस परिषदादेश एवं मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को कृपया संबंधित अधिकारियों को परिचालित करायें तथा इसका व्यापक प्रचार भी करायें। विभिन्न अधिवक्ता संघों को भी भेजा जाये।



परिषद की राय में धारा २१८ भू-राजस्व अधिनियम के अन्तर्गत जिलाधिकारी एवं आयुक्त के स्तर पर स्वयंमेव निगरानी के रूप में अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकती है अथवा डी.जी.सी. राजस्व के माध्यम से निगरानी का प्रार्थना पत्र दिया जा सकता है।

परिषदादेश के साथ मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के उद्धरण की छाया प्रतिलिपि एवं इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा निर्गत किए गए उपरोक्त शासनादेश दिनांक ०८-१०-२००१ की छाया प्रति भी संलग्न की जा रही है।

संलग्नक-उपरोक्त।

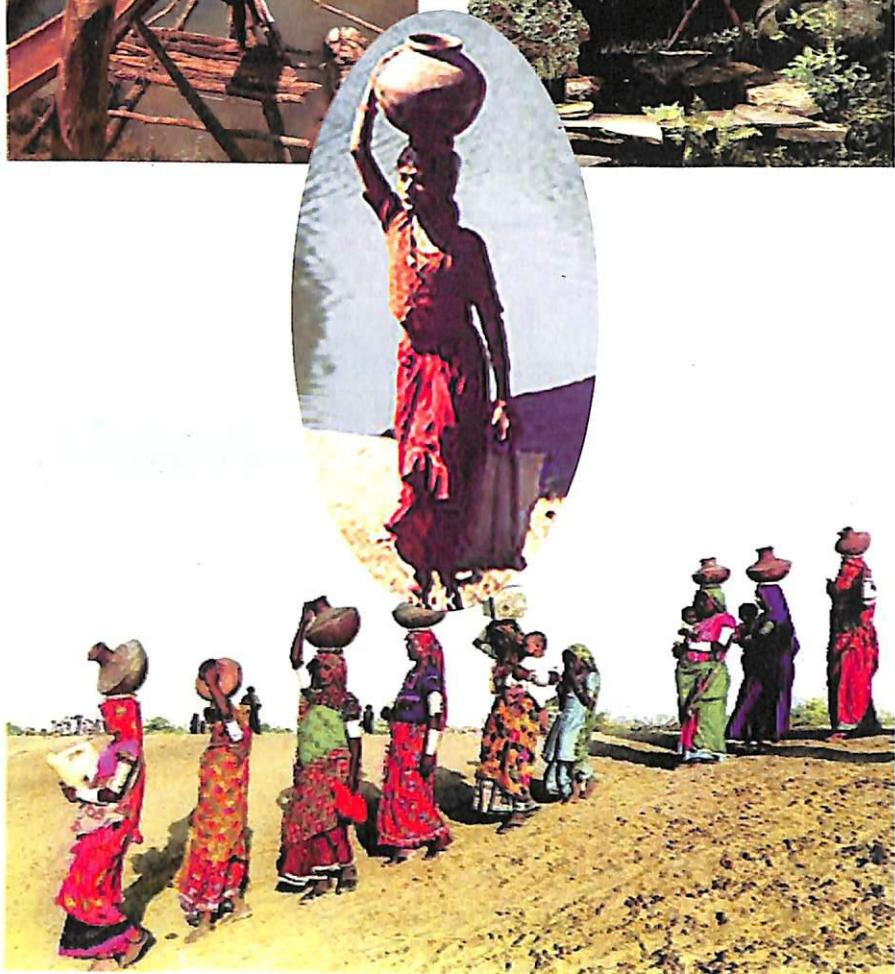
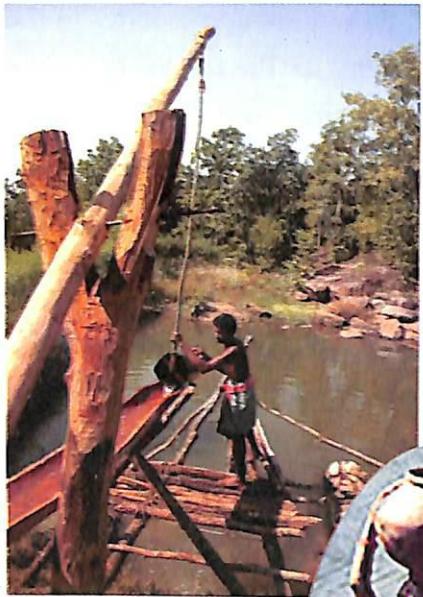
भवदीय,  
आदित्य कुमार रस्तोगी  
अध्यक्ष

We want to aware you regarding the historical decision of Supreme Court of India given on 25-7-2001, which ensures the restoration and conservation of forests, tanks, ponds, hillocks and mountains etc., by declaring them as nature's bounty.

The Revenue Council of State U.P. issued the above letter to the District Magistrates and Commissioners for the follow up of the decision. You too can use this decision and letter for the conservation of your community natural resources. It will be highly appreciated if you would find it justified to send a copy of the Supreme Court decision to the concerned authorities of your region. We believe your efforts will ensure the use of the decision for this noble cause.

For further details on the decision you can refer to :

“Book of Supreme Court Cases 2001” 6SSC Pg No 496-501





तरुण भारत संघ

भीकूमपुरा-किशोरी, वाया थानागाजी

अलवर-301 022

दूरभाष : 01465-225043, 0141-2393178

E-mail : [watermantbs@yahoo.com](mailto:watermantbs@yahoo.com)